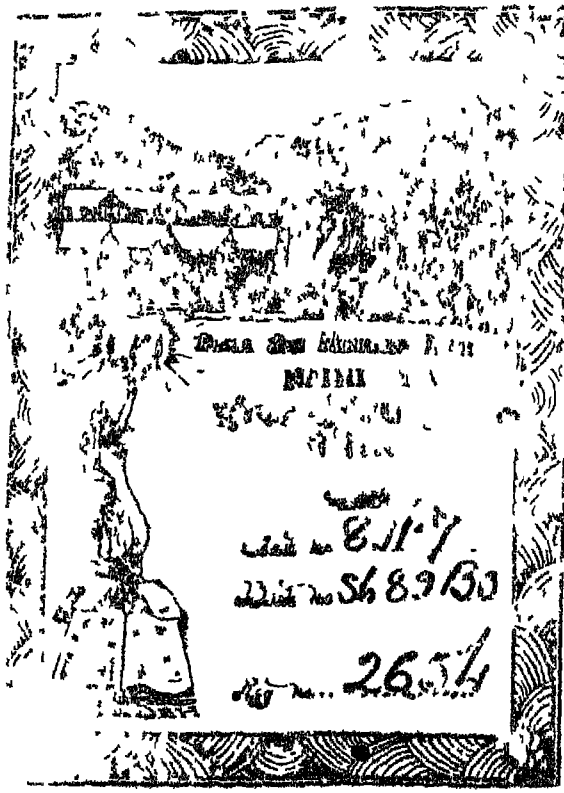

बौछार

चुने हुए अत्यन्त ही हास्य और व्यंगपूर्ण
पाँच प्रहसनों का संग्रह

लेखक
जी० पी० श्रीवास्तव

सम्पादिका
कमला देवी पाण्डेय

प्रकाशक

रघुनाथ प्रसाद

भारतीय प्रकाशन मण्डल

नन्दकुमार लेन,

प्रथम संस्करण

मई, १९५३

मूल्य ३)

मुद्रक

शिवनारायण उपाध्याय, बी० ए०, 'विशारद'

नया संसार प्रेस,

भदैनी, काशी।

लेखक-दम्पति

श्रीयुत जी. पी. श्रीवास्तव

श्रीमती नल्ली देवी

निवेदन

मैं अपनी परम पूज्यनीया भाभी श्रीमती लल्ली देवी (धर्मपत्नी श्री जी० पी० श्रीवास्तव) तथा अपने श्रद्धेय गुरुदेव हास्य-रस सम्राट श्री जी० पी० श्रीवास्तव के उपकारों को स्वप्न में भी नहीं भूल सकती, जिन्होंने मेरे जीवन को हर प्रकार से सुख और शान्तिमय बनाने में कोई कसर उठा नहीं रखी। इन्हीं महान व्यक्तियों के दिव्य प्रभाव ने मेरे पूज्य पति-देव श्रीकृष्णचन्द्र शास्त्री को राजनीति के कण्टकमय पथ से खींच कर शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र [illegible] और उन्हें गृहस्थी का शान्तिमय मार्ग दिखलाया। [illegible] के ऐसे प्रेमी हुए कि तौलिहवा (नेपाल राज्य) में बौध विद्यापीठ नामक विद्यालय की स्थापना में तन-मन-धन से लिप्त हो गये।

यह भी बिना कहे नहीं रह सकती कि साहित्य का सच्चा परिचय जो गुरुदेव के संरक्षण में हुआ है उसका लेशमात्र भी साहित्य की कई परीक्षाओं में सफल होकर भी मुझे नहीं हो सका था।

गुरुदेव की रचनायें हिन्दी के लिये कितनी अमूल्य निधि है, सभी जानते हैं। उनमें प्राकृतिक सत्यता तथा संसार का वास्तविक ज्ञान, हास्य और व्यंग की बौछारों के साथ कितने कूट कूट कर भरे होते हैं, पाठकों से छिपा नहीं है। उनके शब्दों का चुनाव इतना प्यारा और उपयुक्त होता है कि कहीं पर भी न एक शब्द बदला जा सकता है और न हटाया। शैली उनकी अत्यन्त ही निराली और अपनी है। चरित्रों के वार्तालाप का कहना ही क्या है? उद्देश्य पूर्ण और गूढ़ होते हुए भी इतने स्वाभाविक होते हैं कि साक्षात स्वाभाविकता भी उस पर न्योछावर हो जाती है और चरित्रों के चित्र यकायक पूर्ण रूप से खिंचकर आँखों के सामने झलक

उठते हैं। सबसे बड़ी बात उनकी लेखनी में यह है कि वह शुष्क से शुष्क विषय को भी इतना रोचक और हास्यपूर्ण बना देती है कि तारीफ़ नहीं हो सकती। उनकी प्रत्येक रचना उनकी उपज, कल्पना और मौलिकता का डंका पीटती है।

दिन के साथ रात और गुण के साथ दोष का होना आवश्यकीय कहा जाता है। इसलिए जब गुरुदेव की कला में कोई दोष नहीं मिलता तो कोई कोई उनकी रचना में कहीं कहीं पर अश्लीलता और भोण्डापन का कलंक लगाने का उद्योग करते हैं। उन लोगों की देखादेखी एक दिन गुरुदेव का ध्यान उस ओर मैंने आकर्षित किया। उन्होंने हँसकर कहा—'क्या करूँ बच्ची, मैं ढोंग नहीं कर पाता।' इस नन्हें और अत्यन्त ही गहरे उत्तर से मैं कट मरी और मेरी आँखें खुल गईं। अब जो उन दूषित अंशों को देखा तो उनमें सचमुच प्रकृति की अटलता और कला की अपूर्व बहार दिखाई पड़ी।

उदाहरणार्थ इसी 'बौछार' नामक प्रहसन में देखिये—रगई कहता है, 'जइसे घर से निकसेन वइसे भेटाय गये परधान। कहिन-बगिया में पेसाब काहे किहो। हम कहा हमार बगिया होय, हमरे बापे के पेड़ लगावा होय।' वइसे दिहिन तमाचा और कहिन 'तब अपने पेड़ पर काहे नाहीं चढ़ गयो रहा? जानत नाहीं हो कि हम गड़ाम गभा होई सगरो भुइयाँ के मालिक।' ऐसे अंशों पर शिष्टता और उच्चता की दोहाई देने वाले नाक भौं सिकोड़ने को सिकोड़ें, मगर उसी के साथ कला की दृष्टि में वह इसकी भी पोल खोल बैठते हैं कि हम कितने पानी में हैं। क्योंकि प्रधानजी के इन चार शब्दों की फटकार से ही उनका चित्र आँखों के सामने खींचकर उनके स्वभाव, मनोवृत्ति, आत्माभिमान, और पदाधिकार के साथ-साथ उनकी घोर मूर्खता और अयोग्यता का इतना वास्तविक परिचय देता है कि हास्य खिलखिला उठता है, सुधार दांत पीसता है और कला चकित होकर लेखनी की बलइया लेने लगती है।

एक दिन प्रहसन कलापर बात छिड़ते ही गुरुदेवने एक कार्टून दिखला कर कहा कि इसको देखते ही तुम जान जाती हो कि यह किसका चित्र है, मगर है बेडौल। अर्थात् अस्वाभाविक होनेपर भी इसपर स्वाभाविकता का भ्रम बना रहता है। बेडौलपन हमारे दिलको गुदगुदा कर हँसाते हुए बताता है कि इसमें कौन-सा गुण या दोष विशेष रूप में है। चरित्रों के ठीक ऐसे ही चित्र केवल उनके वार्तालाप द्वारा प्रहसनों में रचे जाते हैं। स्वभाव या बुराई के जिस अँगपर सुधार की आवश्यकता होती है उसको विशेष रूप से चटकीला करके हास्यजनक बना दिया जाता है। मगर इस सफाई से कि स्वाभाविकता भड़कने न पावे। यह तो हुआ चरित्र-चित्रण। विषय इनका अधिकतर कोई न कोई प्रथा या रिवाज होता है। उद्देश्य है मनोरंजन और सुधार। कहानी इनकी ऐसी गठी और रोचकता के बन्धन से कसी होनी चाहिये कि कहींपर भी अपनी शिथिलता से मन को ऊबने न दे। नहीं तो उद्देश्य चौपट हो जायगा। इसके अतिरिक्त उसमें पूरी सजीवता भी हो कि वह रंगमंच के विघ्न बाधाओं से अपनेको बचाती हुई एक ही सिलसिले में बढ़ती चली जाये। मगर किधर? इसका पता न दे ताकि कौतूहल पूर्ण उत्कण्ठा बनी रहे। और अन्त में यकायक अपने उद्देश्य पर पहुँच कर चकित कर दे और स्थायी प्रभाव डाल दे।

इन नियमों की दृष्टि से गुरुदेव के प्रहसन कितने महत्वपूर्ण हैं आप स्वयं ही समझ लेंगे।

गुरुदेवको कभी भी मैंने अपने मन से कुछ लिखते या कहीं लेख भेजते नहीं देखा। पूछनेपर पता चला कि विद्यार्थी अवस्था समाप्त होनेपर जब कभी भी उनकी लेखनी उठी है तो सदैव किसी न किसी के अनुरोध पर ही। एक दिन जब वह सरकारी नौकरी-रेवन्यु अफसरी-के पदपर सुशोभित थे तब मैंने एक रेडियो स्टेशन का पत्र कथनरूपी लेख की मांग के सम्बन्ध में ब्राडकास्ट करने के लिए उनकी मेजपर देखा। मालूम

हुआ कि उन्होंने उसका उत्तर दे दिया कि मुझे अवकाश नहीं है। बात सच थी। मगर जब से वह इस पद से उम्र के कारण पृथक हुए तब से हम और पतिदेव दोनों ही उनसे साहित्य-सेवा कराने के लिए उनके पीछे पड़ गये। अन्त में उन्हें वचन देना पड़ा कि केवल रेडियो द्वारा जो कुछ सेवा होगी करने की कोशिश करूंगा। फलस्वरूप जब-जब रेडियो से लेख की मांग आयी, हमलोगों ने उनसे उसकी पूर्ति करायी और अबतक उन्होंने (१) 'हँसे क्यों' (२) 'मर्ज बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की' (३) 'मुन्शी शिकायत राम' (४) 'भैंस चढ़ी बबूलपर गत्र-गत्र गूलर खाये' (५) आये शिकार करने लौटे शिकार होकर' (६) 'लेने के देने पड़े मजाक ही मजाक में' नामक हास्य निबन्ध लिखकर ब्राडकास्ट किया है।

लगभग दस वर्ष के ऊपर हुए होंगे गुरुदेव ने अपने प्रहसनों का एक संग्रह जिनमें कई प्रहसन इस संग्रह के भी थे, एक प्रकाशक के यहाँ प्रकाशनार्थ भेज रखा था। उनके पूछने पर यही उत्तर मिलता था कि अब प्रकाशित होने जा रहा है। मगर आज तक प्रकाशित न हुआ। शायद वह संग्रह ही अलोप हो गया।

इसी बीच में उस संग्रह के एक प्रहसन 'पैदायशीमैजिस्ट्रेट या हाकिम' को यहाँ अभिनय करने की आवश्यकता पड़ी, और एक प्रहसन "तीसमार खाँ की हजामत" बनारस या पटने में खेलने के लिये चुना गया। पुस्तकरूप में अभी उनमें से कोई प्रहसन छपा नहीं था। इसलिए इसकी नकल करने के लिए खास तौर से वहां से एक विद्यार्थी आया और उसको निराश होकर लौटना पड़ा। क्योंकि यहाँ कोई दूसरी कापी न थी। इसका आघात गुरुदेव के हृदय पर कितना पड़ा, मैं कह नहीं सकती। कहने लगे कि मुझे प्रहसनों के नष्ट हो जाने का अफसोस नहीं है मगर यह वेदना मेरे लिये असहनीय है कि कितनी कामना, आशा और विश्वास के साथ प्यासे की भांति इतनी दूर से इतना कष्ट सहकर वह लड़का कूएँ पर आया था और किस तरह बेचारा निराश होकर लौटा।

ऐसी निराशा की चोट कितनी वेदनापूर्ण, असहनीय और प्राणघातक होती है, उसी का दिल जानता होगा।

उसी दिन से हम और पतिदेव ने उनकी खोई हुई कृतियों को मासिक पत्रों में ढूंढ़ निकालने और एकत्रित करने का बीड़ा उठाया। पतिदेव नौकरी के सिलसिले में तोलिहवा चले गए। तबसे यह भार अकेले मेरे ही सर रहा और सौभाग्यवश अपने उद्योग में बहुत कुछ सफल हुई और प्रहसनों की प्रतिलिपियाँ गुरुदेव को भेंट की। उनको गुरुदेव ने मुझे यह कहकर वापस कर दिया कि मेरे पास पड़े-पड़े फिर यह नष्ट हो जायेंगे, इसलिए अब तुम्हीं अपने सम्पादन में मेरे प्रहसनों का संग्रह तय्यार करो। मैं पशोपेश में आ गई। उन्होंने फिर कहा कि जितना तुम मेरी कला और लेखनी को समझने लगी हो उतना अन्य कोई मुश्किल से समझ सकता है। इस तरह उन्होंने हठ करके यह भार मुझ पर डाल ही दिया यद्यपि इसके लिये मैं सर्वथा अयोग्य हूं।

कुछ दिन हुए गोंडा के डिप्टीकमिश्नर श्रीमान् एस० एन० निगम महोदय गुरुदेव के भाई श्रीमान् बी० पी० सिनहा (अंग्रेजी पत्रों के लेखक) के अनुरोध पर पत्रकारों की सभा में सभापति के रूप में गुरुदेव के गंगाश्रम पर पधारने की कृपा की थी। उस समय उन्होंने गुरुदेव का ध्यान रिश्वतखोरी पर प्रहसन लिखने की ओर आकर्षित किया था। गुरुदेव ने कहा कि विषय अत्यन्त ही शुष्क और ख़तरनाक है। इसको हास्यपूर्ण करना असम्भव सा जान पड़ता है।

इधर मैं गोंडा से बदलकर सुलतानपुर चली आई और उधर गोंडा में फरवरी ५३ में की प्रदर्शनी होने की तय्यारी होने लगी। डिप्टीकमिश्नर महोदय का इशारा पाकर प्रदर्शनी के कर्ताधर्ता श्रीमान् रायसाहब बा० गंगाबिहारी उक्त प्रहसन लिखे जाने के लिए गुरुदेव के पीछे पड़ गये। बारह वर्षीय फूल बाबू ने जो भाभी और गुरुदेव की आँखों का तारा है, मुझे लिखा कि बहिनजी बड़े मामा (गुरुदेव) को लिख दीजिए कि इस

प्रदर्शनी के लिए ऐसा प्रहसन लिखें जिसमें मेरा भी पार्ट हो। जब विजय दद्दाने (गुरुदेव के भतीजा श्रीमान् विजयकृष्ण सिनहा) पहली नुमाइश में 'तीसमार खांकी हजामत' नामक प्रहसन में 'मुनना' का पार्ट किया था, तो मैं भी इस नुमाइश में जरूर पार्ट करूँगा। आपका कहना वह नहीं टाल सकेंगे।'

इस प्रकार हर तरफ से घेरे जानेपर गुरुदेवने 'गौल्लार' नामक प्रहसन अपनी बीमारी की हालत में लिखा। इस संग्रह में देने के लिए इसकी प्रतिलिपि पाकर मैं फड़क उठी। इतना शुष्क विषय और इतना हास्यमय? उसपर इतने थोड़े में घूसखोरों के संसार की पूरी लीला और लोकबाजारी की भी झलक? यहींतक नहीं। रविवार के दिन और और दिनों में सुबहको बाजार बन्द रहने और शिक्षा, जिसके बलपर हमारा देश अपना सर ऊँचा कर सकता है, उसका खर्चा बढ़ जाने से जनता का क्या हाल है, इसका भी दिग्दर्शन कराया है। इस सम्बन्ध में, आफतचन्द ड्राइवर का रविवार के दिन रेल का चलाना रोक देना और फूल बाबू का बहँगीपर किताब और कापियां लादकर स्कूल जाना, अत्यन्त ही सुन्दर कटाक्ष हुआ है।

दूसरे प्रहसन 'हाकिम वा पैदाइशी मैजिस्ट्रेट' में अधिकार के नशे में चूर हाकिमों का नशा उतारा गया है। इसका रेडियो रूप बम्बई रेडियो से ब्राडकास्ट भी हो चुका है।

तीसरे प्रहसन 'हजामत' में तीसमार खां ऐसे दारोगा का अत्यन्त ही सुन्दर और हास्यजनक तमाशा देखनेको मिलता है।

चौथा प्रहसन 'भूल-चूक' विधवा विवाह के पक्ष में सामाजिक सुधार पर अनमोल और अत्यन्त ही लोकप्रिय हुआ है। विवशता की मूर्ति बालविधवा सुशीला के गुप्त प्रेमके प्रदर्शनपर मनोविज्ञान फूला नहीं समाता।

पांचवें प्रहसन 'चोर के घर छिछोर' में बेईमानों की बेईमानी की अच्छी खबर ली गई है।

सम्पादिका

श्रीमती कमला देवी पाण्डेय
(लेखक के भाइयों के साथ)

यह पांचों प्रहसन एक से एक बढ़कर है और अपने ढंग के निराले हैं। और आरम्भ से अन्ततक हास्य और व्यंग की ऐसी बौछार बरसाते हैं कि हृदय कमल खिल उठता है और सुधार के लिए उतावला हो जाता है। आशा है गुरुदेव की अन्य रचनाओं की भांति हिन्दी संसार इस संग्रह का आदर अवश्य करेगा।

प्रधान अध्यापिका
सुलतानपुर।
२५-२-५३

कमलादेवी पांडेय

परिचय

हास्यरस सम्राट

श्री जी० पी० श्रीवास्तव

इस संग्रह के प्रहसनों के रचयिता हमारे गुरुदेव श्री युत जी० पी० श्रीवास्तव का परिचय देना उनका अपमान करना है क्योंकि हिन्दी संसार में उनका नाम सूर्य की भांति स्वयं ही देदीप्यमान है। फिर भी अपने सम्पादन के भारको कुछ हल्का करने के निमित्त उनकी साहित्यिक जीवनी पर थोड़ा बहुत प्रकाश डालना भी मेरे लिए अत्यन्त ही आवश्यक है।

आपका पूरा नाम गंगाप्रसाद श्रीवास्तव है और आप श्री रघुनन्दन प्रसाद के पुत्र हैं। आपका जन्म २३ अप्रैल १८९० को बिहारप्रान्त के छपरा नगर में हुआ। आप इलाहाबाद विश्वविद्यालय के बी० ए० और एल० एल० बी० हैं। १९१५ से गोंडा में वकालत कर रहे हैं। बीच में १९४४ से १९४९ तक आप गोंडा में ही रेवेन्यू-अफसर के सरकारी पदपर भी सुशोभित रह चुके हैं। आप अपनी सचाई, ईमानदारी, व्यापप्रिय स्वभाव, हास्यमय प्रकृति, सद्व्यवहार और सादगी के लिए अत्यन्त प्रसिद्ध हैं।

विद्यार्थी अवस्था में ही आपने १९११ में हिन्दी साहित्य क्षेत्र में प्रवेश किया। आपकी प्रथम पुस्तक 'लम्बी दाढ़ी' १९१३ में छपी। इसके छपते ही हिन्दी संसार में खलबली मचाकर हर्ष पड़ा। आपके नाम का डंका पिट गया। आपको "हास्यभूषण" नामक स्वर्णपदक मिला। और आप सर्वोत्तम हास्य लेखक माने जाने लगे। फिर तो आपकी पुस्तकें 'मार मारकर हकीम' 'नाक में दम' 'नाक झोंक' 'उलटफेर' 'दुमदार आदमी' 'मरदानी औरत' 'मीठी हंसी' 'गंगाजमनी' 'भूलचूक' 'साहब बहादुर'

'लाल बुझक्कड़' 'लतखोरीलाल' 'दिलकी आग' 'साहित्य का सपूत' 'कन्यखती की गार' प्राणनाथ' 'चौखटानन्द' 'विलायती उल्लू' 'भय्या अक्किल बहादुर' 'लोक-परलोक' लकड़बघ्घा' गुदगुदी' आदि धड़ाधड़ निकलनेलगी। आपने अंग्रेजी में भी 'Survey & Demarcation' नामक एक पुस्तक लिखी है।

हास्यनाटक-कला में आप संसार के सब से बड़े हास्यनाटककार फ्रांसीसी मौलियर के पदचिन्हों पर इतनी कुशलता से चले हैं कि आप स्वयं हिन्दी के मौलियर कहे जाते हैं।

२०-११-१९३२ को पटना कालेज के साहित्य-सम्मेलन, ६-५-१९३३ को प्रयाग द्विवेदी मेला के परिहास-सम्मेलन और १०-११-३३ को कलकत्ता परिहास-सम्मेलन के आप सभापति हो चुके हैं। इन सम्मेलनों में आपने सभापति के आसन से जो भाषण दिये हैं और जिनका संग्रह 'हास्य-रस' नामक पुस्तक में है। उनमें हास्यकला के गूढ़ रहस्यों पर इतना उत्तम प्रकाश डाला गया है कि हास्यकला अमर होकर विश्व के साहित्यों में हमारी हिन्दी का सर गर्व्व से सदैव के लिए ऊंचा करती है।

सबसे अपूर्व चमत्कार आपकी लेखनी में यह है कि हास्यरस के अतिरिक्त गम्भीर रसों में भी कमाल करती है। इस सम्बन्ध में भी आप 'गंगाजमनी' की 'राधा' नामक गल्पपर 'गल्पमाला' द्वारा एक पदक प्राप्त कर चुके हैं। और 'दिलकी आग' नामक उपन्यास में तो भावों के अथाह सागरको मनोवैज्ञानिक समस्याओं से आपने ऐसा मथा है और अत्यन्त ही रोचकता, नवीनता और स्वाभाविकता के साथ कि स्वयं कला भी आपकी लेखनी पर इतरा रही है। इस टक्कर का मनोवैज्ञानिक उपन्यास शायद ही किसी भाषा में हो।

'नोकझोंक'के सम्बन्ध में साहित्याचार्य श्री ईश्वरीप्रसाद शर्मा कह ही चुके हैं कि लेखक की लेखनी-भैंस चूम लेने का जी चाहता है।

२०-११-३२ के पटना कालिज के सम्मेलन में डाक्टर हरीचन्द्र शास्त्री एम०ए०,डी० लिट ने तो आपकी लेखनी के सम्बन्ध में यहांतक कहा है कि देशी भाषाओं के अतिरिक्त अंग्रेजी, फ्रांसीसी और जर्मन भाषातक में भी मेरी जान में आजतक कोई ऐसा लेखक नहीं हुआ है जिसने श्रीवास्तवजी के समान हास्य और करुण दोनों रसों में समान सफलता प्राप्त की हो।

पटना और कलकत्ते में कई अभिनन्दन पत्रों द्वारा आपका सम्मान किया गया है। बिहार-हितैषी पुस्तकालय ने अपने २१-११-३२ के अभिनन्दनपत्र में कहा है—"आप हमारी दीन मातृभाषा के गौरवमणि हैं। आपने अपनी प्रतिभा के बल से हिन्दी में हास्य और करुणा की जो धारा बहायी उसने हिन्दी-साहित्य में युगान्तर उपस्थित कर दिया है। ...हम अबाध विश्वास के साथ कह सकते हैं कि हिन्दी में आपका कोई सानी नहीं। आप कोटिशः हिन्दी भाषियों के हृदय के एक छत्र सम्राट हैं।"

सचमुच गुरुदेव की लेखनी में जादू है। जिस क्षेत्र में चलती है अपनी नवीनता, मौलिकता, रोचकता, सरसता और स्वाभाविकता का चमत्कार दिखा देती है। मानव हृदय और चरित्रों का ज्ञान आपकी रचनाओं से टपकता है। आप सरलता और प्रकृति के पुजारी हैं। और धर्म समाज और साहित्य के कट्टर सुधारक। आप हँसी-हँसी में इतनी गहरी चोट करते हैं कि बुराइयां तिलमिला कर भाग खड़ी होती हैं।

शिक्षाक्षेत्र में भी आपकी रचनाएँ 'कागजी-करतब' और 'हवाई-लीला' आपकी अनोखी सूझ, कल्पना और उपज की बहार दिखाती हैं।

१९३७ में अंग्रेजी सरकारने भी आपकी साहित्य-सेवा का 'कारोनेशन मेडल' प्रदान करके आदर किया है।

१९४८ में गोंडा प्रदर्शनी ने आपके 'नकदम' नामक प्रहसन के सफलतापूर्वक अभिनय पर आपको स्वर्णपदक प्रदान किया है।

एक और विशेष गुण आपकी लेखनी में यह है कि वह शुष्क से शुष्क विषयको भी इतना रोचक और हास्यमय बना देती है कि तारीफ नहीं हो सकती। बौछार, साहित्य का सपूत, उलटफेर आदि इसका पूर्णरूप से समर्थन करते हैं।

हिन्दी-प्रचार में आपकी रचनाओं ने जो काम किया है वह सर्वविदित है। आपकी लोकप्रियता साहित्य क्षेत्र में भी कैसी है वह 'नवजीवन' की निम्न कविता प्रत्यक्ष रूप से बता रही है।

"हे 'साहित्य-सपूत' खूब जग में 'गुदगुदी' मचाई।
दुनिया की 'लम्बी दाढ़ी' में हास्य गुलाल लगाई॥
ए, जी०पी० हो किसके, क्यों 'मरदानी औरत' भाई।
'भूलचूक' हो माफ, उसीने 'दिल की आग' लगाई॥
कहें चौखटानन्द' वकालत अपनी सफल बनाओ।
हे 'लतखोरीलाल' सदा लतखोरी करते जाओ॥"

प्रधान अध्यापिका सुलतानपुर,
२७-२-५३

कमलादेवी पांडेय,
सम्पादिका

प्रहसनों की सूची

१—बौछार १७

२—हाकिम या पैदाइशी मजिस्ट्रेट ... ५१

३—हजामत ६९

४—भूल-चूक १०७

५—चोर के घर छिछोर १८१

बौछार

(फरवरी १९५३)

प्रहसन के पात्र

१—मोटूमल—एक देहाती
२—लम्बूराम ,,
३—गुपचुपला—जासूस
४—लाइसेन्सीलाल—बाजारी इन्सपेक्टर
५—ऐंठूराम—मजकूरी
६—भद्भद्नाथ } वकील
७—फेरीनाथ }
८—चन्टराम—मुन्शी
९—भिखारीमल—सेठ
१०—सरदार बन्डा सिंह—दूकानदार
११—आफ़तचन्द—रेल का ड्राइवर
१२—मिजाजी राम
१३—रमई—एक देहाती
१४—जुरमाना राम—सरपञ्च
१५—इन्तजाम अली—डिप्टी कलक्टर
१६—धाँधली राम—पेशकार
१७—लापरवाही नाथ—अहलमद
१८—गड़बड़चन्द—कोर्ट मुहर्रिर
१९—रिश्वतअली—अरदली
२०—फूल }
२१—छोटू } बच्चे
२२—छोटकन्नू }
२३—बड़े साहब
२४—अंगारा देवी—मिजाजी राम की स्त्री
२५—एक बुढ़िया

बौछार

दृश्य—१

जङ्गल

(रेल की सीटी और चलने की धड़धड़ाहट;
उसके बाद धड़धड़ाहट का बन्द होना)

(एक तरफ से पहिया ऐसी गोल और खूब चौड़ी पगड़ी पहने मोटूमल का दूसरी तरफ से बहुत ऊंची और नुकीली पगड़ी पहने लम्बूराम का घबड़ाए हुए आना ।)

मोटू—कहो भाई लम्बूराम ! कहूँ अञ्जन के ड्रेबर के पता मिला ?

लम्बू—अरे मोटूमल ड्रेबर गवा भाड़में, अञ्जन के एको खलासी कहूँ दिखाई नाहीं पड़त है ।

मोटू—न जाने गाड़ी रोक के सभी कहां अलोप होय गये । वहू ठीक आधी रात का और बिच्चे जंगल मां ।

लम्बू—दिसा फिरे गये होइहैं । जंगल तो होवे करे । कहूँ भेड़हा न उठा लइगा होय ?

(लापरवाही नाथ और गुपचुपलाल का बातें करते आना)

लापरवाही—मालूम होता है कि इन्जन बिगड़ गया है । इसलिए पास के स्टेशन पर दूसरा इन्जन भेजने के लिए तार देने गये होंगे ।

गुपचुप—गाड़ी रुके अब तो आठ घन्टे हो गये। अगर तार देने गये होते तो अबतक आ न जाते। हमको कुछ दाल में काला नजर आता है।

(ऐंठूराम और भदभदनाथ का आना।)

ऐंठूराम—हात्तेरे तक़दीर की! जहां जाए भूखा वहीं पड़े सूखा।

मोटू—कहो भाई का खबर लायो?

भदभद—खबर गई ऐसी में। यहां पेटकी पड़ी है। एक दफे सीधा पानी लेकर रेल पर चले थे। इस ख्याल से कि कन्ट्रोल के कारण मुझे पहुँचते ही आटा-दाल की तकलीफ न हो। मगर बीच ही में पकड़ लिये गये। पूरे १००) देकर छुटकारा मिला। तभी से मैं अनाज का एक दाना भी लेकर नहीं चलता। इसलिए जब देखा कि गाड़ी चलने की कोई उम्मीद ही नहीं है तब सीधे पास के शहरको दौड़ा। मालूम हुआ वहां एतवार है। कुछ मिलेगा ही नहीं।

लापरवाही—अरे! सचमुच आज एतवार है। बड़ा गजब हुआ। भूखों मर गये।

(मिजाजी राम का बड़बड़ाते आना।)

मिजाजी—मैं तो कहीं का न रहा। शहर भर एकदम क़बरिस्तान बना हुआ है। इसी लालच में दो-दो कोस दौड़ा गया कि एक्का तांगा मोटर लारी बस जो कुछ मिले यहां से किसी दूसरी जगह निकल जाऊँ। जहाँ घर पहुँचने के लिए रेल मिल जाय। क्योंकि आज मुझे किसी न किसी तरह घर पहुँचना जरूरी है। वर्ना नौकरी से भी हाथ धोऊँगा और श्रीमतीजी तो कच्चा ही चबा

जायेंगी। मगर आग लगे उस शहर में। वहाँ दूकानों की देखादेखी सब सवारियाँ भी बन्द हैं। तार देने डाकखाने दौड़ा वहाँ भी कुत्ते भूंक रहे थे। समझ में नहीं आता अब क्या करूँ?

लापरवाही—एतवार का वर्त कीजिये और दुकानदारोंको दुआयें दीजिये।

मिजाजी—अरे भाई एतवार ही के दिन हम नौकरी पेशेवालों के लिए बाजार करने का दिन था। और दिनों में सिर्फ सुबह ही को कुछ खरीदारी करने का मौका मिलता था। मगर उस वक्त दूकानें खुलती ही नहीं। खुलती कब हैं जब कचहरी जाने का वक्त होता है। अब बताइये किस वक्त कचहरी करें और किस वक्त बाजार।

(सेठ भिखारीमल का पगड़ी सम्हालते आना।)

सेठ—जयगोपाल की! जयगोपाल की! म्हारो होते हुए यदि आप लोगोंको कष्ट हो तो शेठ भिखारीमल की शमूचो नाक कटी जायगी। तभी तो जैशे ही शुणा कि आपलोग जंगल में बिणा शीधा-पाणी के पड़े हैं वैशेही शिरपर पाँव रखकर दौड़ियो। जल्दी में देखो जूतो भी नहीं पहणो। एतवारको दूकाण का शामणा बन्द रहतो है परन्तु पिछवाड़ो तो खुलो रहतो है। नहीं चुपके शे एक आदमी चले चलो। और शबके लिए शामाण ले आओ। हाँ भाव केवल दूणो पड़ेगो। भाई एतवार है न। उशी में हाँ.....शमझे? नहीं तो यह तोन्द भड़ से फूट जाये।

मिजाजी—अरे सेठजी आप खूब मिले। मैं तो मारे परेशानी के

मरा जाता हूँ। श्रीमतीजी के गुस्से का ख्याल और दमघोट रहा है। अगर आप थोड़ी-सी शराब दिलवा सकें तो मेरी जान बच सकती है।

सेठ—(कानोंपर हाथ धरके) राम-राम शराब का नाम मति लीजो। यह शूखो शहर है। यहाँ स्वपन में भी एक बून्द नहीं मिलणे को।

(सरदार बन्डासिंह का एक बाइसिकिल पर एक होलडाल लादे आना)

बन्डा—कौण कहता है। फल्लूस चाहिये। (जाकेट से एक शीशी निकालकर देता हुआ) लीजिये ५) मेरे को हवाले कीजिये। तुम सेठ जी बिज़िनेस (Business) करना क्या जानो। मेरे से सीखो। यहाँ सब सामान हालडाल में बान्ध कर लाया हूँ। तेरे के माफिक किसी को नो कास दोड़ाने की जरूरत नहीं है।

सेठ—परन्तु एक एक के बदले दश दश वसूल करते हो।

(आफतचन्द ड्राइवर का आना)

आफत—बला से। आस्मान के तारे तो तोड़ लाते हैं। सरदारजी एक शीशी मुझे भी दीजिये।

(मोजे की गैटिस खोलकर एक शीशी देता है।)

सबका चिल्लाना—अरे कौन ड्राइवर साहब? गाड़ी क्या रुकी है?.....कब चलेगी.....कब चलेगी।

आफत—हां हां जान क्यों खाते हो। बारह बजे रात के बाद। जानते नहीं आज एतवार है। सबके लिये एतवार एतवार है तो क्या गाड़ी के लिये एतवार नहीं है? तभी

तो सनीचर को जैसे ही रात के बारह बजे वैसे ही सट से गाड़ी रोक दी।

मिज़ाजी—हाय ग़ज़ब तब क्या एतवार को रेल का चलना भी बन्द हो गया ? अरे ! भाई किसके हुकुम से ?

आफ़त—मेरे मेरे और किसके ? मैं कोई चीज ही नहीं ? मेरी कोई गिनती ही नहीं ? अजी जनाब मैं तो वह चीज हूँ कि देखियेगा कि एतवार के दिन पाखाना पेशाब भी बन्द करा दूँगा। समझते क्या हैं। मैं आफतचन्द हूँ आफतचन्द।

मोटू—अरे डरेवर साहब। आप बहुत बड़वार हाकिम होई। आपके माथ छुई एह राइत तो आपे हमार माई बाप होई। अब ढेर आफत न मचाओ। गाड़ी पों से बजाय के चलाय दो।

लम्बू—और हमरो बाप हो तो तुहीं हो महतारी हो तो तुही हो। चाहे दूध गिराओ चाहे थपरा मारो। मुल गड़िया चलाय दो। गोड़ पर पगिया धारल है।

सब—हां हम सब लोग पैरों पर टोपी रखते हैं।

आफ़त—आपकी टोपी और चिकनी चुपड़ी बातों से मेरा पेट भर जायगा या मेरा खर्चा चलेगा ? जानते हो मेरा खर्चा ? मेरे दो लड़के कालिज में पढ़ते हैं। हरेक को दो दो सौ रुपये महीना देने पड़ते हैं। अगर आपको अभी गाड़ी चलवाना मन्जूर हो तो आप लोग एक हजार आदमी हैं। एक एक रुपया करके मेरे लिए एक हजार की थैली पूरी कर सकते हैं। आप लोग तो अपने अपने मौके पर नहीं चूकते। हर जगह लूट मचा रखी है।

बिना लिये सीधे मुंह बात तक नहीं करते। तो क्या मैं ही उल्लू हूँ। अजी जनाब आप ही लोगों को ठीक करने के लिये यह ढंग निकाला है। आम के आम गुठली के दाम।

(चल देता है।)

सब—अरे! ड्राइवर साहब सुनिये तो .....,सुनिये तो—

(पीछे पीछे जाते हैं)

सेठ—इस हत्यारे ड्राइवर को इसी समय आणो थो। एक पैशो का भी शौदा नहीं हुओ।

बन्डा—मेरे को तो हो गया। बिजिनेस (Business) इसको कहते हैं।

सेठ—अच्छा शरदार जी। म्हारो तोन्द में मारे शर्दी के गठिओ हो गयो है। भीतर बाहर गर्माहट पहुचाणे को एक शीशी म्हारो को भी दे दीजो।

(दूसरे मोजे से निकाल कर एक शीशी देता है।)

बन्डा—(हाथ फैला कर माँगता हुआ) फल्लूश।

सेठ—अल्लूश फल्लूश कैशो। देखो आधी शीशी तो तोन्द के भीतर गर्माहट पहुँचायगी। चौथाई कडुओ तेल में ऊपर मली जायेगी। तलछट दरोगाजी के करम में बदो है। म्हारो कौन दोष? नहीं तो आधो पर शमझौता कर लो.... .....अब कहो बेटो बिजिनेछ किशको कहते हैं। अच्छा जय गोपाल की।

(जाता है)

बन्डा—अरे सेठ जी। सुनोजी सुनोजी—

(पीछे पीछे जाता है।)

...

दृश्य—२

मिज़ाजी राम का मकान

(कोने में एक बिस्तर लगी चारपाई पड़ी है और श्रीमती अंगारा देवी झाड़ू लगा रही हैं।)

अंगारा—(झाड़ू लगाते हुए) आग लगे ऐसी महरिन पर। गिन के सौ बार कह दिया था कि आज हमारे यहां महिला समाज है। जरा सबेरे ही आना। मगर नौ बज गये। अब तक दिखाई नहीं पड़ी। मैं श्रीमती अंगारा देवी। महिला समाज की मन्त्राणी और मुझी को चौका बरतन और झाड़ू लगाना पड़े तो समाज का काम कब हो। क्या करूँ आज कल इन्हीं लोगों का जमाना है। तनख़ाह दो इनाम दो खुशामद करो। फिर भी इनका मिजाज नहीं मिलता। लात की देवी भला कब बात से माननेवाली ? रह चुड़ैल आज के जलसे में तुझपर ऐसा बेढब प्रस्ताव पास करती हूँ कि तू भी याद करेगा, और उनको क्या कहूँ ? रात को सफ़र से जैसे ही लौटे वैसे ही उनसे भी कह दिया था कि सुबह को जाकर महरिन से ताकीद कर देना। उनका भी अबतक पता नहीं है।

(झाड़ू लगाते लगाते चारपाई के नीचे घुसती है वैसे ही चिल्ला कर भाग खड़ी होती है।)

अंगारा—अरे ! बाप रे बाप ! इस चारपाई के नीचे कौन पड़ा है।

(मिज़ाजी राम का चारपाई के नीचे से आंख मलते हुए निकलना।)

अंगारा—अरे ! कौन ? आप ? और चारपाई के नीचे ?

मिजाजी—क्या करूँ सफर में बहुत जगना पड़ा था।

अंगारा—तो सोने के लिये यहीं जगह थी ?

मिजाजी—और मेरे लिये कहां ठिकाना था। यहां भी तो नहीं सोने पाया।

अंगारा—बड़े काम चोर हो। काम के डर के मारे चारपाई के नीचे घुस के पड़ गये कि कोई देख न ले। न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी। रात को क्या कहा था ? क्या कहा था ? क्या कहा था ?

मिजाजी—(कान बन्द करके) उफ ओ ! एक दम अगिया बेताल न बनो। जो कुछ कहना हो आदमी की तरह कहो।

अंगारा—भूल गये ? इतनी जल्दी ? ऐसी लापरवाही ?

मिजाजी—हाँ हाँ खोपड़ी न चाटो। क्या महरिन नहीं आई ? अच्छा तो जाता हूँ बुलाने।

(जाता है)

अंगारा—इन्हीं पुरुषों ने नौकरों को सर चढ़ाकर उनका दिमाग खराब कर रखा है। इतना नहीं समझते कि आदमियों में भी पशु होते हैं जो डण्डे ही के सहारे काम करना जानते हैं। और किसी उपाय से नहीं।

(झाड़ू लगाती चल देती है। दूसरी तरफ से *मिजाजी राम* एक अखबार जलाता हुआ आता है।)

मिजाजी—महरिन तो नहीं मिली। मगर रास्ते में डाकिया मिल गया। श्रीमती जी के नाम यह अखबार देखते ही और बदन में आग लग गई। श्रीमती जी जैसी थीं वैसी थी हीं। उस पर इन अखबारों ने उनपर वह काम

कर रखा है जो करेले पर नीम भी नहीं कर सकता। तब भला बिना इसको जलाये मेरा कलेजा कहीं ठंडा हो सकता है ? ... ...अरे अब इन जली हुई राख को कहाँ छिपाऊँ ? कहीं देख लेगी तो भूचाल आजायगा।

(जल्दी जल्दी उसको अपने रूमाल में रखकर जिसमें पहले ही से एक नया कारबन पेपर का टुकड़ा भी छिपा रहता जेब में ठूँस लेता है। फिर जमीन को फूंककर राख साफ करता है। आंख में राख पड़ने का ढोंग करता है। आंखों को मलता हुआ उठ खड़ा होता है।) हात्तेर की ! यह अखबार ही जहरीला है। तभी तो इसकी राख मिर्चा सी लग रही है। उफ ओ ! अब कुछ दिखाई भी नहीं पड़ता। (पाकेट से रूमाल निकाल कर आंखें मलता है। इसतरह अपना सारा मुहँ काला कर लेता है।)

(मदमातनी आती है।)

मदमातनी—अरे ! बाप रे बाप ! यह कौन ? कलुआ भूत। मर गई। मर गई। अरे दौड़ो लोगों जान बचाओ।

(कई आदमियों का डन्डा लेकर दौड़ना और चिल्लाना।)

मदमातनी—देखते क्या हो ? मारो मारो।

—:❀:—

दृश्य—३

मैदान

रमई—का कहीं हमार कर्मे टेढ़ है। पहले हम किसानन के दुई खसम रहे। जेठ पटवारी और लहुरा रहे जमीदार। तौन तो नकुनन चना चबवाए रहे। और अब तो पूरे पचहत्तर भतार हैं। सब एक्के डील के। कौनो लहुरा नाहीं। अंच पंच, सड़पंच, पड़धान, सड़धान, निस्पिट्टर फिस्पिट्टर, पटवारी-सटवारी, कहाँ तक गिनाईं। और केकरे तरवा में तेल लगाईं—

(ऐंटूराम मजकूरी का सम्मन लिये आना।)

ऐंटूराम—तुम्ही रमई हो ? अच्छा तो लो तुम्हारे नाम एक सम्मन है।

रमई—(अलग) लो एक खसम तो पहुँच गये। (प्रकट) यू तो बताओ कौनो जापानी इजलास के सम्मन तो न होय ?

ऐंटूराम—जापानी इजलास कौन ? क्या देहाती अदालत ?

रमई—जाओ नांव न लेयो। ऊ तो खरखोदवा इजलास होय। अरे जापानी इजलास वह होय जेहकर न फैसला टिकाऊ और न नौकरिये टिकाऊ। मुल मिजाज दादा पसेरी भर के। सबेरे से संझा तक मूड़े पर डता रहो तो अस आंधर बन जइहें कि तकबे न करिहें। मुल जहाँ किच्चो डोलेयो कि नुकदमा हो गवा फुस।

ऐंठूराम—सम्मन लेते हो या बातें बनाते हो ?

रमई—हम जान गयेन। तब्बे ऐंठत हो। दादा सोर आना पान खाय के ले लेयो। और लिख दो नाहीं मिले। नाहीं तो यह साइत दाम दूकान न गवाही साखी के लिये न कागद पत्तर के लिएहै। मसीने में हमार मुकदमा गन्ना अस चिचोर के बहाय दीन जाई। दादा बहू मसीने होय। फैसला मसीन। तब्बे तो हम तारीख के लिये घिघिआवा करब हुआँ चरखा अस कलम खर-खर, खर-खर चलते रही। और तारीखो होई तो कब जब गाड़ी छूट जाई मोटर छूट जाई अन्धार होय जाई तब। जेहमा कौनो जतन से घर न पहुंच पाई। दादा यह साइत अस फैसला मसीन से जीव बचाओ।

ऐंठूराम—तब एक से काम न चलेगा पूरे पांच निकालो।

रमई—कहां से देई। हमरे एक्के बर्द रहा तौन लड़कवा के जमानत करावे के लिये अढ़ाई सौ पर बेच डारेन। रुपइया लेकर जइस घर से निकसेन वैसे भेटाय गय पड़ाधान—

ऐंठू—परधान।

रमई—हां हां वही। कहिन बगिया मां पेसाब काहे कियो? हम कहा हमार बगिया होय। हमरे बापे के पेड़ लगावा होय। वैसे दिहिन तमाचा और डाटिन कि तब अपने पेड़ पर काहे नाहीं चढ़ गयो रहा। जानत नाहीं हो कि हम गड़ाम सभा होई। सगरो जमीन के मालिक। दादा पाँच रुपया नोच लिहिन। आगे बढ़ेन तो मिल गये पड़ाधान—

ऐंठू · क्या ?

रमई—बहिर हो। सठापक्ष। कहिन चलो हमार खेत गोड़ो।

बहुत चिरौरी कीन। तब कहिन कि लोकइया पर मार-पीटे वाला दावा हमरे इजलास पर कर दो वह परदेस कमाय के आवा है। ओहकर मिजाज ठीक करे का है। वही साइत दावा लिखाय के ले लिहिन तब जीव बचा। और आगे बढ़ेन तो फाट पड़े कुड़क अमीन। हमरे हींया तालीका लिये आवत रहे। पच्चीस दीन तो उनसे छुट्टी पायन। कौनो जतन से कचहरी पहुंचेन। हुआं के हवाल न पूछो। हुंआ जे है वही बावन हाथ के। तीन दिन तक रपटाय रपटाय मार डारिन और गिद्ध अस सगरो रुपयो नोच लिहिन। और जमन्तियो नाहीं भवा। हुक्का अस मुहँ लिये लौटन आइत है। अब तूहीं बताओ तूका कहां से देई?

ऐंठू—कैसे इतने रुपये खर्च हो जायेंगे? किसको-किसको दिया?

रमई—केहका-केहका बताई। सभै तो तोहरे अस भतारे भतार होयँ। भतारन के कहूँ नाँव लीन जात है?

ऐंठू—हम तो बिना लिये मानने के नहीं। हम ऐंठूराम मजकूरी हैं। पत्थर से भी तेल निकाल लेते हैं। समझे?

रमई—तो जौन कुछ होय दादा तूहूँ नोच ले जाओ। बताय तो दीन कि हमर पास पक्के रुपया है। बस,

ऐंठू—फिर लगे बातें बनाने।

रमई—अच्छा तो लो। रिसिआओ न। (अपने डन्डे से टंगे हुए जूतोंको घुमाकर उसकी खोपड़ी पर गिराता है।)

ऐंठू—अरे! अरे! यह क्या?

रमई—ताकत का हो। असली चमड़ौधा होय। ३½ के लीन रहा।

जुरमाना—(मोटूमल की तरफ पीठ करके अपने एक हाथ की उंगलियाँ मांगने के लिए हिलाते हुए।) बोलो लम्बू तूका का कहे के है ?

लम्बू—हमार मुकदमा न करो। हम दरखास्त देब। निगरानी करब। (मुंह फेरकर बीड़ी पीता है।)

(मोटूमल अपने झोले से एक बड़ी-सी मूली निकाल कर जुरमानाराम के हाथ पर रखता है।)

जुरमाना—जाओ जाओ अघाय जाबो। एतिक पेसी होई एतिक पेसी होई, जेतिक तोहरे मूड़े में बारो न होई।

(मूली बगल में छिपाकर मोटूमल की तरफ मुड़ता है और लम्बूराम की तरफ पीठ करके हाथ की उंगलियाँ हिलाता है।)

फूल—इनका तो सारा कानून खोपड़ी में नहीं पेट में है। तभी तो पेटकी छुछूछी कुतिया की दुमकी तरह हिल रही है।

मोटू—जानो सरदी लग गई है। गुट्टी गर्मा दो तो लपलपाना बन्द हो।

जुरमाना—(मोटू से) यह तू का भंगी बनाइस। चमार बनाइस और मारे के लिये डन्डा तानिस। यही बात है न मोटू।

मोटू—हाँ धर्मावतार।

रमई—सोरहो आना सही है। हम दुरबीन लगाये अपने गाँव से देखत रहेन।

(फूल लम्बूराम के हाथ से बीड़ी लेकर जुरमानाराम की लपलपाती हुई हथेली पर रख देता है।)

जुरमाना—अरे बाप रे बाप ! (मूली गिर पड़ती है । छोटकन्नू मूली उठाकर खसक जाता है ।)

छोटकन्नू—(मूली दिखाकर दर्शकों से) आधा आधा ।

जुरमाना—(लम्बू की तरफ घूम कर) तू हो । रहो । अस जुरिमाना करित है कि तुहू जनिहो । हम श्री जुरिमानाराम होई ।

फूल—जुरमाना किस बात का, जुरमानारामजी ।

रमई—और सिड़ी तो कहबे नाहीं कियो । पूर नाँव लो जुरमानाराम सिड़ी ।

जुरमाना—यह एहका भंगी चमार बनायके गरियाइस और मारे के लिये डन्डा उठाइस । तौने लिये ।

फूल—वाह ! आपको बसन्त की भी खबर है ? जमाना बदल गया । इसने उसको गाली नहीं दी बल्कि आशीर्वाद दिया । मारने के लिये डन्डा नहीं ताना बल्कि हाथ जोड़ कर दंडवत किया ।

जुरमाना—कसस ?

फूल—पहले आशीर्वाद में कहा जाता था कि तुम राजा हो जाओ । महाराजा हो जाओ । पंडित हो जाओ और अब कहा जाता है कि तुम भंगी हो जाओ । चमार हो जाओ । किसान हो जाओ । मजदूर हो जाओ और दंडवत किया जाता है दोनों हाथ जोड़ कर । और जब डन्डा हाथ में होगा तो वह भी इस तरह उठेगा ।

(तीनो लड़के हाकीस्टिक उठाते हैं)

जुरमाना—भाग कर । हम जरिमाना न करब न करब । हाथ नीचे करो ।

लम्बू—(फूल को गोद में उठाकर) दादा तू फौनो बकीले के लड़का हो। खूब बहस कियो। तुम का सेर भर मिठाई खवाइब।

रमई—फुर जमाना बदल गवा। तो सब चीज बदल गवा हाई।

फूल—आर नहीं तो क्या ? तभी तो हम कहते हैं।

(सब लड़के गाते हैं)

"जमाना रंग बदलता है।
जमाना रंग बदलता है।"

फूल—देखो—

पहले घी से सब्जी बनती थी। अब तो सब्जी से घी बनता है।

(सब लड़के गाते हैं)

"जमाना रंग बदलता है।
जमाना रंग बदलता है।"

फूल—पहले केवल औरत जनती थी। अब तो सारा भारत जनता है।

(सब लड़के गाते हैं)

"जमाना रंग बदलता है। जमाना रंग बदलता है।"

दृश्य—४

सड़क

(मिजाजी राम और जुरमाना राम का बातें करते आना)

मिजाजी—आजिज हूँ। नाक में दम है। घर क्या जलता हुआ भाड़ है। अरे मैं जन्मभर के लिए गुलामी लिखनेको तय्यार हूँ अगर कोई मेरो बीबी का बस मुँह बन्द कर दे।

जरमाना—यह कौन मुसकिल है। मुँह बन्द करे के मुकदमा दायर कर दो। गांव में होतेयो तो अपने इजलास पर दावा करायके ओकरे मुँहा पर चट पच्चर ठोकाय देइत।

मिजाजी—अरे। ऐसा भी कहीं मुकदमा हो सकता है?

जरमाना—अब लागयो कानून भूके। और हमरे आगे। रुपइया चाही रुपइया। कौन चीज नाही होय सकत है? वह फेरीवाले उकील आवत हैं। उनसे पुछवाय देई। अरे! यह तो कनमैलिया होय।

(गुपचुपलाल का आना)

गुपचुप—तूंबी लगवायलो। सींगी लगवाय लो। कान के खूंट निकरवाय लो।

जुरमाना—ए कनमैलिया सुनो। तू हमका बहुत पछुआए रहत हो। का मामला है?

गुपचुप—(अलग) चोर की दाढ़ी में तिनका।

(प्रकट) बड़े आदमियों ही के पीछे तो हम लोगों का गुजर है सरकार।

जुरमाना—(मिजाजी राम से) इनका चार पैसा दो। हां अब हमार खूंट निकारो .....हे कनमैलिया यह तो बताओ। एक जने कमरा आढ़े तोहरे साथे कब्बो कब्बो रहत हैं वे के को हैं।

गुपचुप—जरा मुंह खोलिये। और। अब नाक भी ऊपर कीजिये जिसमें कान तक रोशनी तो पहुँचे।

मिजाजी—जब वकील ही के पास चलना है तो किसी पुराने वकील के पास चला जाए।

जुरमाना—जानत हो। एह साइत काने में पहरुआ चलत है। हां कनमैलिया तूहूं सुने हो कि बड़े साहब घूसखोरन के पता लगावे के लिये कौनो जासूस तैनात किहिन हैं।

गुपचुप—आपने तो फिर मुंह बन्द कर लिया। इधर आइये। मुंह खोले चुपचाप बैठे रहिये। अब जल्दी जल्दी मुंह खोलिये और बन्द कीजिये। ताकि खूँट आप से आप निकल आवे।...अच्छा उठिये (कान पकड़ कर) इधर बैठिये ..सर झटकिये। मुंह खोले रहिये।

(फेरीनाथ वकील गाउन पहने बग़ल में किताबें दबाए उनके पीछे चन्टराम मुन्शी सरपर छोटी मेज रखे और पीठ में कुर्सी बाँधे आवाज लगाते आते हैं।)

फेरीनाथ—मुकदमा करा लो मुकदमा।

चन्टराम—दरखास्त लिखा लो। सम्मन लिखा लो।

जुरमाना—(जल्दी से उठकर) भले आय गयो बाबू फेरीनाथ! बड़ा भारी मुकदमा है। (गुपचुपलाल से) अच्छा

अब जाओ। (गुप्तुपलाल जाकर छिप जाता है। चन्टराम मेज कुर्सी रखता है। फेरीनाथ कुर्सी पर बैठकर किताबें उलटते हैं।)

जुरमाना—(मिजाजीराम से) जाओ वकील साहब के लिए दुई पइसा के पान और एक सिगरेट लाओ। (मिजाजीराम जाता है) हे वकील साहब दुइ सौ से कम न लिहो। सटपट कौनो मुकदमा दायर कर दो। मुल आधा हमार रही।

चन्टराम—आधा नाहीं भाई। चौथाई और १०) मेरी लिखाई।

जुरमाना—तब तूहीं रहेयो। जाइत है दूसरे के पास। हमका नाहीं चीन्हेयो। गाँव के हाकिम। पुलिस के दहिना हाथ। परमिट और लाइसेन्स देवइयन के गददगार। चोर बदमासन के गुरू घन्टाल। मारे मुकदमा के गाज देव।

(मिजाजीराम आता है)

जुरमाना—लो भइया मिजाजीराम। २००) पर तै करदीन।

चन्टराम—१०) मेरी लिखाई।

जुरमाना—हाँ हाँ ऊ अलग रही।

मिजाजी—मगर अभी एक वकील साहब से पूछा तो कहा कि ऐसा मुकदमा हो ही नहीं सकता। इसके लिए कोई कानून की दफा ही नहीं। दूसरे शहर भर मेरी बीबी की तरफ है। मुझे कोई गवाही मिल नहीं सकती क्योंकि वह महिला समाज की मन्त्राणी हैं।

जुरमाना—अरे वै कौनो पुरान वकील होइहैं। वे नया कानून मेहरारू के मुँह बन्द करनेवाला का जानैं?

फेरीनाथ—(चौंककर) क्या ? (हाथ से किताब गिर पड़ती है। चन्दराम की भी कलम हाथ से छूट जाती है।)

जुरमाना—मरदन के हथियार है लाठी, डन्डा, तलवार, बन्दूक। और मेहररुअन के हथियार है इन सभन के बाप उनके मुंह। जब मरदन के हथियार पर दफा ४४ लाग सकत है तो मेहररुअन के हथियार पर और जान के खतरा होय तब काह न लागी। बस गवाही नाहीं है तब्बे तो तोहरे पास आयन हैं कि अस कानून हेरो कि बिना गवाही साखा क काम बन जाये।

फेरीनाथ—अब समझा। (किताब उलट कर) लो मिल गया कानून। दफा $\frac{१०९}{४४}$। इसमें गवाही सवाही की कोई जरूरत नहीं। बस पुलिस से रिपोर्ट करवा देना है कि नुक्स अमन का अन्देशा है।

जुरमाना—एहकर जिम्मा हमार। हम का नाही कराय सकित है। मुल अस मुकदमा में ऊपर दर्रा खर्चा बहुत है। हजारन लागत है। मुल हमार सभै मुलहजा करत है। ५००) में टिचन कराय देब।

(गुपचुपलाल का आना)

गुपचुप—ए वकील साहब ! वह बुला रहे हैं एक मुकदमा है।

जुरमाना—अरे दादा तू फिर फाट पड़ेयो। (मेज कुर्सी के साथ सबका जाना।)

दृश्य ५

इजलास

(धांधलीराम पेशकार, लापरवाहीनाथ—अहलमद, गड़बड़नन्द कोर्ट मुहर्रिर, रिश्वतअली अरदली, भदभदनाथ वकील और कुछ देहाती।)

भदभदनाथ—जब डिप्टी साहब इन्तजामी कामों में फँसे हैं तब पेशकार साहब तारीख दीजिये। गाड़ी तो मिल जाए। मैं बाहर से आया हूँ।

धांधलीराम—आप तो नाक में दम किये हैं। सिलसिले से काम नहीं करने देते। डेढ़ सौ मुकदमों का सिलसिला बिगड़ जायगा तो मरना तो मुझी को पड़ेगा। रिश्वतअली तुम अरदलीगिरी क्या खाक करते हो। जाओ वकील साहब को समझाओ।

रिश्वत—अजी वकील साहब सुनिये।

(दोनों बाहर जाते हैं)

धांधली—(एक दरखास्त देखते हुए) अजी लापरवाहीनाथ जी! इधर आइये। आप अलहमद हैं या तमाशा। यह दरखास्त आपने इतनी मुद्दत के बाद पेश करने को दी। कुछ नौकरी का भी ख्याल है।

लापरवाही—मैं क्या करूं धाँधलीराम जी। यह पुरानी मिसलों के साथ महाफिज़खाने में जाकर गुम हो गई थी!

धांधली—अच्छा अभी मालूम होगा।

(रिश्वतअली का आना और धांधलीराम से इशारा करना।)

लापरवाही—धौंस किस पर दिखाते हैं। यह दरखास्त आपके जमाने में गुम हुई थी। जब आप अहलमद थे। देख लीजिये तारीख।

धांधली—आयं! (सर पकड़ कर) यह तो बड़ा गजब हुआ। रिश्वतअली रामनगर के चौकीदार को बुलाओ।

(रिश्वतअली जाता है)

(जुरमाना राम का आना)

जुरमाना—पेसकार धांधली रामजी सलाम। अहलमद लापरवाही नाथ जी सलाम, कोट मुहरिर गड़बड़चन्द जी सलाम। भय्या रिश्वतअली अरदली तुहूं का सलाम। कहो सब टिचन हैं।

गड़बड़चन्द—जिसमें आप हाथ लगाए वह कैसे न टिचन हो।

जुरमाना—वही तो। अच्छा हम तो हीयां रहब न। तनी सभै खूब जोर लगायो।

(गुपचुपलाल चौकीदार के भेष में आता है।)

जुरमाना—अरे कनमैलिया राम तू चौकीदार कब से हो गयो।

गुपचुप—आज पेशी है। मैं अपने भाई की जगह पर आया हूं। वह बीमार हैं।

(जुरमाना राम जाता है।)

धांधली—(गुपचुप से) तुम अपने मौजे के रामलाल को बुलाकर कहो कि वह अपनी दरखास्त वापस ले ले। मियाद नहीं है।

गुपचुप—वह तो मर गये जमाना हुआ।

(रिश्वतअली का बौखलाए आना।)

रिश्वत—हटो हटो। डिप्टी इन्तजाम अली साहब आ रहे हैं।

(देहातियों का जाना)

(इन्तजामअली का आना।)

इन्तज़ाम—वेल पेशकार। जल्दी करो। अभी फिर मुझे इन्तजामी मामलों में जाना है।

धांधली—हजूर ५४ मुकदमें निगरानी के हैं—

इन्तज़ाम—अरे। पहले इन्तजामी मामलात पेश करो जानते हो यहाँ मरने तक को भी फुरसत नहीं है।

धांधली—हजूर एक दरखास्त गुम हो गई थी। बड़ी कोशिशों से आज मिली है। उस पर हुकुम हो जाना चाहिये।

इन्तजाम—किस बात की दरखास्त है?

धांधली—हुजूर रामलाल ने दरखास्त दी है कि मेरी लड़की चन्द्रप्रभा देवी से ठाकुर जबरदस्त सिंह जबरदस्ती शादी करने आ रहे हैं। इस जबरदस्ती रोकने के लिए माकूल इन्तजाम किया जावे। इस पर हुजूर मैंने हुकुम लिख दिया है कि चौकीदार को हुकुम दिया गया कि घर की रातोंदिन रखवारी करे। बस दस्तखत कर दीजिये।

इन्तजाम—ठीक किया।

गुपचुप०—अरे हजूर रखवारी क्या करूँ। अब तो चन्द्रप्रभा देवी का लड़का बी० ए० में पढ़ता है।

धांधली—बको मत। हुक्म हो गया। चलो यहां से, हां हुजूर हमारा जरूरी मुकद्दमा ६१९ का है। पुकारो मिजाजी राम बनाम अंगारादेवी।

रिश्वत—मिजाजीराम बनाम अंगारादेवी कोई हाजिर है।

(अंगारा देवी, मिजाजीराम और फेरीनाथ का आना।)

इन्तजाम—पुलिस की रिपोर्ट क्या है ?

धांधली—नुकसे अमन का सख्त अन्देशा है। बहुत कड़ा जमानत होनी चाहिये।

इन्तजाम—कोर्ट मुहर्रिर एक एक हजार की दोनों से जमानत लो। बना दोनों को साल साल भर के लिए भेजो।

अंगारा—अरे! हुजूर! जरा गवाहों से तो पूछ लीजिये, शहर भर की औरतें गवाही में आई हैं। मैं महिला समाज की मन्त्राणी हूँ।

फेरीनाथ—हुजूर मेरे मुव्वकिल पर कैसी जमानत ? वही तो सताया हुआ है।

इन्तजामी—जनाब ताली एक हाथ से नहीं दोनों से बजती है। आप लोग सीधे तौर से जमानत के लिये राजी न होंगे। लड़ना चाहते हैं। अच्छा। कोर्ट मुहर्रिर दोनों को हवालात भेजो।

फेरीनाथ—दौरान मुकद्दमें के लिये मेरे मुव्वकिल की तरफ से यह जमानत का दरख्वास्त है हुजुर। मैंने तस्दीक भी कर दी है।

इन्तजामी—मैं ऐसी तस्दीक फस्दीक नहीं मान सकता। इसको मैं तहसील फिर पुलिस से तस्दीक कराऊँगा। महीनों लगेंगे। समझ लीजिये, मैं तो बस साल भर के लिये

जमानत लेना या जेल भेजना यही चाहता हूँ। पेश-कार इन लोगों को राजी करो।

(इन्तजाम अली चल देते हैं।)

लापरवाहीनाथ—(फेरीनाथ से) जुरमाना राम तो आपके मुव्वक्किल की जमानत करेंगे ही। आप नाहक परेशान हैं।

गड़बड़चन्द—हाँ मन्त्राणीजी! यहाँ मन्त्राणीपन न चलेगा। आप की भलाई इसी में है कि आप सीधे सीधे जमानत देने के लिये राजी हो जाइये। नहीं तो हवालात और जेल आपको जाना ही पड़ेगा।

धांधली राम—थोड़ी देर के लिए मन्त्राणीपन भूल जाइये। यह अदालत है। यहाँ गेहूँ और घुन दोनों एक ही चक्की में पिसते हैं।

लापरवाही—हाँ समझ लीजिये यह १०९ का मुकद्दमा है। बिना जमानत दिये या जेल गये छुट्टी मिल ही नहीं सकती।

अंगारा—(रोती हुई) मैं जमानत कहाँ से दूँ? मेरी भला जमानत कौन करेगा?

मिजाजी—अगर यह साल भर तक अपने मुँह पर यह जाबा लगाए रहें तो मैं जमानत कर लूँगा और दूसरों से भी करा दूँगा।

धांधली—वाह! वाह! ठीक तो है। अब देखते क्या हैं। अब कोर्ट मुहर्रिर को और जमानत की दरखास्तें लाइये इधर अभी मञ्जूर कराये लाता हूँ।

गड़बड़—(अंगारा के मुंह पर जाबा लगाता हुआ) अब आप साल भर तक गुर्राइयेगा नहीं। याद रखिये।

दृश्य ६

सड़क

(फूलकुमार कन्धे पर एक बहंगी लिये जिसमें दो ढकी हुई डोलचियाँ बँधी हैं आता है। सामने से एक बुढ़िया मुँह पर जाबा लगाए और हाथ में एक झण्डा लिए, चटकती मटकती आती है और दूसरी तरफ से निकल जाती है।)

फूल—भई वाह! यहाँ की औरतों ने यह अच्छा फैशन निकाला जिसे देखो वही आज मुँह पर जाबा लगाए और हाथ में झन्डा लिए घूम रही है।

(गाता है)

"जमाना रंग बदलता है। ज़माना रंग बदलता है"

(एक तरफ से धांधलीराम का दूसरी तरफ से लापरवाहीनाथ का रोते हुए आना।)

धांधली—हाय! ग़ज़ब अब क्या करूँ! ऊँ ऊँ ऊँ।

लापरवाही—हाय! हाय! मैं तो जीते ही मर गया। ऊँ ऊँ ऊँ।

फूल—यह कौन सी आफत आ गई। (दोनों के पास जाकर)। अरे भाई क्या हुआ?

धाँधली—अरे भाई! मेरी बीबी ने भी मुँह पर जाबा लगा लिया। अब मुझसे कौन बोलेगा। ऊँ ऊँ ऊँ।

लापरवाही—मैं भी इसीलिये रोता हूँ। ऊँ ऊँ ऊँ।

फूल—तब दोनों मिलकर रोइये। धत्तेरे की! मैं समझा आप लोगों की अम्मां मर गईं। (एक तरफ से गड़बड़चन्द और दूसरी तरफ से रिश्वतअली का रोते हुए आना।)

फूल—भइ वाह! यह रोने की बीमारी भी खूब चली। अच्छा आपलोग उधर रोइये और आपलोग इधर (गुपचुपलाल का इन्सपेक्टर के रूप में परेशान आना।)

गुपचुप—सी० आई० डी० के काम में न इस करवट चैन और न उस करवट। अभी तक घूसखोरों के पीछे पड़ा था और अब इन धरना देनेवाली औरतों के पीछे पड़ना पड़ा। एक औरत का मुँह बन्द किया गया तो शहर भर की सब औरतों ने जाबा लगा लिया। अजब अन्धेर है। (धांधलीराम वगैरह को देखकर) अरे। आपलोग यहाँ क्या कर्मों के नाम पर रो रहे हैं। जल्दी मिसिल लेकर दौड़िये। पबलिक आपलोगों की करतूत पर आफत मचाए है। उनको चलकर समझाइए नहीं तो डिप्टीसाहब एक एक को भून खायेंगे और जेलखाने जाइयेगा अलग।

(धाँधलीराम वगैरह एक तरफ से बदहवास भागते हैं। दूसरी तरफ से मिजाजीराम अफसोस करता आता है।)

मिजाजी—हात्तेरे तकदीर की। मुकदमे में सब रुपये उड़ गये और आज यह नोटिस मिला कि मेरा मुहकमा ही टूट गया। कहीं का न रहा। हाय करम! अब मैं क्या करूँ?

फूल—चोरी। इसके सिवाय बेकारों के लिए कोई काम ही नहीं।

गुपचुप०—क्यांजी ! इस आन्दोलन की नेता तुम्हारी ही बीबी श्रीमती अंगारादेवी हैं।

मिजाजी—इस नाम की तो मेरी ही औरत है। मगर कैसा आन्दोलन ?

गुपचुप—अभी मालूम होगा। अरे ! लड़के जरा इनकी रखवाली तो कर।

(चल देता है।)

(दूसरी तरफ से रमई और जुरमानाराम का झगड़ते आना)

जुरमाना—तू का हम गवाही बोले के लिए १) देवायन रहा। तौने में आधा नाहीं दिगो। चुप्पे खसक गयो।

रमई—और हम तुमको २) नजर देवायन रहा। तौने में तू आधा कहाँ दियो ? तू १) हमका देयो तो अठन्नी हमसे लेयो। अरे हम तू से ढेर पढ़े हन।

जुरमाना—अच्छा अच्छा हमार तोहार हिसाब बेबाक।

रमई—बेबाक कसस ? अठन्नी लाओ तो पूर होय। बिना लिए भला हम छोड़ सकित है।

जुरमाना—अरे रुको। वह देखो सिकार।

रमई—कहाँ ?

जुरमाना—वह देखो। वह लड़कवा कुछू बेचत है।

रमई—तो का भवा ?

जुरमाना—चीन्हेयो नाहीं ? अरे ! यह वही लड़कवा होय। मामा से कसर निकारे के है। (नेपथ्य की ओर) अरे ओ निस्पिटर लाइसेन्सीलाल। जल्दी आओ।

(लाइसेन्सीलाल का आना)

लाइसेन्सी—क्या है ? अरे ! आप हैं। कहिये कहिये।

जुरमाना—वह देखो तोहरे लिए सिकार ढूँढे हन। मुलआधा आधा हाँ।

लाइसेन्सी—पहले चलकर आपलोग कुछ खरीदारी कीजिये।

जुरमाना—(फूल के पास जाकर) का बेचत हौ ?

फूल—क्या लोगे ?

रमई—एक पइसा में जौन सेर दुई सेर मिले।

फूल—जाओ मुँह धो आओ। यहाँ रुपये से कम कोई चीज ही नहीं।

लाइसेन्सी—तुम्हारे पास सड़क की पटरी पर माल बेचने का लाइसेन्स है ? दिखलाओ।

जुरमाना—नाहीं तो जौन कुछ कमाए हो एहर लाओ।

रमई—नाहीं तो जेहल जाओ।

फूल—(जेब से एक लिफाफा निकालता है। उसमें से खरिया मिट्टी की बुकनी लेकर इन तीनों के मुँह पर बारीबारी फेंकता है।) लो लाइसेन्स। लो कमाई। तुम भी लो।

लाइसेन्सी—धत्तेरे की इसने तो अन्धा कर दिया। (आँख मलने के बहाने अपने मुँह पर और लगा लेता है।)

जुरमाना—रमई—हाय ! दादा हमहूं आन्धर होयगैन। (यह लोग भी वही करते हैं।)

(गुपचुपलाल के साथ अंगारा और एक कम्बल ओढ़े आदमी का आना।)

गुपचुप—क्या हुआ लड़के ?

फूल—हम तो स्कूल को मास्टरों के नाम पर रोने जाते हैं जो रोज खैंचा भर किताब और खैंची भर कापी पढ़ाने

लिखाने को मँगवाते हैं और यह लोग बीच ही में रिश्वत में मेरी दो आने की खरिया मिट्टी खा गये। देख लीजिये मुँह।

(तीनों के मुँह पकड़कर सामने करता है।)

जुरमाना—(आँख साफ करके) को आप? कनमैलिया? चौकीदार से अब दरोगा बन गयो।

गुपचुप०—हाँ तरक्की इसको कहते हैं। (कम्बल वाले से) लीजिये हुजूर (जेब से निकाल कर) घूसखोरों की फेहरिस्त जिसमें (जुरमानाराम को बता कर) इनका नाम सबसे अव्वल है। और यही औरतों के आन्दोलन के भी मुख्य कारन हैं। और इनके अलावे यह दोनों मिंया बीबी।

जुरमाना—कमरी वालो तोहरे साथ है? यह के होय? (कम्बल हटाता है।) अरे बाप रे बाप! सोभे बड़े साहब और वह डिप्टियो आवत हैं। बिलाय गयेन।

(इन्तजामअली का आना)

(बड़े साहब फेहरिस्त देखते हैं।)

रमई—(जुरमाना राम से) अच्छा ढेर न रोओ। अब चुपचाप रहो। हम तूका पहिलावे कहा रहा कि तुहें हाकिमी नाहीं छाज सकत है। अरे कहूं साबुन लगावे से गदहा घोड़ा थोड़े न बन सकत है। कहो भाई।

बड़े साहब—लीजिये डिप्टी साहब (फेहरिस्त देकर) यह मामला आपके सुपुर्द किया जाता है और अब बताइये इस आन्दोलन को और पबलिक को किस तरह शान्त किया जाये।

फूल—मैं बनाऊँ ? (मिजाजी राम की तरफ) बेकारी ने इधर सारी गर्मी ठंढी कर दी और जावे ने उधर (अंगारा की तरफ) सारी कड़आहट चूस ली। इसलिए आप इनको दीजिये नौकरी और डिप्टी साहब आप उनके मुँह पर से हटाइये जावा (इन्तजाम अली जावा हटाते हैं) और मैं इन दोनों के हाथ मिलवाकर फिर आदमी बनाए देता हूँ। इस तरह।

बड़े साहब—शाबाश लड़के शाबाश !

फूल—शाबाशी पीछे दीजियेगा। (अपनी बहंगी बता कर) पहले इस गदहे का बोझ तो कम कीजिए, जिसके मारे खाने तक को रुपया नहीं बचता और बेकार लादते लादते मरा जाता हूँ।

बड़े साहब—हाँ हाँ जरूर।

फूल—वाह ! तब तो बड़े साहब की जय ! बड़े साहब की जय।

बड़े साहब -बेटे तुम्हारा नाम क्या है ?

फूल—फूल।

बड़े साहब—बोलो फूल बाबू की जय। फूल बाबू की जय।

फूल—(गाता है) "ज़माना रंग बदलता है, ज़माना रंग बदलता है।

पटाक्षेप

— —

हाकिम

पात्र

१ डिप्टीराम - एक अधेड़ और मूर्ख निकाले हुए हाकिम।

२ चपरकनातीलाल—डिप्टीराम के मुन्शी।

३ भोंदू } डिप्टीराम के अरदली और हरवाह।
४ बुद्धू }

५ कुँवर } डिप्टीराम के बच्चे।
६ मुनमुन }

७ छोकड़ा—डिप्टीराम का नौकर।

८ महरिन—डिप्टीराम की नौकरानी।

———

हाकिम

दृश्य—१

डिप्टी अललटप्पू राम की बैठक

(महरिन एक हाथ में झाड़ू लिये और दूसरे हाथ से भोंदू का कान पकड़े और भोंदू एक छोकड़े का कान पकड़े, इस तरह तीनों आते हैं)

महरिन—(भोंदू से) मलकिन बिगड़ रही हैं कि अब तक बैठक में झाड़ू क्यों नहीं लगी।

भोंदू—(छोकड़े से) मलकिन बिगड़त हैं कि अब तक बैठक में झाड़ू काहे नाहीं लाग।

महरिन—(भोंदू को झाड़ू मारकर) फिर नहीं सुनता। (झाड़ू देकर) ले झाड़ू लगाव।

भोंदू—(छोकड़े को झाड़ू मारकर) ले झाड़ू लगाव (झाड़ू देता है।)

छोकड़ा—हम ऊपरी काम के नौकर हन। हम झाड़ू बहारू नाहीं कर सकित है। (झाड़ू वापस करके) लेयो झाड़ू तू लगाओ।

भोंदू—अरे! हम अरदलीहन, बीचवाला काम हमार है। खाली झाड़पोंछ वाला काम कर सकित है। झाड़ू बहारूवाला काम बहुत नीच है। यह तोहार काम है महरिन, लेयो झाड़ू तू लगाओ। (झाड़ू वापस करता है।)

(पेशकार का आना)

पेशकार—जी बजा है। क्या नाम के! नीच काम-क्या नाम के—पाताल लोक यह ले भागी। और ऊपरी काम-क्या नाम के-आकाश यह ले उड़ा। बीचवाला काम-क्या नामके-पृथ्वी यह छाप बैठे। और हम मुंशी होकर कहाँ गये जहन्नुम में। पाजियों चलो इजलास लगाओ, वक्त हो गया। सरकार आते होंगे।

भोंदू—अरे। रुको मुन्शी जी। तनि यहू कनवा पकड़वा लेई। भल नीक लागत है। जाने गुसइयाँ, न विश्वास हो तो तुहूँ आपन कनवा पकड़वाके देख लो।

(महरिन भोंदू को झाड़ू मारकर चल देती है। छोकड़ा भाग जाता है।)

मुन्शी जी—(मेज के पास कुर्सी पर बैठे मिसलें उलटते हुए)

हाकिम से पहले आए सिपाही पुकार को।
यानि कि चल के राजी करो पेशकार को॥

हमारे अललटप्पूराम भी क्या चीज हैं। रस्सी जल गयी मगर ऐंठन न गयी। डिप्टी कलक्टरी से हाथ धोया। आनरेरी मजिस्ट्रेटी से हटाए गये। फिर भी डिप्टी कलक्टरी की बू नहीं जाती। खैर वह सेर भर हैं तो मैं भी सवा सेर हूँ। अगर आज अपनी तनख्वाह के कुछ रुपए वसूल न किये, तो मैं भी हाँ—वह आ रहे हैं।

(डिप्टीराम छोकड़े के सर पर फर्शी रखाये सटक पीते हुए आते हैं।)

डिप्टी—अयं एकदम सन्नाटा। जब मैं डिप्टी कलक्टर दर्जा अव्वल था तब मेरे सरिश्तेदार मुन्शी खुराफातहुसेन इजलास को इतना गर्म रखते थे कि जब तक मैं दो-चार को कान पकड़कर बाहर निकलवा नहीं देता था तब तक

मैं कुर्सी पर बैठता न था। और एक आप हैं मुंशी चपरकनातीलाल की ऐसी मनहूसियत फैलाए हैं कि यहाँ उल्लू बोल रहा है।

मुन्शी—जी बजा है।

डिप्टी—उस पर जी बजा है। न जाने किस उल्लू ने तुम्हें मेरा सरिश्तेदार बनाया है।

मुन्शी—हुजूर आपने। देखिए जब आप असली हाकिम क्या नाम के सरकारी डिप्टी कलक्टर थे तब मैं आपके इजलास का अलहमद था। जब आप नकली हाकिम क्या नाम के आनरेरी मैजिस्ट्रेट हुए तब सरकार ने मुझे सरिश्तेदार बनाकर आपके पास भेज दिया और जब आप खुदरौ आपही आप यानी हाकिम क्या नाम के हाँ 'होममेड' मैजिस्ट्रेट बन गये तो हुजूर ने मुझको अपना सरिश्तेदार बना लिया।

डिप्टी—अच्छा-अच्छा बको मत। सरकार ने अपनी मजिस्ट्रेटी का खात्मा किया तो किया. मैंने तो नहीं किया। ऐसे अपाहिज और होंगे जो जन्म भर दूसरों के मुहताज रहें। मैजिस्ट्रेटी तो मेरी घुट्टी में पड़ी है। वह भला किसी के छुड़ाये छूट सकती है। दूसरों के मुकदमें न सही, अपने घर के मामलात तो फैसल कर सकता हूँ।

मुन्शी—जी बजा है क्या नाम के—

डिप्टी—तुम्हारा सर। अजब आदमी हो। हाकिम की बात पूरी भी नहीं हुई और बीच ही में लगे करने—क्या नाम के—क्या नाम के, हाँ क्या कह रहा था?

मुन्शी—आप हुजूर, क्या नाम के—

(डिप्टी सटक छोड़ देते हैं। छोकरा उनकी छड़ी उलटकर रख देता है और फर्शी लेकर चला जाता है। डिप्टी धोखे से छड़ी को मुँह में लगाते हैं।)

डिप्टी—अरे! अरदली कहाँ? अब तक नहीं आया। अजब आदमी हो, ताकता क्या है? अजी अरदली की मिसिल निकालो और देखो कि उसमें उसके इतने वक्त तक न आने की कोई वजह है या नहीं। जब मिसिल मौजूद है तब उसे पढ़ते क्यों नहीं। बिना अरदली के इजलास कैसे गरम हो सकता है।

मुन्शी—जी हाँ, क्या नाम के मिसिल नम्बरी ६ सन् ५० रिपोर्ट सरिश्ता—आनरेरी मैजस्ट्रेटी के खातमें पर सरकारी अरदली हटा लिये जाने से मौजूदा इजलास के लिए एक अरदली की जगह खाली है। हूँ! क्या नाम के, हुकुम हाकिम—फौरन एक अरदली की जगह के लिए दरख्वास्तें पेश हों, जो घर का काम भी हस्ब मामूल करता रहे और इजलास के वक्त अरदली का आनरेरी काम भी करे। हूँ! हूँ! क्या नाम के कारवाई सरिश्ता घिरहू और निरहू हरवाहों की तरफ से दरख्वास्तें दिलायी गयीं। मगर उन पर अँगूठा लगाने के डर से दोनों हरवाही छोड़कर भाग खड़े हुए। बहुत कोशिशों पर भोंदू और बुद्धू हरवाही को राजी हुए। उनकी दरख्वास्तों पर हुकुम हुआ। हूँ! हूँ! क्या नाम के, हुकुम हाकिम—दोनों दरख्वास्तें इस शर्त पर मंजूर की जाती हैं कि दोनों पारी-पारी इजलास के वक्त अरदली का भी काम करें।

डिप्टीराम—तो आज किसकी बारी है? फिर मेरा मुंह देखने लगे। अजी मेरे मुंह पर नहीं लिखा है। मिसिल में देखो,

मिसिल ली। आखिर मिसिल है किस दिन के लिए। एक पैसे की दियासलाई लगाने तक की तो मिसिल मैंने खोल रखी है, फिर भी तुम मिसिल से काम लेना नहीं जानते हो। अजब आदमी हो।

मुन्शी—जी हाँ जी हाँ बताता तो हूँ। हूँ! क्या नाम के, इसमें जरा दिन और तारीखों का हिसाब लगाना पड़ेगा। जब तक क्या नाम के, हुजूर कुछ दरख्वास्तें बहुत जरूरी हैं, उन पर हुकुम हो जाना चाहिए।

डिप्टीराम—अच्छा पेश करो।

मुन्शी—एक तो हुजूर क्या नाम के, मेरी ही दरख्वास्त है, बहुत जरूरी है। हूँ! हूँ। क्या नाम के, गरीब परवर सलामत, जनाब आली, सायल को मौजूदा इजलास में सरिश्तेदारी करते पंद्रह रोज हो गये और अब तक सायल की तनख्वाह के बारे में कोई हुकुम सादिर नहीं हुआ। कल होली है, और सायल को खर्च की बहुत सख्त जरूरत है। लिहाजा जरिये दरख्वास्त हाजा कुछ रकम पेशगी... ...

डिप्टीराम—ठहरो। लिहाजा जरिये दरख्वास्त हाजा बमोजिब किस दफा के—अजब आदमी हो। दरख्वास्त पढ़ते हो और दफा पढ़ते ही नहीं।

मुन्शी—दफा?

डिप्टीराम—हाँ दफा। बिना दफा के कहीं कोई दरख्वास्त हाकिम के समझ में आ सकती है, इतना भी नहीं जानते? अजब आदमी हो। तब तुम सरिश्तेदारी क्या करते हो, अपना सर।

मुन्शी—हूँ! हूँ। मगर हुजूर क्या नाम के, ऐसी दरख्वास्तों के लिए कोई दफा तो है ही नहीं।

डिप्टीराम—साढ़े पांच सौ दफायें जाब्ता फौजदारी में और करीब-करीब उतनी ही ताजीरात हिन्द में। इनके अलावे सैकड़ों दफाएँ एक्ट म्युनिसिपल्टी, एक्ट मवेशी, एक्ट आबकारी वगैरह में हैं। फिर भी तुम्हारी इस जरा सी दरख्वास्त के लिए कोई दफा नहीं है। वाह! ऐसा भी कहीं मुमकिन है? बस, बस, लिखो हुक्म—दरख्वास्त हाजा कानूनन नामुकम्मिल है। बगरज दुरुस्ती सायल को वापस की जाती है। बाद दुरुस्ती हमराह मिसिल तारीख आइंदा पर मय सबूत के पेश हो। फिर मेरा मुँह देखने लगे? अजब आदमी हो। अभी हुक्म लिखकर झटपट दस्तखत करा लो, नहीं अभी हाकिम उठ जायगा। बस हुक्का ऐसा मुंह लेकर रह जाओगे।

मुन्शी—हुजूर कल होली है। क्या नाम के, बिना खर्च के.....

डिप्टीराम—हुकुम हो जाने के बाद बहस बेकार, बिल्कुल बेकार। अगर बहस ही करना है तो तजबीज सानी की दरख्वास्त दो और तारीख पेशी पर वकील लाकर खूब बहस कराओ। मगर बेजाब्ता काररवाई अदालत कुछ नहीं कर सकती, चाहे तुम्हारा मामला हो या मेरा। हाँ।

(कुँवर और मुनमुन का आना)

कुँवर—पिताजी, पिताजी। जरा जल्दी से चार पैसे दे दीजिए। बड़े अच्छे अमरुद बिकने आये हैं। माताजी के पास पैसे नहीं हैं। इसलिए उन्होंने आपके पास भेजा है।

मुनमुन—हाँ पिताजी जल्दी दे दीजिए। नहीं अमरूदवाला चला जायगा।

डिप्टी—मुन्शीजी फौरन चार पैसे के लिए दरख्वास्त लिखकर मन्जूरी कराओ।

मुन्शी—मगर मगर-क्या नाम के बेजाब्तगी हो जायगी। हुजूर, सवालजवाबी का वक्त खत्म हो गया।

डिप्टी—तो फिर मजबूरी है।

मुन्शी—जी हाँ हुजूर। आज किसी तरह भी क्या नाम के दरख्वास्त पेश नहीं हो सकती।

कुँवर—अच्छा मुन्शीजी! अभी जाकर माता जी से कहता हूँ।

(दोनों जाते हैं)

मुन्शी—देखिए हुजूर आपके कुँवरजी अदालत अपील की धमकी दे गये। मगर क्या किया जाय। जाब्ता तो जाब्ता। चाहे, आपका मामला हो या मेरा।

(भोंदू का दौड़ते हुए आना)

भोंदू—(हाँफते हुए)—बाबू साहब, अरे ओ बाबू साहब। एक जने टेसन से एक्का पर लदा-फँदा आए हैं तौन.....

डिप्टीराम—चुप बदमाश! मुन्शी जी, तुम्हारी ही सिफारिश पर इस भोंदुआ को अरदली का काम सौंपा गया है, और यह ऐसा लापरवाह है कि अब तक यह गैरहाजिर रहा और आया भी तो अदालत को बाबू साहब कहकर पुकार रहा है। अदालत की ऐसी तौहीन? इसके लिए इसके साथ तुमसे भी क्यों न जवाब तलब किया जाय?

मुन्शी—क्या नाम के, यह अभी गंवार है, मैं समझाए देता हूँ। अरे बेवकूफ! अदालत से कहीं बाबू साहब कहा जाता है? 'हुजूर आली' कहा कर, हुजूरआली।

भोंदू—हुजूर गाली ? कौन सार कहत है ? नहके दोष न लगाओ मुन्शीजी, हम हजूर गाली नहीं दीन है ।

मुन्शी—अबे हजूर गाली नहीं, क्या नाम के, हुजूर आली ।

भोंदू—हाँ, हाँ, सुनेन हो नहिर नाहीं हन ।

मुन्शी—अच्छा तो एसे अच्छी तरह याद कर ले । जब अदालत से तुझे कुछ कहना या जवाब देना हो तो हमेशा हजूर आली कहकर बोला कर ।

भोंदू—हजूर गाली देके बोली ? वाह मुन्शीजी, खूब सिखावत हौ । जेहमा मारा जाई ।

डिप्टीराम—पाजी कहीं का । अभी जुरमाना कर दूँगा, मिजाज ठिकाने हो जायगा ।

भोंदू—जरिमाना कसस होई ? गारी कै कौनो बात हमरे मुंह से निकसा होय तब तो ?

डिप्टीराम—मुन्शीजी, उल्लू की तरह तुम फिर ताक रहे हो ? इस बेवकूफ के कान पकड़कर समझाते क्यों नहीं ।

(मुन्शीजी कुरसी खिसकाते हुए उठते हैं)

भोंदू—हां, हां, मुन्शीजी नर्गाचे न आओ । हरी बेगारी कै दिन गवा जब हम सभे चुप्पे गारी-मार सह लेत रहेन ।

मुन्शी—तो बेवकूफ, हूँ, हूँ । क्या नाम के, तू सीधी तरह क्यों नहीं समझ लेता कि अदालत में तुम्हें किस तरह बोलना चाहिए ? देख, तू अरदली है । जब अदालत में, क्या नाम के, कुछ बोलना पड़े तो सबसे पहले तुझे कहना चाहिए—हजूर आली । गाली नहीं आली, आली ।

भोंदू—अब जानेन, फिर कहो तो जेहमा बिसर न जाय ।

भोंदू—हजूर आली ।

भोंदू—एक दाईं आउरु ।

मुन्शी—हजूर आली। इसे खूब याद कर ले। आली हां। क्या समझे...

डिप्टीराम—अजी मुन्शीजी, क्या नाम के, पीछे करना। पहले उसकी मिसिल निकालकर इससे जवाब तलब करो कि, इतनी देर तक क्यों गैरहाजिर रहा ?

मुन्शी—जी हां, हजूर, हूँ, हूँ। क्या नाम के, हां अरदली..... अरदली, अरे बोलता क्यों नहीं ? फिर नहीं सुनता ? .....अरदली !

भोंदू—घोखित तो है हो ! मरा काहे जात हो, जानो हम बिसर गयन ?

डिप्टीराम—अबे सीधे-सीधे क्यों नहीं जवाब देता। बक-बक क्यों करता है ? अभी तौहीन अदालत का मुकदमा कायम हो जायगा तो.....

भोंदू—अच्छा कहो, हजूर आलू का कहत हो ?

डिप्टीराम—धत्तेरे की !

मुन्शी—अरे ! आलू नहीं आली ! आली !

भोंदू—आली ? गवनई वाला आली ? अरे ! अस काहे नाहीं कहो ? आ हा हा हा ! अरे एका तो हम खूब जानित है ! सुन लेवो, तू हूं का कहियो।

(ताली बजाकर नाचता है और गाता है।)

ठुमुकि ठुमुकि चलो न आली।
भाग चलो हाली हाली !
हां, चमके बिजुरिया गर्जे बदरिया।
छाई घटा काली काली।

डिप्टीराम—क्यों बे नालायक, यह इजलास है या भठियारी की सराय, जो तू यहीं ताली बजा बजाकर नाचने और

गाने लगा ? मुन्शीजी, देखते क्या हो ? इस बेहूदे का फ़ौरन बयान कलमबन्द करो कि इसने क्यों इतनी देर लगाई अभी सारी मस्ती भुलाये देता हूँ।

भोंदू—बहुत अच्छा मोरी आली ? नाहीं नाहीं, हजूर आली। लिख लीन जाय। हम का करी, एक जने टेसन से इक्का पर लदा-फँदा आये और कहिन की हम बाबूजी के बहनोई होई। हम कहा कि तू हियैं अभी चुप्पे ठाढ़ रहौ, बाबूजी इजलास करत हैं। यह साइत एक नहीं तोहरे अस उनके बहत्तर बहनोई आय जांय तो हुंवां कोई जाय नहीं सकत है। यही लिए तो हम अरदली बनाये गयन हैं .....

डिप्टीराम—अरे। क्या मेघनाथ बाबू आये हैं ? हां, हां, आये होंगे। कल होली है न।

भोंदू—हां हां, यही नाव बताइन है और फुर मेघा अस हैइयां हैं। उन्हीं के राके मां तो हमका एतिक देर लाग। नाहीं हियां अब तक वै फाट न पड़ते।

डिप्टीराम—तो तूने अब तक क्यों नहीं बताया, बेवकूफ ?

भोंदू—यही बतावे तो हम दौड़ा आयन रहा ! मुदा हम का करी। यही मुन्शीजी तो हमका, आली का पहाड़ा तोता अस पढ़ावे लागे। यह नाहीं जानिन कि आली के बीसन गवनई हमका याद हैं। न बिश्वास पड़े तो लो दुटप्पी और सुन लेवो।

गाना—

केहिते कहूँ आली जियरा का दुखड़ा,
जियरा का दुखड़ा।
सासु मोरी कटही, ननद मोरी फटही,
कैसे सहूँ आली निस दिन का झगड़ा।
हरदम का रगड़ा॥

डिप्टीराम—चुप! चुप! चुप! पाजी—बदमाश सुअर कहीं का। कहाँ राम राम और कहाँ टेंटे। जाओ बहनोई साहब को खूब ख़ातिर से बिठालो और पान पत्ता के लिए उनके सामने ख़ासदान ले जाकर रख दो।

भोंदू—कौन चीज ?

मुन्शी—अबे, ख़ासदान। ख़ासदान। सामने ही तो रखा है।

भोंदू—हाँ, हाँ, समझ गयन। उनके सामने न रखब। बहनोई हैं न, ठीक बतायो। ऐसै चाही।

मुन्शी—और सुन, बुद्धू अरदली को ढूँढ़ कर फौरन यहाँ भेज देना।

(भोंदू जाता है)

डिप्टीराम—मुंशीजी अब जल्दी करो। आये हुए मेहमान के नाम पर झट एक मिसिल कायम करने के लिए लिखो रोबकार—चूँकि बजरिये भोंदू अरदली अभी इत्तला मिली है कि—

(बुद्धू अरदली का आना)

बुद्धू—हमका काहे बुलायो सरकार ? आज अरदली वाले काम के हमार पारी न होय !

डिप्टीराम—कौन बुद्धू अरदली ! बारी है या नहीं इससे तुझसे क्या मतलब ? बस चुपचाप खड़ा रह। हाँ मुन्शीजी कहाँ तक लिखा ?

मुन्शी—इत्तिला मिली है कि हजूर आली के बहनोई साहब तशरीफ लाये हैं।

डिप्टीराम—अजब आदमी हो मुन्शीजी। तुम्हें इतनी अकल नहीं कि अदालत के कभी भाई-बन्धु या बहन-बहनोई नहीं होते। ताकत क्या हो ? हजूर आली को काटकर

मेरा नाम लिखो—डिप्टी अललटप्पू वल्द कलक्टर चपरगट्टूराम और उसके बाद लिखो कि मेहमान के जलपान वगैरह मँगाये जाने के लिए मुनासिब हुक्म सादिर फरमाया जाय।

मुन्शी—और हूँ, क्या नाम के. दफा कौन दर्ज की जाय ?

डिप्टीराम—सीगे मुतफरकात, अजब आदमी हो। इतना भी नहीं जानते।

मुन्शीजी—ओ हो हो हो ! हजूर ने खूब बताया। क्या नाम के बस-बस यही दफा तो मेरी दरखास्त की है।

डिप्टीराम—अजब आदमी हो, पहले इसे तो मुकम्मिल करो, फिर अपनी दरख्वास्त की फिक्र करना।

मुन्शी—तो क्या नाम के, इस पर सरिश्ते की काररवाई तो खत्म कर लूँ ! क्या नाम के बमौजिब रूबकार मिसिल नम्बरी ५१ सन ५० कायम होकर बगरज हुकुम अदालत बाबत मँगाये जाने जलपान वास्ते बहनोई साहब मए सबूत के अगले शुक्रवार बतारीख १० मार्च को पेश हो।

डिप्टीराम—यह क्या ?

मुंशी—हजूर जाब्ते की काररवाई में, क्या नाम के, बिला सबूत के कोई हुकुम हो नहीं सकता और सबूत के लिए तारीख का करना जरूरी है।

डिप्टीराम—और सात दिनों तक बहनोई साहब, जलपान के बदले हवा खायेंगे ?

मुन्शी—जी हाँ खायेंगे ही। जाब्ता तो सबके लिये एक है। मेरी दरख्वास्त पर भी ! क्या नाम के, तारीख करने का ऐसा ही हुआ है; हालांकि कल त्योहार है।

डिप्टीराम—जरा जाब्ता फौजदारी तो उठाना। रहने दो, याद आ गया। अगर सबूत हाजिर हो तो सरकारी कारवाई में तारीख करने की कोई जरूरत नहीं। सबूत में बस, उसी भोंदू अरदली का झटपट बयान ले लो।

मुन्शी—तब तो हजूर, क्या नाग के, मेरी दरख्वास्त पर भी.....

डिप्टीराम—अजब आदमी हो। पहले इससे तो निबटने दो।

(भोंदू का दौड़ते हुए आना)

भोंदू—अरे मेरी आली, नाहीं हजूर आली—

डिप्टीराम—यह क्या बेहूदापन ? तरी गवाही होने वाली है और तू बिना बुलाये अदालत में कैसे हाजिर हो गया ? चल बाहर खड़ा हो। नहीं नहीं, बकबक मत कर। बस, चुपचाप बाहर चला जा।.....हाँ मुन्शी जी, वह बाहर गया, अब उसकी पुकार कराओ।

मुन्शी—बुद्धू अरदली !

बुद्धू—का होय।.....नाहीं नाहीं बिसर गयन। हाँ हजूर।

मुन्शी—बाहर जाकर खूब चिल्लाकर तीन दफे पुकारो कि भोंदू अरदली कोई हाजिर है ?

बुद्धू—बहुत, अच्छा ! (बाहर जाकर) भोंदू अरदली कोई हाजिर है, एक भोंदू अरदली कोई हाजिर है दुइ। भोंदू.....

भोंदू—(बाहर) धत्तेरी मेहरा की। आंधर हो, जानौ हमका देख नाहीं पावत हो ? मूड़े पर हम ठाढ़ हन औरु नहकै हमार नाव ले के अललात है, जेहमा सुनइया लोग जाने कि हम कहूँ चला गयन है। मारत-मारत.....।

बुद्धू—(दौड़कर भीतर आते हुए) देखो हजूर पुकारे नाहीं देत है। सार टर्राल है।

भौंदू—(पीछा करते हुए) अब आयो हियां, अपने बाप से चुगली करं ? हमहूँ पहुँच गयन । कहो सरऊ का कहत हो ?

बुद्धू—जब तक नाहीं बोलित है तब तक मूड़े पर चढ़ा आवत हो । आओ सार का तू से नीबर हन ?

डिप्टीराम—अरे ! अरे ! पाजियों, यह कौन सी आफत मचाई । हाय ! हाय ! मेज उलट गयी ! ओ मुन्शीजी, अजब आदमी हो ! इन कमबख्तों को हटाओ ।

मन्शी—अरे हजूर अपनी जान बचाइये, जान ! क्या नामके मेरी तरह आप भी कोने में दुबक जाइये । अरे भाई, लड़ाई अब बन्द करो ।

डिप्टीराम—हाय ! हाय ! तमाम मिसिल फटी जा रही है । अरे मुन्शी जी ताकते क्या हो ? एक को पकड़ कर तुम खींचो, और एक को मैं ।.....अरे बाप रे बाप । यह साला तो मुझी पर फट पड़ा । उफ् ओ ! कमर भचक गयी । हाय !

मुन्शी—अरे हजूर दौड़िये । क्या नाम के, मैं भी दब गया । यह पाजी मेरे ऊपर से उठता ही नहीं । हाय ! हाय ! मर गया !

बुद्धू—(मुन्शी पर बैठा हुआ) हम का करी, ये ही तो हमका एहर ढकेल दिहिस.....

मुन्शी—अबे पहले मेरे ऊपर से उठ तो.....उफओ ।

भौंदू—(डिप्टी पर बैठा हुआ) तू ही न्याय करो मुंशी जी ! यह सार पहिले हमें मारे काहे दौड़ा ?

डिप्टीराम—आह ! आह ! अरे कमबख्तों, बहस बाद को कर लेना । पहले ऊपर से तो उठ । (दोनों अरदली चौंक कर उठते हैं) ।

मुन्शीजी—अरे हजूर को उठा लो, उठा लो, जल्दी उठाओ, नहीं तो तुम दोनों जहन्नम भेज दिये जाओगे।

डिप्टीराम—उफ ओ। मैं तो समझा कि मैं बिल्कुल मर गया।

भोंदू—हजूर हमार कौनो कसूर नाहीं.....

डिप्टीराम—अबे चुप! जरा दम लेने दे तो बताता हूँ।...मुंशी... पहले जल्दी से इसका...इतना....बयान ले लो कि.... मेरे बहनोई साहब आये हैं, तब उसके बाद इस पाजी...।

भोंदू—अब अपने बहनोई की फिकिर कुछ न करो। वे लौट गये। यही बतावै तो हम रपटा आवत रहेन।

डिप्टीराम—लौट गये?

भोंदू—हाँ मोर आली, नाहीं हजूर आली। वही एक्का पर जस आये रहा तस लौट गये। हम उनके आगे एक गट्ठर नरम-नरम घास डार दीन और एक बाल्टी दाना रख दीन। और कहा कि तू बहनोई हो, मजे से यहिका खाओ, हजूर आली भेजिन हैं। वइसे वै अस रिसिआने जैसे मानो बरइया छेद दिहिस। कहिन कि जिहिके हियां घंटन बाहर ठाड़ि रहे के पड़े और खाय के मिले दाना और घास, वहि सारे के हियां हम अब कब्बौ भूलसे न अइबे।

डिप्टीराम—अरे बेवकूफ! उन्हें घास-दाना क्यों दे आया?

भोंदू—आप तो कहिन रहा कि उनके आगे घास-दाना रख आओ, बहनोई रहे तब्बे सो।

डिप्टीराम—घास-दाना?

मुन्शी—ओ हो ! अब समझा । क्या नाम के खासदान को यह घासदाना समझ गया ।

भोंदू—हाँ, हाँ और आपो तो यही कहेन रहा । देखी हजूर आली, हमार बात फुर निकसी न ?

डिप्टीराम—हाय गजब ! यह क्या हुआ ! अरे मुन्शी जी ताकते क्या हो ? बताओ अब क्या किया जाये ? कुछ मुँह से बोलो ।

(महरिन का आना)

महरिन—(चाभी का गुच्छा सामने फेंक कर) सरकार कुँवरजी का पैसा न मिले के कारन मलकिन कुँवरजी का लैके मयके चली गयीं । और यह घर के चाभी पठै दिहिन है ।

डिप्टीराम—हाय ! हाय ! यह दूसरा गजब । अरे मुन्शी जी बोलो बोलो ! अब क्या करें ?

मन्शी—भोंदू का हलफ से बयान लेकर, क्या नाम के, मिसिल दाखिल दफ्तर फरमाई जाय ताकि इजलास की कार्रवाई तो किसी तरह खत्म हो ।

डिप्टीराम—चूल्हे में जाय मिसिल और भाड़ में झोंको अब इजलास को ! दौड़ो सबके सब स्टेशन और जल्दी से किसी तरह बहनोई साहब और मलकिन साहबा को मनाकर ले आओ, नहीं तो हम अब दुनियाँ में फिर मुँह दिखाने लायक न रहेंगे ।

(पटाक्षेप)

हजामत

पात्र

१. तीसमार खां—एक घमन्डी दारोगा

२. कल्लू—एक बुड्ढा चौकीदार

३. बटेरखाँ—एक नौजवान कॉन्सटेबिल

४. नाऊ

५. मुनुआ—तीसमार खां का छोटा लड़का

६. दिलारा—तीसमार खां की स्त्री

७. रमझारी—धोबिन की लड़की

हजामत

दृश्य १

दारोगा तीसमार खां का मकान

(कल्लू चौकीदार का बड़बड़ाता हुआ आना)

कल्लू—आजौ कौनो ससुर नाऊ आवे के लिये नहीं राजी भवा—दारोगाजी के करम में डाढ़ी मुड़ावे के बदे नाहीं है—हमार कौन दोस ? यही लायक हैं—इनके आगे मनई के कहे, कुकरो नहीं ठाढ़ होत है—चौकीदारी करत हमरो उमिर बीत गइ—न जाने कितने दारोगा आये आउर गए मुल दादा ! इनके अस कौनो नाहीं रहे—अउर तो अउर ! इनके बाप भंदार अली यही थाना के मुन्सी रहे तौनो अस आफती नाहीं रहे—वे बेचारे हमका कल्लू भइया छोड़, कबौ दूसर लबज नाहीं कहिन—जब हुक्का पिए लागें तो सबसे पहिले चिलम हमहीं का सुलगावे का देत रहे—अउर उनके पूत, जेहका हम कनैठी देत रहेन, तौन दरोगा होते हमहीं का जब सूअर-गदहा कहे लागे, तब हद होई गवा ! ऊ तो कहा हम इनके नस पहिचानित है, अउर बड़े हिकमत से चलित है—जेसे, आबरू बच जात है, नहीं तो अब ताईं नोच खाते—बस निबरे के मारे जानत हैं—करारे के नगीचे नहीं जात हैं—नाव तो आपन तिसमार खाँ रक्खे हैं, मुल चोर बदमास के

देखत इनका जड़ी आवत है--अउर तेहा दिखावत हैं केह पर, जेहकर बापो कब्बों कोई पर हाथ न उठाइस हो--एही लोगन के बाँधत--पकड़त हैं--एही से आज कल इनके मन अउरो बहक गवा है--वह लो--पैठत आवत हैं, जानो फुरे तीसमार खाँव है !! समनवा से डोल जाई, नाहीं एह साइत गर्मियान होइहें, देखते हमका हजार गारी देइहें--

(जाता है)

(दूसरी तरफ से दारोगा तीसमार खाँ का परेशान आना)

तीसमार खां—इन हरामियों के मारे खाना, पीना, सोना सब हराम है--रोज ही दस बीस का सर तोड़ता हूँ और दस-बीस को पकड़ कर जेलखाने भेजता हूँ, फिर भी जहाँ पीठ मोड़ी तहाँ फिर वही आवाज गूँज उठती है (चिल्ला कर)--"शराब पीना हराम है--विदेशी माल लेना हराम है .....

मुनुवा—(मकान से बाहर आकर) अब्बा जान आप हैं ? अले आप बी हलामी हो गए ? छचमुच ? (ताली बजाता हुआ) बाह ! बाह ! अब्बा हलामी अब्बा हलामी ।

तीसमार खां—अबे ! अबे !! अबे !!! यह क्या ?

मुनुवा—लहने दीजिये--मैंने छुन लिया है । आप बी हलामी हैं ।

तीसमार खां—क्यों बे बदमाश मैं हरामी ?

मुनुवा--पक्के हलामी-मैंने छुन लिया है--हाँ हाँ मैंने छुन लिया है--आप अबी कहते थे छलाब पीना हलाम ! बिदेछी माल लेना हलाम !! जो हलाम कहे हलामी--अब्बा हलामी--(ताली बजा कर) बाह-बाह ! अब्बा हलामी !!

तीसमारखाँ—(मुनुवा का कान पकड़ कर) चुप बदमाश ! फिर नहीं मानता ।

मुनुवा—(रोता हुआ) अले ! अले ! अले ! जो हलाम-हलाम चिल्लाते हैं, उनको तो आप लोज ही हलामी कहते हैं—मगल आप का कान कोई नहीं ऐंठता—हमाला काहे ऐंठते हैं ? ऊँ ऊँ ऊँ—आप बले खलाब हलामी हैं ।

तीसमारखाँ—लाहौल बिलाकुवत । इस दलील का मन्तक में भी जवाब न होगा—अच्छा चुप रह—चुपरह—ले एक पैसा ले और खबरदार ऐसी बात फिर मत कहना ।

मुनुवा—(पैसा लेकर) ओ हो ! तब तो आप बले अच्छे हलामी हैं—क्यों अच्छा ?

तीसमारखाँ—(मारने को झपटता हुआ) फिर वही बेहूदापन ?

(मुनुवा भाग जाता है)

तीसमारखाँ—(अकेला) जाने दो—गलती की, जो मैंने इसे पैसा दिया—मुझे मारना चाहिए था—खैर । चौकीदार ! चौकीदार... साला जवाब तक नहीं देता—यह कम्बख्त पुराना नौकर क्या है, अपने को लाट साहब समझता है—चौकीदार !... ..

कल्लू—(पर्दे के पीछे से) आयन हजूर ! तनी पगिया बाँध लेई ।

तीसमारखाँ—उफ ! ओह ! इसकी गुस्ताखी से नाक में दम है—मैं तो चीख रहा हूँ और साले को पगड़ी बाँधने की पड़ी है—चौकीदार !

कल्लू—(पर्दे के पीछे से) आयन-आयन हजूर-थोड़े अउर सबुर करीं।

तीसमारखाँ—रह निमकहराम-आज तेरी सारी गुस्ताखी का मजा चखाता हूँ-(गुस्से में आता है-उसके बाद कल्लू जल्दी-जल्दी चिलम पीता हुआ भागता आता है और उसके पीछे तीसमारखाँ मारने को झपटता हुआ आता है।)

तीसमारखाँ—(पीछा करता हुआ) क्यों बे सुअर के बच्चे! तू चिलम पीता था या पगड़ी बाँधता था ?

कल्लू—(भागता हुआ) आपसे के कहिस रहा कि आप हमरे कोठरी में घुसूर के देखी कि हम चिलम पीइत है ?

तीसमारखाँ—और ऊपर से जबान लड़ाता है-ठहर तो जरा हरामी के पिल्ले।

कल्लू—(भागता हुआ) गरियावे के मन होय बइसे गरियाए लेओ-मुल नगीचे न आयो-नाहीं कहूँ हमरे हाथ से चिलम छूट जाई तो आपे के देहियाँ बरे लागी।

तीसमारखां—(रुक कर) अररररर-अच्छा चिलम फेंक दे।

कल्लू—(रुक कर) बहुत अच्छा हजूर (जिधर तीसमारखाँ खड़ा होता है उसी तरफ फेंकने का इशारा करता है)

तीसमारखां—अरे ! अरे ! इधर नहीं (भागकर दूसरी तरफ जाता है)

कल्लू—अच्छा तो ऐसी सही—(अब दूसरे तरफ फेंकना चाहता है)

तीसमारखां—अबे-बे ..बे...इधर नहीं-जल जाऊँगा—

कल्लू—आपे तो यहर-ओवर नाचित है हजूर-हम तो आपके घुड़की से अँधरियान हन-हमें ए साइत कहूँ कुछ सूझ

पड़त है ? जब एहर फेकित है तब आप कहत हैं नाहीं, जब ओहर फेकित है.....।

तीसमारखां—हाँ-हाँ-हाँ-कहीं चिलम छोड़ न देना, मैं इसी तरफ़ खड़ा हूँ-खूब मजबूती से लिए रह।

कल्लू—का आपो पीयब ? पहिलवाँ काहे न बताएन-अच्छा लेई-(चिलम आगे लिए बढ़ता है और तीसमारखाँ घबड़ाया हुआ पीछे हटता है)

तीसमारखां—अब नहीं, नहीं, नहीं, दूर रह, दूर रह-खबरदार ! देख कहीं तेरे हाथ से छूट न जाए—

कल्लू—अरे तनी आप देखौं तो-खूब सुलगा है-आपके बाप मदारअली तो.....।

तीसमारखां—चुप ! चुप ! चुप ! अब अगर बोलेगा तो मारे ढेलों के तेरी खोपड़ी तोड़ दूँगा-बस चुपचाप दूर खड़ा रह—

कल्लू—बहुत अच्छा हजूर—

तीसमारखां—नाई बुलाने गया था ?

कल्लू—(चिलम फूँकता हुआ) जानो बुलायगा। अब एका कहाँ रक्खे जाइ-जायो बाँध लेई (कोयला फेंक कर चिलम को अपनी पगड़ी के सिरे में बाँध कर उस सिरे को अपनी कमर तक लटका देता है)

तीसमारखां—अरे ! बताता क्यों नहीं ? गया था ?.....अबे ओ पगड़ी की दुम बाँधने वाले गदहे, मैं तुझ से पूछता हूँ—.....फिर नहीं सुनता ?

कल्लू—सुनित तो है।

तीसमारखां—तो जवाब क्यों नहीं देता ?

कल्लू—कसम बोली ?

तीसमारखां—क्यों ?

कल्लू—हमें आपन खोपड़ी तोड़ावे के सौक नाहीं है—आपे तो कहेन है कि बोलेगो तो खोपड़ी फूटी।

तीसमारखां—(मारने को झपटता हुआ) हात तेरे बेइमान की ऐसी तैसी।

कल्लू—अरे ! हजूर थमो-थमो-थमो।

तीसमारखां—क्यों ? क्यों ? क्यों ?

कल्लू—गजब होय गवा—अरे बापरे, बाप रे बाप—गजब होय गवा।

तीसमारखां—(घबड़ा कर) क्या हुआ क्या ?

कल्लू—आप अस जोर से डपटेन कि हमरे घुमनी चढ़ गवा—हमार मूड़ घूमे लाग—अब रोके नहीं रुकत है—यह देखो—

(कल्लू तीसमारखां के नजदीक बड़े जोर से घूमना शुरू करता है—और उसकी पगड़ी का चिलम बँधा हुला सिरा घूमने से लम्बा हो कर तीसमारखां के बदन पर गदागद लगता है।)

तीसमारखां—अरे ! अरे ! यह कौन सी आफत आ गई—उफ खोपड़ी भिन्ना गई—हाय ! हाय ! पीठ टूट गई—अरे ! बाप रे बाप—मर गया।

(तीसमारखां बचने के लिए इधर-उधर भागता है—
मगर कल्लू भी हर बार उसी के पास बना रहता है)

तीसमारखां—उफ-उफ-गर्दन-कन्धा सब जख्मी हो गए—हाय ! हाय ! अबे दूर हट मरदूद-उफ-मार डाला।

कल्लू—का भवा ? का भवा सरकार ?

तीसमारखां—(अपना बदन सहलाता हुआ)—अब जो मेरे नजदीक आएगा तो गोली मारदूँगा।

कल्लू—अरे—हम तो पहिलवें मिनहा कीन रहा कि हमरे नगीचे न आयो सरकार, मुल आपे तो कूद-कूद हमरे पास आइन है।

तीसमार खां—दूर हो कम्बख्त। बदतमीज ! बेहूदा ! हट जा मेरी नजरों के सामने से।

कल्लू—बहुत अच्छा हजूर।

तीसमार खां—अबे ठहर। तूने नाई के बारे में कुछ नहीं बताया।

कल्लू—(पलट कर आगे बढ़ता हुआ) भले चेत दिलायो सरकार।.....

तीसमार खां—(पिछड़ता हुआ) अबे-अबे-अबे—बस दूर ही से बात कर। खबरदार ! इधर मत आना। हाँ वहीं से कह।

कल्लू—अच्छा-अच्छा। मुल कहीं का आपन मूड़। आप तो रोजे चलान कर करके सहरिया भर उजाड़ दीन है। जो कोऊ बचा है तौन देखते हमका कूकुर अस दुरियावत है। कहत हैं कि चलो-चलो। जे ससुर बेगुनाहन के कैद करावे, निबरे के मारे, बिन गारी के बात न करे ऊ सारे के मुँह न देखे जाय। तब कहाँ से हम नाऊ लाई.....

तीसमार खां—अबे चुप मरदूद। तमीज से बातें कर, नहीं जबान पकड़ के खींच लूँगा।

कल्लू—आपे तो पूछित है सरकार। हम का करी ?

तीसमार खां—कौन कम्बख्त ऐसा कहता है बता तो सही।

कल्लू—जेहके जीब पिरात है। जेहके काका-बाबा जेलखाना मा हैं।

तीसमारखां—अबे गदहे तुझे उन बदमाशों के पास किसने भेजा था। तुझे तो मैंने नाई के पास जानेको कहा था।

कल्लू—हाय! दादा देसवा भर तो रोअत है। नाऊ का कहूं देसवा से अलग बसे हैं?

तीसमार खां—उल्लू के पट्ठे! सीधी तरह जवाब न देगा? मैं पूछता हूँ नाई की बात और यह मरदूद बकने लगा अल्लम-गल्लम। जरा पाजीपन देखो!

कल्लू—हजूर नउवन के बात आप न सुनो। नाहीं मारे रिस के आप अउर अगियाबेताल हो जाब। का कही वै लोग तो कहत हैं कि नउवे अब उनकर बार न बनइहैं। तब हम बोलेन कि हमरे सरकार के दाढ़ी कसस मूड़ी जाई। एह पर जवाब मिला कि झाँवा से मुँह रगड़ लें, चिक्कन होइ जाए। हम कहेन वाह! पन्द्रहइयन से दाढ़ी बाढ़ी है जस भटकटइया के झाड़ी। कहूँ झावाँ से साफ होए सकत है? तब वे बोले दियासलाई बार के लगाय दो। बर जाए छुट्टी मिले।

तीसमार खां—(मारनेको झपटता हुआ) चुप बदतमीज बेहूदा बदमाश.....

कल्लू—(एकाएक घूमने लगता है) अरे! अरे! अरे! फिरू घुमनी चढ़े लाग।

तीसमार खां—(पिछड़ता हुआ) ब...ब...ब...बस-बस अबे जरा ठहर जा। ठहर जा।

कल्लू—बहुत अच्छा सरकार, मुल जब आप खौखियाय के झपटित है तो हमार जीव मारे घबड़ई के चकराय उठत है। बस हम चकरघिन्नी काटे लागित है।

तीसमार खां—तब तू बेवकूफी की बातें क्यों करता रहता है ? तूने उन बदमाशोंको मारा क्यों नहीं ? जानता नहीं कि तीसमार खाँ की शान में इस तरह कहना खेल नहीं है। सालोंको एकदम.....

कल्लू—जेहल पठाय देई। यही न ? यह तो बाएँ हाथ का खेल है। मुल एहसे वै लोग अब डेरात नाहीं। यही तो मुसकिल है !

तीसमार खां—नहीं बे। एकदम तोपदम करा दूँ।

कल्लू—काहे नाहीं। आपके बड़ा अखतियार है। साहब आपका बहुत मानत हैं। आप तो उनके अस नकुना के यार हन कि जो आप उनसे दिन कही तो दिन जानें रात तो रात मानें। तब्बे तो देसवा आपके नावपर का कही .....

तीसमार खां—फिर देश-देश बकने लगा, उल्लू का पट्ठा, तेरे देस की ऐसी-तैसी करूँ।

कल्लू—ऊ तो आप करते हन। मुल सरकार का यू हमरे देस है आपके न होय ? आप होयाँ नाहीं पैदा भयन हैं ?

तीसमार खां—चुप बदमाश। देश भाड़ में जाय या जहन्नम में, हमसे मतलब ?

कल्लू—मतलब काहे नाहीं। देस महतारी-बाप कहा जात है। अपने दाना-पानी से पालत-पोसत है।

तीसमार खां—अजब बेवकूफ है। जानता नहीं हम हाकिम हैं, अफसर हैं, देस (क्या मां-बाप) को भी गोली मारते हैं।

कल्लू—फुरे कहेन। यह तो हम बिसर गेन रहा। तब तो आप गुसइयाँ का भी कुछू न समझित होबे। आपके बड़ा अखतियार है।

तीसमार खां—क्यों बे? यह क्या बकता है?

कल्लू—कुछू नाहीं। यही कहित है कि जे जस करत है, वह वस कब्बो न कब्बो पावत है।

तीसमार खां—तेरा सर। उल्लू कहीं का। भला तीसमार खाँ का भी कोई कुछ बिगाड़ सकता है, जिसके नाम से बड़ों-बड़ों के होश गुम हो जाते हैं।

कल्लू—यू न कही सरकार। आप तो पेड़े के पाता अस असमाने निहारित है। मुल जब पेड़े न रहि जाई तब पाता के कौन हवाल होई? आपे सोची। आज नाऊ बिना आपके दाढ़ी अपने करम पर रोवत है जो कहूं नउवन के देखा-देखी भिस्ती, बबरची, दर्जी, धोबी, भङ्गी सभै आपसे मुँह मोड़ लें तो तीसमार खाँव अपने मूड़ेपर आपन मैला लादे कसम कौनोपर तेहा दिखाइहैं—

तीसमार खां—क्यों बे बदमाश, तू मुझको लेक्चर देता है। इतनी हिम्मत! ठहर जा अभी तेरा भी चालान करता हूँ।

कल्लू—हमार चलान? काहे हजूर? हम कौन अपराध कीन है?

तीसमार खां—जानता नहीं कि लेक्चर देना हमने जुर्म कर रक्खा है। अब बचा मेरे फन्दे से कहाँ निकल कर जा सकते हो? तेरी ऐसी-तैसी करूँ। बहुत दिनों से तूने सबको परेशान कर रक्खा था।

कल्लू - तो के लिचर दिहिस है ? हम तो हजूर से साँच अउर नीक बात कहत रहेन।

तीसमार खां—बस-बस अपनी सफाई अपने घर रख। अब आ गए बेटा तुम जुर्मके फन्दे में। सारी हेकड़ी का मजा मिल जाएगा।

कल्लू—हाय दादा ! आप साँचो बोलब आफत कैदीन ? दयू मुँह दिहिन हैं साँच बोले के लिए, तौनो में आप ताला लगाय दीन ? अस जबरदस्ती ? चोरी-बदमासी, लूट-मार तो जुलुम जानत रहेन। मुल नीक बात कहब और साँच बोलब कौन ढँग के जुलुम है, हम समझिन नाहीं पाइत है।

(बटेर खां कॉन्स्टेबिल का आना)

तीसमार खां—अभी समझ में आता है।.....कौन बटेर खाँ ? खूब आये। बड़े मौके से आए। लो इस कम्बख्तको फौरन गिरफ्तार करो।

बटेर खां—इसे हजूर ? यह तो बड़ा ही बेहूदा आदमी है। मैं इसकी खुद शिकायत करनेवाला था। यह जितना ही पुराना पड़ता जाता है, उतना ही गुस्ताख होता जाता है। सभों के नाकमें दम किए हुए है। इसकी गिरफ्तारी का हुक्म निकाल कर हजूर ने सचमुच बड़ा काम किया।

कल्लू—यह देखो। थोड़ करें गाजी मियाँ बहुत करें इफाली। तब ससुर हीयाँ अँन्धेर न मचे तो होय का ?

बटेर खां—देखिए हजूर इसकी बातें।

तीसमार खां—अरे ! यह बड़ाही बदमाश है। यह कम्बख्त लेक्चर देता था—और मुझको !

बटेर खां—हाँ! जरूर देता होगा हजूर। देखिए खद्दर की धोती भी पहने हुए है।

कल्लू—तो तोहरे बाप का का? हम गरीब आदमी मोट-झोट न पहनी तो का कहूँ डाका डालित है कि मखमल के भगवा बाँधी। अपने घरे एका काता-बीना तो पहनी न?

तीसमार खां—गजब खुदा का, यह तो सचमुच खद्दर पहने हुए है और खुद बनाता भी है। यह मुझे मालूम ही न था। ऊफ! ओ इस सूअर के बच्चेको तो फाँसी की सजा मिलनी चाहिए।

कल्लू—काहे? का पहिरबो-ओढ़बो जुलुम है? अस अन्धेर तो हम कब्बो नाहीं देखेन रहा। अपने हीयाँ के बना कपड़ा हम न पहिरे पाइब तो दादा कुछ दिन माँ अपने हाथ के पोई रोटियो खाब मुसकिल होइ जाई। आप लोगे यहू के जुलुम कै देब। नवा-नवा मनई नवा-नवा कानून!!

तीसमार खां—(अपने कान उँगलियों से बन्द करके) उफ! ओ! यह कमबख्त तो फिर लेक्चर देने लगा। अरे बटेर खां, इस पाजीको जल्दी गिरफ्तार करो जल्दी! नहीं तो इसका लेक्चर कहीं असर न कर जाए।

बटेर खां—अभी लीजिए। चल बे गिरफ्तार हो जा।

कल्लू—तनी नकुना पर हाथ रख के बोलो। तोरे मेहरा की। हमहूं का सुदेसी के बल्लमटेर होई कि हमका गिरिपतार होय के सौक है अउर हम कान दबाए चुपचाप गिरिपतार होय जाब? बस नगीचे आयो न। कहे देइत है। ऊ दिन भूल गयो जब भाँटा अस नानमून रह्यो और चौक में जुआ खेलत हम तूका पकड़ेन रहा और तोहार बाप डल्लू

भिस्ती हमरे गोड़े गिरिन तब खाली दुई लात लगाय के तूका हम छोड़ दिया रहा। नाहीं तो तूका भला नौकरी मिलत और आज तू सिपाही होयके फारसी भुँकतो, अउर हमरे जड़ खोदत्यो ?

तीसमार खां—(कानो से अपनी उँगली हटाकर) बटेर खाँ, क्यों यह क्या कहता है ? गिरफ्तार क्यों नहीं करते ?

बटेर खां—हजूर यह अपनेको गिरफ्तार नहीं करने देता। गाली दे रहा है। बिना गारद बुलाए इसको गिरफ्तार करना ठीक नहीं है। आदमी बहुत सरकश है।

तीसमार खां—आयँ ! यह हुकुमअदूली करता है ? अच्छा अभी जाकर मैं गारद भेजता हूँ। जबतक तुम इसकी निगहबानी करो।

(जाना चाहता है)

कल्लू—(बटेर खां से) चियूँटी के मारे के लिए भल तोप बताय दियो। अच्छा इनका जाय दो तब बताइत है।

बटेर खां—(तीसमार खांको दौड़कर रोकता हुआ) अरे ! हजूर आप तकलीफ न करें, मैं अभी गारद साथ लिए आता हूँ।

(खुद जाना चाहता है)

कल्लू—मारे घबड़ेई के हमार मूड़ बस अब घुमहिन चाहत है।

तीसमार खां—(बटेर खांको दौड़कर रोकता हुआ) नहीं-नहीं, अब तो मेरा ही जाना ठीक है।

बटेर खां—नहीं हुजूर मुझे.....

तीसमार खां—नहीं जी मैं.....

(दोनों एक दूसरेको रोकते हैं)

कल्लू—अच्छा कोई न जाए। हम ही जाइत है सरकार। हीयाँ ठाढ़े-ठाढ़े हमरे घुमनी चढ़त है। अब रहाइस नाहीं होत है।

तीसमार खां—हाँ हाँ तू ही जा। जल्दी जा। दौड़ता हुआ जा—

(कल्लू जाता है)

बटेर खां—हजूर यह बड़ा अच्छा हुआ कि बेवकूफ खुद ही गारद बुलाने चला गया—

तीसमार खां—तभी तो मैंने भी झट हाँ कर दिया—कैसी अक्लमन्दी की। अरे! यह क्या.....

(पर्दे के पीछे कई आदमियों का शोर मचाना—'शराब पीना हराम है।")

तीसमार खां—अरे! इन हरामियोंने फिर जोर बाँधा? कम्बख्त जरा भी दम लेने नहीं देते। अच्छा आओ इस दफे इन पाजियोंको ऐसा ठीक करता हूँ कि सारी जिन्दगी याद करेंगे।

(दोनों का जाना)

—o—

दृश्य—२

तीसमार खां का जनानखाना

(तीसमार खां की बीबी दिलारा बेगम)

दिलारा—आग लगे ऐसे अख्तियार में कि निगोड़ी भङ्गिन तक भी बिला काम के झाँकने नहीं आती। माना कि मेरे मियाँ इतने बड़े दारोगा हैं और सारा काम हुकूमत के जोर से करा लेते हैं। मगर हाय! डण्डों से हमदर्दी नहीं मिलती जिसके लिए दिल रातों-दिन तरसा करता है। मेरे बाप एक मामूली आदमी हैं फिर भी जब तक वहाँ रहती हूँ, सारी दुनियाँ अपनी मालूम होती है। मगर यहाँ एक अदना पड़ोसिन भी मुझसे दिल खोल कर मिलने नहीं आती! और न कोई मुझी को अपने यहां किसी काम-काज में बुलाने की हिम्मत करती है। उफ! ऐसे जीने पर लानत है। जानवर भी ऐसी जिन्दगी बसर नहीं कर सकते।.....कौन है धोबिन?

(रमझारी का कपड़ों का गट्ठर लिये स्टेज के कोने में दिखाई देना)

रमझारी—नाहीं। हम हन उनके बिटिया रमझारी। लो आपन कपड़ा। (वहीं से कपड़ों का गट्ठर फेंक देती है)

दिलारा—कल ही तो चौकीदार तेरी मां को कपड़े दे आया था। क्या एक ही दिनमें सब धुल गए?

रमझारी—नाहीं। अब आपके कपड़ा न धोआ जाई। हमरे हीयाँ पंचाइत भवा है कि बिदेसी कपड़ा कोऊ न धोवे। जे धोई वहके हुक्का-पानी बन्द होइ जाई।

दिलारा—क्या ? क्या दारोगा जी का तुम लोगों को कुछ भी डर नहीं है ? जानती हो आफत कर देंगे ?

रमझारी—बलइया से।

दिलारा—हमारे कपड़े न धोये जायेंगे तो क्या हम लोग मैले-कुचैले रहेंगे ?

रमझारी—तो सुदेसी काहे नाहीं पहनित हौ ?

(लौट जाती है)

दिलारा—अरे सुन-सुन-सुन तो।

रमझारी—(पलट कर) का होय ?

दिलारा—तेरी माँ क्यों नहीं आई ?

रमझारी—हमरे महतारी का पूछ कर का करब, आपका अपने कपड़वे से तो मतलब है।

दिलारा—सिर्फ कपड़े ही से मतलब है ? गोया मैं आदमी नहीं, मुझे आदमियों की संगत पसन्द नहीं ? क्यों ? जा उसको भेज दे। मैं उसे समझा दूँ। वह ऐसा न करे। वरना दारोगा जी के कानों तक खबर पहुंचेगी तो....

रमझारी—तो का होई ? सजा कराय देहैं। बस ? अब बड़े-बड़े आदमी जेलखाना जात हैं। हम लोगन के कौन गिनती ? एका अब हम सभे नाहीं डिराइत है।

दिलारा—(अलग) गजब खुदा का। जिस अख्तियार के जोर में हमारे मियाँ अन्धे हो रहे हैं। दीन-दुनिया भूले हुए हैं. आज उसकी यह हालत हो रही है कि इसकी परवा एक धोबिन की छोकड़ी भी नहीं करती। सच है अख्तियार की शान जभी तक है जब तक इसका

दबदबा रहता है। और दबदबा जुल्म और बन्दी से नहीं, बल्कि हमदर्दी और इन्साफ से कायम रहता है। जहाँ यह बातें नहीं, तहाँ अख्तियार काहे को, वह खासी जिल्लत है (रमझारी को जाते हुए देख कर) अरे! फिर चली। बात तो सुन ले। तू तो बड़ी तर्रार मालूम होती है। तेरी माँ से कुछ कहना है। जा उसे जल्दी से भेज दे। भूलना मत।

रमझारी—(पलटकर) वह नाहीं आय सकत है। आज हीयाँ के सब मेहररुवे गांधी बाबा के झण्डा निकलिहैं। सुदेसी के परचार करिहैं। दीदी हुवाँ जइहैं कि आप के हीयां अइहैं?

दिलारा—क्या औरतें भी झण्डा निकालेंगी?

रमझारी—काहे? मेहररुवे मनई न होंय कि खाली मर्दन में दुम-पोंछ लाग हैं? अब तो मेहररुवे वह काम करत हैं कि मर्द का खाये के करिहैं? आपका का मालूम? आप तो पर्दे के बू-बू बनी घर माँ घुसरी रहित हैं।

दिलारा—इसमें कौन-कौन औरतें शामिल होंगी?

रमझारी—हिन्दू मुसलमान छोटी बड़ी सभै। कोई बाकी न रही।

दिलारा—क्या पर्दे वाली भी जायँगी?

रमझारी—बड़ी-बड़ी रानी-महारानी तक जब सुदेसी के खातिर घर से बाहर निकल पड़ीं तो अब पर्दा कहाँ रह गया?

दिलारा—अँय? औरतें इतनी आजाद हो गईं? अच्छा जरा अन्दर आकर इतमीनान से बैठ, ताकि मैं.....

रमझारी—नाहीं दादा। आपके कपड़ा धोबब बन्द कै दीन हैं। कहुँ लोटा थरिया पकड़ाय के सजा कराय देव। कौन ठीक? आपके बड़ा अख्तियार है।

(भाग जाती है)

दिलारा—(अकेली) भाग गई ? उफ ! ऐसे अख्तियार को झाड़ू मारूँ। जिसने तुझे दुनिया की निगाहों में ऐसी जलील कर रक्खा है कि मैं एतबार की काबिल भी नहीं समझी जाती। जैसा सलूक मियाँ दुनियाँ के साथ करते हैं, उसी का बदला आज दुनिया भी देने को तैयार हो गई। यह उसको ठोकर मारते थे और आज वही इनसे ठोकरों से बातें करती है। मगर हाय! उसकी चोट वह नहीं, मैं सह रही हूँ। वह अपनी जा-बेजा कारवाइयों से बुरे थे तो मैं उनके साथ क्यों बुरी समझी जाती हूँ ? इसीलिए कि हिन्दुस्तानी औरतों की कोई हस्ती और कोई वक़त नहीं है। हम लोग जानदार आदमी नहीं, बल्कि अपने-अपने मर्दों की महज बेजान दुम मानी जाती हैं। तभी तो हम लोग लाख अच्छी होने पर भी गेहूँ के साथ घुन की तरह अपने-अपने मर्दों की बुराइयों में पीसी जाती हैं। अल्लाह का शुक्र है कि यहाँ की औरतों को अपने निजी रुतबे का कुछ ख्याल आया और पर्दा तोड़ कर अपनी आजादी की बुनियाद डाली। बस चले तो मैं भी उनका साथ दूँ। जब तक मैं दुनियाँ का साथ न दूँगी तब तक वह मुझे क्यों पूछने लगी ? मियाँ दारोगा हैं मैं तो दारोगा नहीं हूँ। उन्हें सुदेसी से नफरत है। मगर मैं नफरत क्यों करूँ ? तो क्या मैं भी झण्डे वाली औरतों के साथ जाऊँ ? कहीं मियाँ बुरा न माने...

(मुनुवा का तकली लिये आना)

मुनुवा—अम्मी तिकुली लाया। तिकुली लाया। यह देखो।

दिलारा—अरे ! इसे कहाँ से लाया ?

मुनुवा—एक लक्के से एक पैछे में मोल लिया है। अब्बा ने पैछा दिया था। अब हम बी छूत बनायेंगे।

दिलारा—तो तुझे यही खरीदना था बेवकूफ फेंक दे इसे। मकान से दूर जाकर फेंकना।

मुनुवा—काहे अम्मा ?

दिलारा—तेरे अब्बा इसे देखते ही तुझे फाड़ खायेंगे। जानता नहीं कि उन्हें सुदेशी बातों से इतनी नफरत है कि इसके बरतने वालों तक से बहुत खफा होते हैं।

मुनुवा—नहीं अम्मा ! अब्बा नहीं खफा होंगे। अब तो वह बी हलामो हो गए।

दिलारा—क्या ?

मुनुवा—सचमुच अम्मा। हमने अपने कानों से सुना है। अब्बा भी कहते थे कि छलाब पीना हलाम है विदेछी माल लेना हलाम है।

दिलारा—हाँ ? सच ?

मुनुवा—बिल्कुल छच अम्मां। बले जोल से कहते थे।

दिलारा—वाह ! तब तो जो हिचक थी जाती रही, अब मैं जरूर जाऊँगी।

मुनुवा—कहाँ अम्माँ ?

दिलारा—शहर भर की औरतों के साथ गांधी बाबा का झण्डा निकालने।

मुनुवा—क्यों ?

दिलारा—नहीं जानती। मगर जैसा सब करेंगी वैसा मैं भी आज से करूँगी। क्योंकि मैं भी दुनियां में रहती हूँ, अलग नहीं।

मुनुवा—तो अम्मा हम बी चलेंगे।

दिलारा—नहीं बेटे। थक जावगे, यहीं खेलो।

मुनुवा—नहीं अम्मां।

दिलारा—फिर नहीं मानते। जाओ खेलो।

(जाती है)

मुनुवा—(अकेला) अच्छा जाओ। हम बी पीछे-पीछे जांयगे। जब घूम के ताकोगी तो भाग आएँगे।

(उसी तरफ जाता है)

———

दृश्य—३

(तीसमार खां के मकान का सामना)

(तीसमार खां का बड़बड़ाते हुये आना)

तीसमार खां—यह साला चौकीदार गारद वालों के पास नहीं गया। न जाने कहाँ चला गया। मैं अब तक उसी की इन्तजार में थाने पर गारद लिए बैठा था।

(बटेर खां का घबड़ाया हुआ आना)

बटेर—हुजूर ग़—ग़—ग़—ग़—ग़जब हो गया।

तीसमार खां—(घबड़ा कर) क—क—क—क—क्या हुआ ?

बटेर—अभी मुखबिरों से खबर मिली है कि धरना देने के लिये तमाम शहर की औरतें फट पड़ी हैं।

तीसमार खां—औरतें ?

बटेर—जी हां औरतें ! मगर इन्हें औरतें न समझिएगा। मर्दों की भी चची हैं चची !

तीसमार खां—अरे बाप रे ! क्या यह लोग रोक-टोक करने से कहीं हाथ तो नहीं चला बैठती हैं ?

बटेर—नहीं। बस इतनी ही तो खैरियत है।

तीसमार खां—(ऐंठकर) तब कुछ परवा नहीं। गारद लेकर फौरन जाओ और सुनो—(कान में कहता है।)

बटेर—क्या औरतों पर भी ?

तीसमार खां—हाँ जी, मर्द औरत, बच्चे सबको एक ही लाठी से हम तो हांकना जानते हैं। ऐसा न करें तो पबलिक

हमको तीसमार खाँ नहीं, गाजर-मूली खाँ समझने लगेगी।

बटेर—मगर हजूर, कहीं बड़े साहब जान गये तो हमलोगों की जान आफत में पड़ जायगी।

तीसमार खां—अरे! हम क्या कोई चीज ही नहीं हैं। हम सब सँभाल लेंगे, किसकी मजाल है जो हमारी शिकायत उनसे करे। बस वही बात। समझे?

बटेर—तब हुजूर आप भी चलें। औरतों का मामला ठहरा। कहीं आफत न बरपा हो जाय।

तीसमारखां—अजब बेवकूफ हो। वह विलायती मेमें थोड़े ही होंगी? हिन्दुस्तानी औरतें होंगी, हिन्दुस्तानी। समझे? जिनके लिए हिन्दुस्तानियों का खून कभी पोश ही नहीं खा सकता। यह हमने आजमा कर खूब देख लिया है।

बटेर—मगर हुजूर चलें जरूर।

तीसमारखां—हाँ, तुम आगे चलकर कार्रवाई करो, मैं अभी आता हूँ। जरा नाश्ता कर लूँ। दिन भर हो गए, घर के अन्दर कदम रखने की मुहलत नहीं मिली।

(बटेर खाँ जाता है, दूसरी तरफ से कल्लू आता है)

कल्लू—अरे! हजूर लायन लायन लायन। बड़े मुश्किल से मिला है।

तीसमारखां—क्या गारद?

कल्लू—हाँ! देखो। (जिधर से आया उधर घूम कर) आओ हो नाऊ भाई।

(एक देहाती नाई का आना)

तीसमारखां—अँय यह गारद है कल्लू के पट्ठे?

कल्लू—यू हम नाहीं जानित है, जेहका आप बुलावे कहेन रहा तेहका हम बुलाय लायन। सहर के कौनो नाऊ नाहीं आए। तब देहात से एहका लायन हैं। बहुत नीक मूड़त है। एहके बाप बम्बई होय आवा है।

तीसमार—अबे गदहे तू तो गारद बुलाने गया था ?

कल्लू—तो का नाऊ के जरूरत नाहीं है ? (नाई से) अच्छा जाओ भाई।

तीसमार—यह क्या करता है ? जो पूछता हूं उसका क्यों नहीं जवाब देता ?

कल्लू—(नाऊ से) डाल जाओ हो। तूका देख के केतिक गुस्सा होत हैं।

(नाई जाता है)

तीसमार—अबे ! आयँ ! उसे क्यों भगाए देता है ? बुलाओ उसे। (कल्लू दूसरी तरफ जाने लगता है) और तू कहाँ चला ?

कल्लू—जाइत है गारद बुलावे।

तीसमार—अबे गारद के बच्चे। पहिले नाई को बुला ले।

कल्लू—(अपना कान पकड़ कर) नाहीं सरकार अब अस गल्ती नाहीं होय सकत है। एक आजी नाऊ बुलाए के मर पाएन।

तीसमार—हाय ! हाय ! तू तो बड़ा हुज्जती है जब वह दूर निकल जायगा तब कहाँ बुलाने जाएगा ?

कल्लू—हजूर हम अकेल जीव हन। चाहे हमसे आप गारद बुलवाए लेई चाहे नाऊ, दुनो काम नाहीं होय सकत है।

तीसमार—अच्छा नाई को तो बुला कम्बख्त !

कल्लू—मुल पाछे गारद बुलवाए के तो न कहब ? यू आप सोच लेई।

तीसमार—अबे गारद गई ऐसी तैसी में। नाई को जल्दी बुला। उसे देखते ही मेरी दाढ़ी में खुजली मच गई है।

कल्लू—जुआँ पड़ गवा होई सरकार। अच्छा सबुर करो। अब्बै बुलाए देइत है।

(कल्लू जिधर नाई गया है उधर जाता है)

तीसमार—उफ़ ! बड़ी खुजली मची है। क्या करूँ।

(नाई के साथ कल्लू एक कुर्सी लिए आता है)

कल्लू—लो हजूर यह कुर्सी और यह नाऊ।

तीसमार—क्यों बे नाई के बच्चे ! तुम लोगों को बड़ा मिजाज हो गया है। साले बुलाने से नहीं आते हो ?

कल्लू—(अलग) अब दादा हमार हीयां गुजर नाहीं।

(चुपके से भाग जाता है)

नाई—हम तो हजूर हीयाँ रहतो नाहीं हन, हमका आज के पहिले कब्बों नाहीं आप बुलवाएन हैं। नहके आप रिसिगाइत है।

तीसमार—मैं नाहक खफा होता हूँ ? क्यों ? यह तुम्हीं लोगों की बदमाशी से मेरी दाढ़ी की यह हालत है। साले एक-एक को भून के खा जाऊँगा। तेरी ऐसी तैसी करूँ—(मारता है)

नाई—अरे ! अरे ! बापरे बाप ! हम का बिगाड़ेन हैं ?

तीसमार—चुप बदमाश ! चल इधर। बनाओ हजामत।

नाई—(अपना बदन झाड़ता हुआ अलग) अच्छा हमहूँ अभ हजामत बनाइब कि तू हूँ याद करिहो। पच्छी में

कउवा अउर आदमी में नउवा सभै जानत हैं। एहकर कसर हम जो न निकारेन तो हम नाऊ नाहीं, चमार।

तीसमारखां—(कुर्सी पर हजामत बनाने की तैयारी में बैठा हुआ) अब बनाता क्यों नहीं ?

नाई—(हाथ जोड़ कर) हजूर हम नाऊ हन, घास नाहीं छोलित है।

तीसमारखां—यह क्या ?

नाऊ—हजूर हम खुर्पी नाहीं लायन हैं।

तीसमारखां—अरे ! यह कैसा गँवार नाई पकड़ लाया जो खुर्पी से दाढ़ी बनाता है। क्यों बे तू उस्तरा नहीं रखता ?

नाई—हजूर हमरे पास सामान तो सब बम्बइया है। छूरा साबुन बुरुस सब चीज। मुल कहा मानी, आप यू दाढ़ी न मुड़वाई।

तीसमार खां—तब क्या अपनी शकल रीछ सी खब्बीस बनाए रहें ?

नाई—तौन नीक, मुल जहाँ आप दाढ़ी मुड़वाये देब तहाँ यह सूरत बानर अस निकस आई। यही तो अस दाढ़ी में खराबी है। हम कइयू बनाए के देख चुकेन है।

तीसमार खां—तेरा सर ! बदमाश कहीं का। बहानेबाजी करता है।

नाई—बहाना नाहीं सरकार, साँचो कहित है। (दाढ़ी टटोल कर) बाप रे बाप ! यू दाढ़ी है कि समुर झाऊ के जंगल। हजूर हाथ जोड़ित है, हम बहुत गरीब हन। हमरे छूरा के धार टूट जाई।

तीसमार खां—अबे पहिले साबुन मे भिगो ले तब देख बाल कैसे मुलायम पड़ जाते हैं।

नाई—साबुन कूची तो है, मुल सरकार हमरे बापे के होय। हम कब्बो साबुन से बनावा नाहीं है।

तीसमार खां—अजब गँवार से पाला पड़ा। अबे गदहे! कूची को पानी में डुबोकर साबुन से रगड़, उसके बाद उसे मेरी दाढ़ी पर लगा।

नाई—बहुत अच्छा। ऐसे सरकार बतावत जाई। हम गँवार मनई हन।

(कूची में साबुन लगाकर दूर खड़ा होता है और जिस तरह से आतशबाजी में आग लगाई जाती है, उसी तरह से हाथ बढ़ा कर कूची को तीसमार खां की दाढ़ी से एक जगह छुआता है)

तीसमार खां—अबे इसको मेरी दाढ़ी पर रगड़।

नाई—नाहीं सरकार। यू हमसे न होई, हमार जीव बहुत डरात है। कहूँ आपके मुह में हमार कूची घुसड़ जाई तो मिलब मुसकिल होय जाई। आपे ऐह पर आपन गाल रगड़ी।

तीसमारखां—मैं किस तरह रगड़ूँ बेवकूफ?

नाई—आप आपन मूड़ी गिरगिट अस नीचे-ऊपर हलाई तो। समनवा कूची किए हन। हाँ हलाई।

तीसमार—अबे तू तो बड़ा उल्लू मालूम होता है। अच्छा यह ले। (अपना सर हिलाकर कूची से अपना गाल रगड़ता है)

नाई—अउर हाली-हाली। अस नाहीं अस। (दूसरे हाथ से तीसमार खां का कान पकड़कर खूब कस-कस के झटका देता है।

तीसमार—अबे यह क्या बेहूदा नाला ... .

नाई—(तीसमार खां का गाली देने के लिए मुँह खोलते ही अपनी साबुन की कूची उसमें गप से डाल देता है।) हाय! हाय!

सरकार हमार कूची खाय लेब का ? हम हम गरीब आदमी हन मुँह अइर खोली, नाहीं विलाय जाब।

(एक हाथ से तीसमार खां की नाक में दो उंगलियां डालकर मुँह ऊपर को उठाता है, तब दूसरे हाथ से कूँची उसके मुँह से अलग करता है।)

तीसमार—आख थू ! आखथू—आँक छी ! आँक छी ! उफ ! मार डाला। यह साला नाई नहीं, पूरा कसाई है। उस पर से कम्बख्त कभी कान पकड़ता है और कभी नाक।

नाई—नाक-कान न पकड़ी तो यह डेढ़ पसेरी के मूड़ कोन चीज पकड़ के हिलाइत। खोपड़ी में कहूं खूँटी थोड़े गड़ी है।

तीसमार—आ—आ—आक छीं ! अबे तूने मेरी नाक में उँगली क्यों खोंस दी ?

नाई—तो आपके मुहाँ खुलत कसस ? आपे तो हमार कुचिया सगरो भछ लीन रहा। हम आपके कनवा न पकड़े होइत तो आप हमार हथवो लील लेइत।

तीसमार—चुप रह। ला कूची हमें दे। हम इधर लगा लेंगे।

नाई—नाहीं सरकार। पहिले हम एक अलंग बनाए लेई तब ओहर साबुन लगावा जाए, नाहीं तो चेहरा सब लसर-फसर होए जाई तो हम आपन चुटकी के टेक कहाँ लगाइब (दाढ़ी बनाता हुआ) हाँ सरकार, तनी आप मुँह खोली जहमा गलुक्का के भीतर हवा जायके बार के जड़ मुलायम कै दे। अब बन्द कै देई। फिर खोलीं। खूब फैलाईं। अब बन्द करीं। मूड़ी अस करीं ? (कान पकड़ कर) अस नाहीं अस। अब एहर। अच्छा सरकार अब

आप आपन नाक हाथ से पकड़ लेईं। जोखिम जगह पर छूरा चलत है। हाँ कहूँ दाढ़ी के साथ नाको न साफ होए जाए। मुँह खोले रहीं। जेहमा ठूढी लटक के नकुवा से दूरे रहे। हजामत बनाइब खेल नाहीं है। बस एक अलंग होय गवा अब सीसा में आपन मुंह तो देख लेईं।

(एक तरफ की दाढ़ी मय उस तरफ की मूँछ के साफ़ कर देता है)

तीसमार खां—(शीशा देख कर) हाय! हाय! तूने इधर की मूँछें क्यों बना दीं? हाय गजब! यह क्या किया?

नाई—का मूछो बन गवा? यही लिए कहा रहा सरकार कि साबुन न लगवाईं। का कही एहर के दाढ़ी मूँछ दूनो एक्के में लाप-पात रहे। हमार छूरा न चीन्ह पाइस होई कि कौन मूछ है अउर कौन दाढ़ी।

तीसमार खां—तेरे उस्तुरे की ऐसी-तैसी करूँ सूअर के बच्चे। साले ने सूरत बिगाड़ दी।

नाई—हमार कौन दोस सरकार? हम तो पहिलवें बताय दीन रहा कि अस दाढ़ी जहां बनाइ जात है वैसे बनरे अस मुँह निकर आवत है।

तीसमार खां—(उसी धुन में) हाय! हाय! अब इधर की भी मूँछ बनवानी पड़ी।

नाई—काहे कौनो जबरदस्ती थोड़े है। एहरवाली मुछिया रहे देईं।

तीसमार खां—ऊपर से बातें बनाता है? अच्छा जरा हजामत बन जाए तो बताता हूँ। ला इधर ला कूची।

नाई—(कूची देते हुए कूची तीसमार खां की गोद में गिरा देता है।) च ! च ! च ! आपके कपड़ा खराब होय गवा, नाहीं नाहीं बच गवा (तीसमार खां को पोशाक का कपड़ा गौर से देखता और टटोलता हुआ) भला यह बिदेसी तो न होय ?

तीसमार खां—तब क्या हम सुदेसी पहनेंगे गदहे ? जानता नहीं हम दारोगा तीसमार खां हैं।

नाई—तो फुरे यू सुदेसी न होय ?

तीसमार खां—नहीं बे। खबरदार अब जो सुदेसी का नाम लेगा तो मारे जूतों के खोपड़ी पिलपिली कर दूँगा।

नाई—(चिल्ला कर रोता हुआ) हाय ! दादा करम फाट गवा। हम बिलाय गएन।

तीसमार खां—अबे क्या हुआ क्या ?

नाई—(जल्दी-जल्दी अपना सामान समेटता हुआ) का बताई। धोखा होय गवा। हम जानित रहन कि आप सुदेसी पहने हन। सरकार हाथ जोड़ित है, गोड़े गिरित है, आप कोई से न बताइब कि हम आपके दाढ़ी बनायन हैं, नाहीं तो हमें रोटी के लाले पड़ जाई।

(अपना सामान लेकर जल्दी-जल्दी जाता है)

तीसमार खां—अबे-अबे आधी ही दाढ़ी बना कर चल दिया ? अबे ओ नाई के बच्चे, आधी वह भी बनाता जा कम्बख्त।

नाई—(जाते-जाते कोने के पास से) नाहीं सरकार। अनजाने जौन खता होय गई, तौन होय गई। अब हाथ जोड़ित है, हमार कीन न होई।

(भाग जाता है)

तीसमार खां—हाय ! हाय ! चला गया। अब क्या करूँ। कैसे उसके पीछे दौड़ूँ या किसी को अपने सामने बुलाऊँ ?

हाय कम्बख्तने मुँह दिखाने लायक भी तो मुझे नहीं रक्खा। किस तरह सूरत छिपाऊँ? एक तरफ की मूँछ भी तो नदारद है। कहीं कोई आ पड़ा तो क्या करूँगा? मकान के भीतर भी तो जाते नहीं बनता! उफ़! उस नामाकूल ने बड़ा ही पाजीपन किया है। मिल जाता तो इसे कच्चा चबा जाता। (अपने बदन के कपड़ों से अपनी दाढ़ी और मूँछे छिपाने की कोशिश करता है।) नहीं ठीक बनता। हाय! अब क्या करूँ? वह लो, मुनुवा भी आ रहा (अपने मुँह को एक तरफ रूमाल से छिपाकर मुँह फेर कर खड़ा होता है)

मुनुवा—ऊँ-ऊँ-ऊँ। अम्माँ! हाय! अम्माँ! कहाँ गईं?

तीसमार—(मुँह फेरे हुए) क्यों बे मुनुवा, क्या हुआ?

मुनुवा—अम्माँ भी हलामिन बन के सब औलतों के साथ झण्डा उठाने गई थीं।

तीसमार—आयँ? यह क्या?

मुनुवा—सचमुच अब्बा। वह भी गई थीं। बजाल में बहुत बहुत औलतें थीं। अम्मा भी थीं। बछ छिपाई लोग उनके पीछे दौले। फिल नहीं मालूम अम्माँ किधल गायब हो गईं। हाय! अम्माँ! ऊँ-ऊँ-ऊ!

तीसमार—(मुँह फेरे हुए) हाय! गजब! यह क्या हुआ? अरे! मुनुवा! तू थाने पर जा और जल्दी से बटेर खाँ को ढूढ़कर बुला ला। (मुनुवा जाता है)।

मुनुवा को तो मैंने किसी तरह अपने सामने से हटाया। जानता हूँ कि बटेर खाँ वहाँ नहीं हैं। मगर अब करूँ क्या? या मेरे अल्लाह! मेरे सर पर यह कैसी आफत फट पड़ी?

उफ ! मैंने भी बटेर खाँ को औरतों के साथ कैसा सलूक करने का हुक्म दे दिया है। क्या जानता था कि यह मुसीबत मेरे ही सर पड़ेगी। खुद मेरी ही बीबी इसका शिकार होगी। सोचते ही अब रोंगटे खड़े होते हैं और कलेजा फटा पड़ता है। हाय ! बीबी और आबरू दोनों गई। मैं कहीं का भी न रहा। उस कम्बख्त औरत को यकायक यह क्या सूझी ? मगर खैर ! अब उसे इस तबाही से किस तरह बचाऊँ ? वह हमेशा पर्दे में रही कोई उसे पहचानता भी तो नहीं है और मैं यह शक्ल लेकर कैसे जाऊँ ? हात तेरे नाई की !.....अच्छा एक तरकीब सूझी। अपनी बीबी का बुर्का पहन लूँ। बस-बस यही ठीक है। (मकान के भीतर जाता है। बुर्का लेकर निकलता है और उसे पहनकर एक तरफ तेजी से जाता है।)

दृश्य ४

रास्ता

(बटेर खाँ का शेखी हाँकते हुए आना)

बटेरखाँ—वाह रे मैं ! आज ऐसी बहादुरी दिखाई है कि देखनेवालों के छक्के छूट गए। औरतें बहुत दिलेर बनकर आई थीं, मगर मेरी शहजोरी के आगे उनकी एक न चली। उन्हें भागते ही बन पड़ा। और भागीं भी तो ऐसी बदहवास होकर कि दो-चार लँगड़ी-लूली भी हो गई हों, तो कोई ताज्जुब नहीं। मगर हाय ! कोई हत्थे नहीं चढ़ी। यही अफसोस है। जहाँ एक के पीछे पड़ता था, तहा उसके साथ दस-बीस और गिरफ्तार होनेके लिए झट फट पड़ती थीं। इसीसे तो मुझे और गुस्सा चढ़ गया। और बहादुरी ही दिखाता रह गया। किस्मत से अभी-अभी एक अकेली भी मिल गई थी और मैं उसे डरा धमका कर अपने साथ ले भी चला था कि कम्बख्त कलुआने आकर सब गड़बड़ कर दिया। उस मरदूद का सर तोड़ दूँगा—सालेने मेरे मनसूबों का प्रोग्राम उलट दिया (एक तरफ देखकर) अरे ! एक आ रही है, वह आ रही है। वाह री तकदीर. बिल्कुल अकेली है। (इधर-उधर देखकर) कलुआ तो नहीं है। नहीं नहीं कोई नहीं है। (उसी तरफ देखकर) बुर्का पहने हुए है। आहो ! कसम

खुदा की बड़ी हसीन होगी तभी तो। इसको मैं जरूर अपने मकान ले जाऊँगा।

(तीसमार खां का बुर्का पहने आना और बटेर खांको देखकर लौटने की कोशिश करना)

तीसमारखां—(अलग) अरे! मैं किधर निकल आया? यह तो बटेर खां है। अब क्या करूँ (लौटना चाहता है)।

बटेर—उधर कहाँ? उधर कहाँ? चल इधर।

(तीसमार खाँ घबड़ा कर लौटने की कोशिश करता है)

बटेर—फिर नहीं सुनती, चल इधर। अरे! यह तो भागने की कोशिश करती है। तेरी ऐसी-तैसी। (मारता है) फिर भागेगी? चल इधर।

(तीसमार ख़ाँ सामने से भागता है और बटेर ख़ां उसके पीछे दौड़ता हुआ जाता है।)

दृश्य—५

जङ्गल

(दिलारा का गुस्से में आना)

दिलारा—राजब ! खुदा का ऐसा अन्धेर ? औरतों के साथ यह बर्ताव ? हम लोग आदमी न हुई गोया कुत्ता-बिल्ली हुईं जो पकड़-पकड़ के जङ्गलों में बदमाशों की खूराक बनने के लिए छोड़ दी गईं। लानत है हमारे मियाँवर, जिनके हुकुम से उनकी माँ-बहिनों की ऐसी बेइज्जती हुई। यह अब जाना। मैं नहीं जानती थी कि वह यहाँ तक गए-गुजरे हैं। मेरे लिए ऐसे खसम की बीबी होकर रहना चुल्लू भर पानी में डूब मरना है। मैं आज से उनका मुँह तक न देखूँगी। हम लोग औरत जात जो खुद अपनी परछाहीं से डरती हैं और जिन्हें अगर सीधी सड़कपर भी अकेली छोड़ दो तो वह अपने घर का रास्ता नहीं पा सकतीं। उन बेचारियोंको ऐसे सूनसान मैदान और झाड़ी-जंगलों में रास्ता भला कहाँ मिल सकता है ? हाय ! किधर जाऊँ ?

(एक तरफ जाती है)

(दूसरी तरफ से बटेर ख़ां तीसमार ख़ांको ढकेलता हुआ आता है।)

बटेर—चलो इधर। बहुत नखरे दिखा चुकी। अच्छा अब जरा अपना बुर्का उठाओ, तुम्हारा मुँह तो देखें जानमन। अरे ! नाहक इतना शर्माती हो, यहाँ कोई नहीं है। (मुँह खोलने की कोशिश करता है, मगर तीसमार ख़ां खोलने नहीं देता है) ओहो ! इतनी शर्म ? अच्छा तो फिर चलो उस

झाड़ी की आड़ में। वहाँ तो मुँह दिखाने में न शर्माओगी ? अरे ? अरे ! यह तो फिर अड़ गई ? चल इधर।

(एक झाड़ीपर तीसमार ख़ांको ढकेलता है और झाड़ी में से घबड़ाकर कल्लू लोटा हाथ में लिए निकलता है।)

कल्लू—अरे ! बाप रे बाप ! यह के होय सार टट्टी बइठब आफ़त कै दिहिस ? (तीसमार ख़ां को बुर्क़ापोश देखकर) अरे ! यह तो कौनौ मेहरारू होय ! (हाथ पकड़कर) करे तू अस बौरान है कि भहरात फिरत है। फिर अस बदमासी करिहे ? (लात से मारता है।) (बटेर ख़ांको देखकर) अबर तू के हो सरउ ? अरे बटेरू ? कहो अबकी इनका बुरका ओढ़ाय के लायो है ? जब देखो तू हमरे मूड़ेपर कोदो दले के है। मारत-मारत सरऊ अचार निकास लेब। मुल पहिले इनकेर बदमासी छुड़ाय देई।

(तीसमार ख़ां को फिर मारता है।)

बटेर—(अलग) लाहौल बिलाकूवत ! इसमरदूद ने फिर गड़बड़ कर दिया

(दिलारा का आना)

दिलारा—किससे रास्ता पूछूँ ? अरे ! यह कौन औरत है ? यह तो मेरा बुर्क़ा पहने हुए है। यह इसे कहाँ से चुरा के लाई ?

(तीसमार ख़ाँ के सर से बुर्क़ा घसीट लेती है)

कल्लू—अरे ! एहमाँ से यह के निकल पड़ा ? दरागा जी !

बटेर—तौबा ! तौबा ! लाहौल बिलाकूवत ! इल्ला-बिल्ला !

दिलारा—कौन मेरे मियाँ ?

तीसमार—कौन मेरी बीबी ? हाय ! तुम कहाँ थीं ?

दिलारा—तुम्हारी काररवाइयों का तमाशा देख रही थी। चलो दूर हो मेरे सामने से। तुम्हारा मुँह नहीं देखना चाहती।

तीसमार—अरे !

कल्लू—मत घबड़ाई। ख़ाली वही अलङ्ग नाहीं देखे लायक है।

आप एहर से देखीं। ऐसी मूछ-दाढ़ी कुछू नाहीं है। चेहरा बिलकुल साफ है जस मेहरारू के।

तीसमार—हाय! हाय! इसका ख्याल तो था ही नहीं। (मुँह छिपाकर) बस-बस अब ज्यादा जलील न करो। मैं अपने अख्तियार का खुद ही शिकार होकर उसकी हकीकत अच्छी तरह से देख ली और समझ गया कि हाँ खुदा भी कोई चीज है।

दिलारा—शुक्र है कि तुममें इतनी समझ तो आई। और इसी के साथ यह भी समझो कि तुम खुदा के बन्दे अपने मुल्क के बाशिन्दे और पबलिक के हौवा नहीं, बल्कि एक सच्चे खैरख्वाह हो।

कल्ल—एही बातपर हजूर हमका माफी दीन जाए। हम हजूर को बहुत मारा है।

तीसमार—अबे चुप!

बटेर—हाँ हजूर. धोखे में मुझ से भी गलती हो गई।

तीसमार—अरे लिल्लाह! इस वक्त चुप रहो।

कल्लू—नाहीं हजूर हाथ जोड़ित है। हजूर की दाढ़ी छुइत है। कइयू लात हम अनजाने मार बैठेन हैं। माफ करीं।

(दाढ़ी छूने के बहाने तीसमार ख़ाँके मुँहार से उनके हाथोंकोहटा देता है)

दिलारा—अरे इनकी शकल कैसी बनी है?

तीसमार—लाहौल बिलाकूवत! (भाग जाता है)

(उसके पीछे दिलारा देखें-देखें कहती जाती है)

कल्लू—(बटेर ख़ां से) अरे! तू हूँ लपक के देख लेयो। अस खच्चड़ मुँह तोहार बापो न देखन होइहे।

(यह दोनों भी उसके पीछे जाते हैं)

पटाक्षेप

भूल-चूक

पात्र

१. शक्कीमल—पार्वती का शक्की पति
२. डाक्टर साहब—सुशीला का पिता
३. रामदास—सुशीला का प्रेमी
४. भोंदूराम—रामदास का नौकर
५. कम्पाउंडर—डाक्टर साहब का नौकर
६. पार्वती—शक्कीमल की स्त्री
७. सुशीला—डाक्टर साहब की विधवा लड़की
८. महरिन—पार्वती की दासी
९. मुहल्ले की औरतें और कुछ आदमी

भूल-चूक

अंक—१

दृश्य—१

(शक्कीमल के मकान के सामने)

पार्वती—(अपनी खिड़की पर अकेली) आज महरिन मुहल्ले की कुछ औरतों के साथ गङ्गा-स्नान को गई है, मगर अभी तक लौटकर नहीं आई। बड़ी देर लगाई। घंटे भर से उसका आसरा देख रही हूँ। मगर अब तक दिखाई नहीं पड़ी। मुई डूब तो नहीं गई! वह आ रही है।

(महरिन और सुशीला का आना)

सुशीला—(महरिन से) अच्छा, अब तुम जाओ, मैं चली जाऊँगी।

महरिन—कहो तो बहिनी तुम्हें घर तक पहुँचा आऊँ।

सुशीला—नहीं, कोई जरूरत नहीं। हमारी महराजिन और हमारी दादीजी उस सड़क से जाकर वह चौराहे पर खड़ी मेरा आसरा देख रही हैं।

(सुशीला का तेजी से प्रस्थान)

पार्वती—(खिड़की पर से) अरी महरिन, तुझे कुछ काम-धंधे की भी फिक्र है? अभी तक घर में झाड़ू भी नहीं लगी

और तू इधर-उधर घूम रही है। भला कब चौका लगेगा और कब रोटी बनेगी ?

महरिन—आई सरकार।

(महरिन घर के भीतर जाती है। पार्वती खिड़की पर से गायब हो जाती है और जिधर से सुशीला और महरिन आई थीं उधर से रामदास और भोंदूराम आते हैं।)

रामदास—भोंदूराम।

भोंदू—जी सरकार।

रामदास—किधर गई, किधर ?

भोंदू—दइउ जाने।

रामदास—यहाँ तक आई, और उसके बाद एकदम ला पता।

भोंदू—जान तो यही पड़त है।

गाना

रामदास—इधर गई उधर गई,
हाय ! किधर धाय गई।
छबि दिखलाय मुसकाय गयी।
चितवन से बरछी चलाय गयी।

भोंदू—(अलग) इनको तो उल्लू बनाय गई।

रामदास—हाय ! किधर धाय गई।

भोंदू—(प्रकट) भल भवा वह भाग गई।
काहे करत हाय ! दई।
पाप कटा छुट्टी मिली—
जाय दो बलाय गई।

रामदास—हत्तेरे की, धत्तेरे की,
मत्तेरी बौराय गई, हाय ! किधर धाय गई।

रामदास—तो बता अब फिर किधर चलें ?

भोंदू—यही तो हम आपसे पूछित हू।

रामदास—तब तू देखता क्या था ?

भोंदू—जौन आप देखत रहेन।

रामदास—हाय ! मैं तो उसकी सूरत ही देखता रह गया। मुझे क्या खबर कि वह किधर निकल गई ? ये बातें तुझे जाननी चाहिये थीं।

भोंदू—वाह ! सरकार ! आसिक भयेन आप। अउर आप नाहीं जान पायेन मि वह सरररररर से केहर भाग गई, फिर हम कसस जानित ? हमहू का ओपर आसिक भयेन रहा ? राम ! राम ! अस उल्लू हम नाहीं हन।

रामदास—तो क्या उल्लू मैं हूँ ?

भोंदू—हम का जानी ? आपे कहित है। मुल जे आँखी फाड़-फाड़ घन्टन निहारे और फिर कुछू देख न पावे ओका का कहत हैं सरकार ?

रामदास—चुप बे ! देखा क्यों नहीं ? खूब देखा। हाय ! हाय ! उसकी नन्हीं-नन्हीं हथेलियाँ कितनी प्यारी हैं।

भोंदू—तो कौन काम के—न गोबर पाथे लायक, न बरतन माजे लायक।

रामदास—अजब गँवार है। उन फूल से भी कोमल हाथों से मैं कहीं गोबर पथाऊँगा या बरतन मजाऊँगा ?

भोंदू—तो फिर का ओसे आपन मोछिया उखड़वइहो ?

रामदास—अबे यह ! क्या बात बकता है, वाहियात।

भोंदू—हो लयो ! अरे सरकार झूठ नाहीं, धरम सासतर लिखा है तौन कहित है।

रामदास—क्या लिखा है ?

भोंदू—यही कि दइउ मेहरारू के हाथ काम करे के लिये बनाइन हैं और मरदन के हाथ मारे पीटे के लिये दिहिन हैं। तब्बे तो लोग मेहररुवन से गोबर पथावत हैं, बरतन मजावत हैं; रोटी पोवावत हैं, कुटौनी पिसौनी करावत हैं और न कुछू भा तो अगरखे सीयावत हैं।

रामदास—अगर कोई औरतों से यह सब काम लेना गवारा न करे ?

भोंदू—तो आपन खोपड़ी पर हाथ धर के रोवे। काहे वास्ते कि हाथ बिना कुछू न कुछू काम काज किहे रह नहीं सकत है। जो उनसे काम न लीन जाए तो बए दुइ दिन माँ मरदन के खोपड़िये साफ कइदें चाहे मांछिये उखाड़ लें। बस यही दुइ काम तो मेहररुवे सुतार पाय अपने मन से करत हैं और कौनो नहीं। तब्बे तो देखी सहरिया मां कहूं मोछ हाली दिखाइ पड़त है ?

रामदास—बस बस, रहने दे। अपने धर्म-शास्त्र को चूल्हे में झोंक। कहाँ राम राम कहाँ टें टें। भला तू क्या जाने उन हाथों की कद्र करना ? वह हाथ है कि, बस आँखों से लगा ले। वह सूरत है कि, सामने बिठाल कर पूजा करे। वह आँखें हैं कि, उन पर हजारों दिल निछावर कर दे। वह रङ्ग है—

भोंदू—कि दुई कौड़ी का।

रामदास—यह क्यों ?

भोंदू—का बताई। धरम सासतर तो आप मानित नाहीं हन। नाहीं तो आपका मालूम होत कि जेह के बदन मां तनि

सा उज्जर दाग होत है वह से तो मनई दूर भागत है; और जेह के कुल अंग उज्जरे-उज्जर होय वहसे केतिक दूर भागे के चाही ?

रामदास—वाह ! वाह ! वाहरे तेरा धर्म शास्त्र ! अबे उल्लू, यह वह सफेदी नहीं थी जिसे तू समझता है। क्या तूने उसके गालों की लाली नहीं देखी ?

भोंदू—देखन काहे नाहीं। तब्बे तो जुरतिन जान लीन।

रामदास—क्या जान लिया ?

भोंदू यही कि वह कहूँ खूबे मारी गई है।

रामदास—मारी गई है ?

भोंदू—और नाहीं तो का ? रङ्ग कइसो होए मुल सरकार बिना तमाचा पड़े गाल लाल नहीं होय सकत है। यह हमार अजमाई बात है।

रामदास—चुप रह कमबख्त। अब जो बकेगा तो तेरी खैरियत नहीं !

भोंदू—आपे तो पूछित है, हम का करी ?

(महरिन खिड़की पर से कूड़ा फेंकती है और वह रामदास और भोंदू के सर पर गिरता है।)

रामदास—अरे ! सर पर यह कूड़ा कहाँ से फट पड़ा ! धत्तेरे की ! तमाम कपड़े ख़राब हो गए।

भोंदू—राम ! राम ! हमरो आँखी में किनका पड़ गवा। (खिड़की पर महरिन को टोकरी झाड़ते देखकर) करे बदमास भला-मानुस देख के नाहीं फेंका जाता है।

महरिन—(खिड़की पर से) भलेमानुस ही देख के तो फेंका है।

भोंदू—और ऊपर से फारसी भूँकत है।

(खिड़की पर से महरिन गायब हो जाती है)

अस ढेला तान के मरिहौं कि खोपड़ी दुई होइ जाए। का कही हीयां ससुर एको कंकड़ा नाहीं दिखाई पड़त है।

(रामदास के सर से 'फेल्ट-कैप' उतार कर खुली हुई खिड़की के भीतर फेंक देता है)

रामदास—अबे यह क्या किया तूने ?

भोंदू—सरकार गड़बड़ न करो। हम पहिलवें कह चुकेन है कि मरदन के हाथ मारे पीटे वाला होत है। तब भला मौका पाय के हम कहूँ चूक सकित है ? जहाँ चूकेन तहाँ फिर यह हाथ, हाथ न रहिजाई। तब यह खाली मांगे संवारे लायक और मेहररुवन के तरवा में तेल लगावे लायक होय जाई। अबर कौनो करम लायक नाहीं, हां अउरका। सासतर के बात झूठ नाहीं होइ सकत है। तब्बे तो अब मर्द कहूँ हेरे मिलत हैं ? सभे मेहररुवन अस मांग पट्टी सँवारे मटकत घूमे लागे तो वए मर्द कहाँ रहिगए ? आपे बताईं ?

रामदास—अबे शास्त्र के बच्चे पहिले तू तो बता कि तूने मेरी टोपी क्यों फेंकी ?

भोंदू—का करित ? कौनो हथियार बांध के चले के हम पञ्चन का हुक्मे नाहीं है, तो हमहूं जून पर जौन चीज पाय जाइत झट वही का हथियार बना लेइत है।

रामदास—तो क्यों बे गधे, उसके लिये मेरी ही टोपी थी ?

भोंदू—सरकार रिसिया न पड़ी। हमार पगिया मूड़े पर राख लेई। (अपने सर से पगड़ी उतार कर रामदास के सर पर

रखता है।) आहाहा भल नीक लागत है। अब अलबत्ता आप मनई मालूम होइत है। ऊ खंजड़ी अस टोपी राम! राम! कवने काम के रही। नीको मनई जो पहिन ले तो ससुर मेहरा बन जाए। राम दे।

रामदास—(अपने सर से पगड़ी फेंक कर) धत्तेरे की! जले पर नमक छिड़कता है। बेवकूफ कहीं का। तेरी पगड़ी और मेरे सर पर? और ऊपर से मुझे मेहरा बनाता है।

भोंद—(पगड़ी जमीन से उठाता हुआ) यह नेकी के बदला होय। अच्छा सरकार तनि आपन अंगौछा दे देईं।

रामदास—अंगौछा?

भोंदू—अरे! वही एतत बड़ा चिथड़ा जौन आप जेबिया मां ठूंसे हन।

रामदास—अबे वह चिथड़ा है कि रूमाल?

भोंदू—हां, वही वही। तनी दे देईं।

रामदास—क्या करेगा?

भोंदू—पगिया के तनी गर्दा झाड़ लेईं।

रामदास—बदतमीज, बेहूदा कहीं का। हमारे रेशमी रूमाल से अपनी पगड़ी साफ करेगा? क्यों बे इतनी हिम्मत? बचा, मेरी टोपी दिलवाओ, नहीं तुम्हारी खैरियत नहीं। सात रुपये की 'फेल्ट कैप' आज ही खरीदी और आज ही गायब। घर पर क्या मुँह दिखाऊँगा?

भोंदू—जब यही सोच रहा तब सरकार यू गली में पांव काहे धरेन। हम तो पहिलवें कहा रहा कि आसनाई की गली बड़ी जोखिम होत है।

रामदास—हाय ! हाय ! तूने फिर मुझे उसकी याद दिला दी। उसे अब कहां पाऊँ ? किधर ढूँढ़ने जाऊँ ? हाय ! उसे भी खोया, और टोपी से भी हाथ धोया। क्या करूँ ? ओहो ! बगल में लड़का और शहर में ढिंढोरा। अरे ! भोंदू राम ! मिल गया, उसका पता मिल गया।

भोंदू—(चौंक कर) हम तो डेराय गएन। आप एक लागे इतने जोर से अस बलबलाय उठेन कि हम जाना कि आपके सिर पर कौनो चुड़ैल आ गई।

रामदास—अबे चुड़ैल के भतीजे (खिड़की की तरफ इशारा करके) उधर देख।

भोंदू का देखी ? खिड़किया खुली है।

रामदास—अजब गधा है। तू तो कुछ भी नहीं समझता। सुन, यह औरत जिसने अभी कूड़ा फेंका है—

भोंदू—हां, हां, पूर हरामजादी है।

रामदास—अबे. यह मेरा मतलब नहीं है। मैं यो तुझे यह याद दिलाना चाहता हूँ कि यह उसी के साथ थी। क्यों थी न ?

भोंदू—हां, होई। बदमास बदमासे के साथ तो रहत हैं।

रामदास—जबान सम्हाल के बात नहीं की जाती ? इसे तूने बदमाश कहा, तो कहा, मगर उसे तूने बिना जाने कैसे बदमाश कह दिया ?

भोंदू—अकिल से सरकार। अकिल से मनई दसुउ का चीन्ह लेत है. तो हम का एक छोकड़ी नाहीं पहचान सकित है ? एक बदमाशी तो आप देखबे कीन। फिर एकर संगत में जे रही तौन बदमास न होई तो का भलामानुस होई। यही

लिए हमार दादा मरत-मरत कह कह गए रहा कि बेटा अपने ऊपर बदमास के परिछाहीं न पड़े दीहो नाहीं तूहूं वइसे होए जावो।

रामदास—धत्त रे दादा की ऐसी-तैसी! तू काम करने के लिए नौकर है या राय देने के लिए? कमबख्त बात-बात में गुस्सा दिलाता है। जो कहता हूँ उसे कान लगा के सुनता क्यों नहीं?

भोंदू—बहुत अच्छा सरकार। कहीं, कही।

रामदास—इस कूड़ा फेंकनेवाली औरत को बुलाओ। बस, सब काम बन जायेगा और टोपी भी मिल जायगी।

भोंदू—अच्छा तो पुकारित है। अरे कूड़ावाली—

रामदास—(अपने हाथ से भोंदू का मुँह बन्द करके।) अरे! चुप बेवकूफ! शोर मत मचा। चुपके से बुला। इशारों से बुला।

भोंदू—बाहर होय तब तो चुप्पे से बुलाई।

रामदास—खिड़की में से झाँक के बुला।

भोंदू—तो एके लिए सीढ़ी कहाँ पाई?

रामदास—अच्छा तो तू खिड़की के पास खड़ा होजा। मैं तेरे कंधे पर सवार होकर उसे बुलाऊँ।

भोंदू—हाँ, हाँ, सरकार पीठ में हाथ न लगायो।

रामदास—क्यों?

भोंदू—मेहरारू के पेट, मरदन के पीठ अउर माटी के कलसा एके जानां। तनिके में छुतिहा होय जात है। तब्बे तो झाँसी के रानी अपने मर्दे के पीठ पर घाव देख के निकार बाहर कै दिहिस रही। मुल अब बस धरम के जनइया कहां रहिगए?

रामदास—अजब मुश्किल है। इसकी फिलासफी के आगे मेरी एक नहीं चलने पाती। अच्छा तू ही मेरे कन्धे पर चढ़।

भोंदू—कौन, हम? नाहीं सरकार, अस कहूं होय सकत है?

रामदास—अबे हम जरा भी बुरा नहीं मानेंगे। क्योंकि जरूरत के वक्त लोग गधे को भी बाप बनाते हैं।

भोंदू—आप बुरा मानी चाहे न मानी। मुल दुई टाँग के जानवर पर भला कहूँ सवारी कीन जाला है? कि हमही सवार होई?

रामदास—हाय! इस कमबख्त के मारे न इस करवट चैन है और न उस करवट, अच्छा भई, तेरी खातिर मैं चार टांग का भी जानवर बनूंगा। क्या करूँ? गरज अजब चीज है। (*खिड़की के पास अपने चारों हाथ पैर से जानवरों की तरह खड़ा होता है*) अब तो मेरी पीठ पर खड़ा होकर खिड़की के भीतर झाँकेगा?

भोंदू—नाहीं सरकार। हमार जीव डरात है।

रामदास—आता है कि अब उठकर एक दम मारना शुरू करदूँ।

भोंदू—हाय! दादा कौने जंजाल माँ पड़ेन। आपन घरे चूनी कोदो खाए मुल कब्बों नौकरी न करे। (*पीठ पर पैर रखता हुआ*) कहूँ गिर पड़ी तो घरे मेहरारू जियते राँड़ होइ जाय। देखो सरकार, हाल्यो डोल्यो ना (*रामदास की पीठ पर दर्शकों की तरफ मुँह करके डरते डरते खड़ा होता है।*)

रामदास—देखा?

भोंदू—का देखी? आपन कपार? हमें तो रोआई आवत है।

रामदास—क्यों?

भोंदू—एको मर्द तो नाहीं दिखाई पड़त है। देसवा समुर बिलाय न तो होय का ?

रामदास—अबे बेवकूफ, मैंने तुझे उसे बुलाने के लिए खड़ा किया है, या कौंसिल की मेम्बरी के लिये ? मेरी पीठ है, या नेतागीरी का प्लेटफार्म ?

भोंदू—तो का करी ? अँखिया फोड़ लेई ?

रामदास—अबे, तू किधर देख रहा है ?

भोंदू—(दर्शकों की तरफ बताकर) एहर।

रामदास—अजब उल्लू का पट्ठा है। अबे गधे तुझे उधर देखने के लिए किसने कहा ?

भोंदू—आपे तो मुँह एहर किये रहेन। हम काकरी ? सवारी पर सोझे चढ़ा जात है। नवाबी में जो कोई अपराध करत रहा ऊ अलबत्ता गधापर उल्टा चढ़ावा जात रहा। मुल हम थोड़ कौनो अपराध कीन है ?

रामदास—अबे, चुप बेहूदे; घूमकर खिड़की के भीतर झाँक।

भोंदू—यह तो बहुत कठिन है। फाँसी के तख्ता पर चढ़के हम नाच नाहीं सकित है। आपे घूमी।

रामदास—हाय ! हाय ! इस गदहे ने मुझे कोल्हू का बैल बना दिया। (घूमना चाहता है)

भोंदू—अरे ! रुको-रुको। हमका बैठ जाए दो। नाहीं तो गिर-पड़ब। (भोंदूराम, रामदास की पीठपर बैठ जाता है। रामदास थोड़ा-सा घूम पड़ता है। उसका सर जो पहले सामने की तरफ था, अब दाहिनी या बाईं तरफ हो जाता है।) हां, अब कुछू ठिकान। अच्छा अब ठाढ़ होइत है। सम्हारे रहो। (खड़ा होता है) तनि अउर ऊँच तो होइजाई। बस, बस।

रामदास—अबे, मेरा दम निकला जा रहा है। जल्दी से उसे बुला।

भोंदू—हम पहिलवे कहा रहा (खिड़की के भीतर झांकता हुआ) मुल कोठरिया माँ तो कोई दिखाई नाहीं पड़त है; टोपिया अलबत्ता पलँगा पर पड़ी है।

(शक्कीमल का आना)

शक्कीमल—अरे ! यह मेरे मकान में क्या देख रहा है ? जरा मैं भी तो देखूं।

(झपट कर भोंदू का कन्धा पकड़ता है, और खिड़की के भीतर झांकने के लिए अपना एक पैर रामदास की पीठपर रखता है—वैसे ही तीनों गिर पड़ते हैं।)

रामदास—अरे ! बापरे बाप कमर टूट गई।

भोंदू—हाय ! दादा मर गयन।

शक्की—उफ ओ ! सर फूट गया।

भोंदू—भागो सरकार, नाहीं अउर कवनो आफत फाट पड़ी।

(रामदास छिपकली की तरह अपने दोनों हाथों के सहारे अपना पिछला धड़ जमीन पर घसीटता हुआ प्रस्थान करता है, भोंदू बैठा बैठा खिसकता हुआ जाता है, और शक्कीमल अपनी खोपड़ी सहलाता हुआ उठता है)

शक्की—अरे ! यहां तो कोई नहीं है। चलकर घर के भीतर तो देखूं कि कुशल है कि नहीं। अरी महरी, जल्दी से दरवाजा खोल।

(दरवाजा खुलता है और शक्कीमल भीतर जाता है)

(पट परिवर्तन)

—o—

दृश्य—२

(शक्कीमल की भीतरी दालान)

शक्कीमल—(रामदास की टोपी हाथ में लिये हुए अकेला) बाहर मैंने क्या देखा—एक आदमी किसी चीजपर खड़ा होकर मेरी खिड़की के भीतर झांक रहा था। नहीं वह भीतर किसी से बातें कर रहा था। मैंने आते ही उस चीजपर पैर रखा और उसके पास खड़ा होकर भीतर देखना चाहा। वैसेही ऊपर से चिल्लाहट सुनाई पड़ी और नीचे से भी। उसके बाद धमाके की आवाज हुई। मालूम हुआ मेरा सर फूट गया। आंखें खोलीं तो देखा मैदान खाली है। भीतर आया तो यह टोपी मिली। और कहाँ? मेरी स्त्री की चारपाई पर; यह किस साले की है? और यह मेरी स्त्री के पलँग पर क्यों पड़ी मिली? उफ! यह सोचते ही कलेजा जला भुना जा रहा है। हाय! मैं नहीं जानता था, वह हरामजादी ऐसी है। मुझसे छिप-छिपकर यह बातें! ऐसी बदमाशी, ऐसी दगाबाजी! उफ! यही जी चाहता है कि जाकर अपनी हरामजादी जोरू का गला घोंट दूँ। उसके कलेजे का खून पीलूं। उसकी नाक काटकर एकदम घर से बाहर निकाल दूँ। मगर पहले जरा मामलेको महरिन से जांच लूं। वह घर में बराबर रहती है। उसको इस टोपी का भेद जरूर मालूम होगा। मगर इस बातको उससे किस तरह

पूछूं ? कुछ नहीं, बस इस टोपीको पहनकर उसे दिखाऊँ, फिर तो वह टोपीको देखते ही घबड़ा उठेगी और मारे डरके आप से आप सारा हाल उगल देगी। अगर इस तरह न काम चलेगा तो खुशामद, लालच और धमकी से भी काम लूँगा। वह लो, महरिन तो खुद ही इधर आ रही है।

(महरिन का आना)

महरिन—बाबूजी नहाने का पानी रखा है।

शक्की—(रामदास की टोपी पहनकर) अच्छा-अच्छा, मगर जरा एक बात तो सुनो।

महरिन—कहिए।

शक्की—पहिले जरा मुझे एक नजर से देखो तो, तब कुछ कहूँ।

महरिन—बाबूजी, आज आपके मुंह से ऐसी बात ?

शक्की—ऐसी बात वैसी बात न करो। बस जरा मेरी तरफ आँख उठा के देख लो।

महरिन—सरकार, मैं आपकी परजा हूँ। मुझपर दया कीजिये।

शक्की—(अलग) ओहो ! बिना देखे ही घबड़ाने लगी। है दिल में चोर। (प्रकट) मत घबड़ाओ। जानवर तो मैं हूँ नहीं, कि तुम्हें काट खाऊंगा। मैं तो सिर्फ इतना कहता हूँ कि तुम मेरी तरफ ताक दो। बस इतने ही में तुम सब जान जाओगी।

(जाना चाहती है)

शक्की—अरे ! कहां चलीं ? अभी न जाओ। जरा मेरी बात सुन जाओ।

महरिन—नहीं सरकार, मुझे आपके पास डर लगता है।

शक्की—(अलग) अब डरने भी लगी। है दाल में काला। आखिर वही बात निकली। (प्रगट) तुम्हें कसम है जो आगे कदम रक्खो।

महरिन—हाय! राम। अच्छा जो कुछ कहना चाहते हैं, वहीं से कहिए।

शक्की—(टोपी अपने सर पर तिरछी करके) बस मेरी तरफ एक दफे आँख भरके देख लो। बस यही कहना है।

महरिन—यह बहूजी से कहिये।

शक्की—(अलग) आ रही है रंग पर। मेरा मतलब कुछ-कुछ समझ गई है। तभी कहती है कि बहूजी से कहिए। (प्रगट) उससे तो मैं निपट लूँगा। मगर इस वक्त तो तुमसे कह रहा हूँ। (टोपी थोड़ी और तिरछी करके) अच्छा अब तो देखो।

(पार्वती का झांकना)

पार्वती—(झांकती हुई अलग) आज इतनी देर से महरिन से यह क्या बातें कर रहे हैं। जरा मैं भी तो छिप कर सुनूँ।

महरिन—कहिए तो बहूजी को भेज दूँ!

शक्की—(अलग) मेरा मतलब ताड़ गई है, तभी यह बार-बार बहूजी का नाम ले रही है। (प्रगट) क्या तुम मेरा मतलब समझती हो?

महरिन—आज आपको क्या हो गया है? आपको शर्म नहीं मालूम होती?

शक्की—हां, हां, बेशक मेरे लिए डूब मरने की बात है। तभी तो मेरी आज यह हालत हो रही है।

पार्वती—(झांकती हुई अलग) अरे! यह मैं क्या देख रही हूँ? क्या सुन रही हूँ? हाय! हाय! मैं इनको स्वप्न में भी ऐसा नहीं जानती थी।

महरिन—मुझे आपके हाल पर अफसोस मालूम होता है।

शक्की—(अलग) मेरी हालत पर अफसोस भी करती है। बस बस वही बात है और यह उसे खूब जानती है। अब खुशामद, लालच और धमकी से काम लूँ। (प्रगट) अफसोस कहां कहां तक करोगी? बस, अब कह डालो।

महरिन—कौन सी बात?

शक्की—वही, जो तुम्हारे दिल में है और मेरे दिल में भी, देखो मैं हाथ जोड़ता हूँ। (हाथ जोड़ता है)

पार्वती—(छिपी हुई अलग) हाय! अब सहा नहीं जाता, बस यही जी चाहता है कि इनका मुँह नोच लूँ।

महरिन—बाबूजी, देखिए यह अच्छी बात नहीं है।

शक्की—अच्छा तो रुपया ले लो। (अपनी जेब से रुपया निकाल कर दिखाता है)

(पार्वती गुस्से में घूंसा तानती है)

महरिन—बस खबरदार! बहुत हो चुका।

शक्की—टर्राती हो तो मैं भी फिर जबरदस्ती से काम लूँगा। चली कहाँ? (लपक कर हाथ पकड़ता है)

महरिन—(हाथ छुड़ाती हुई) मैं बहूजी को बुलाती हूँ।

शक्की—तू मुझे समझती क्या है। उस चुड़ैल को तो नाक कान काट कर और मुँह में कालिख लगाकर आज ही घर से निकालता हूँ।

पार्वती—(गुस्से में भरी अपने छिपे हुए स्थान से निकलकर शक्कीमल की पीठ पर दुहत्थड़ जमाती हुई) मैं चुड़ैल हूँ, मैं घर से निकाल दी जाऊँ, ताकि तुम बेखटके .....।

महरिन—बहूजी मैं बिल्कुल बेगुनाह हूँ। उन्होंने ही मेरा जबरदस्ती हाथ पकड़ लिया था।

पार्वती—हाँ, हाँ, इन्हीं का कसूर है। मगर तू खड़ी-खड़ी क्या कर रही है? इनके मुँह पर कालिख क्यों नहीं लगा देती? बल्कि झाड़ू मार, झाड़ू।

महरिन—(अलग) बाप रे बाप बहुत गरम हैं। अब खिसक जाऊँ यहां से। (चल देती है)

शक्की—अरे! अरे! यह तो उलटे मुझी को मारने लगी। क्यों री बेहया इस ढंग से तू अपना ऐब छिपाना चाहती है?

पार्वती—और तू आँखें दिखाकर अपना दोष मिटाना चाहता है। यह बेहयाई।

शक्की—यह बदमाशी! मैं तेरे बदन की खाल खींच लूँगा।

पार्वती—और मैं तुझे जीते ही कच्चा चबा जाऊँगी।

शक्की—मैंने तुझ ऐसी बेहया औरत नहीं देखी।

पार्वती—हाँ, बेशक मैं बड़ी बेहया हूँ कि तेरी रंगरेलियों में फट पड़ी। मैं नहीं जानती थी कि तू ऐसा नीच है।

शक्की—सच तो यह कि मैं नहीं जानता था कि तू ऐसी आवारा है।

पार्वती—चुप रह। तू किस मुँह से बोलता है? तेरी कुकर्मी तो मैंने खुद अपनी आँखों से देखी है।

शक्की—देखो इसकी बदमाशी। झूठा कलंक लगाकर मुझको दबा लेना चाहती है। अरी दगाबाज, मेरी आवारगी का सबूत यह दे रहा है, यह। (अपनी खोपड़ी की तरफ इशारा करता है।)

पार्वती—(दुहत्थड़ जमाकर) फिर ऐसी बात मुंह से निकालेगा ? निर्लज्ज पापी कहीं का। और ऊपर से हाथ मटकाता है। क्या मिरगी आ गयी ? (मारती है।)

शक्की—हाय ! हाय ! सबूत की तरफ तो देखती है नहीं और दनादन धुनती ही चली जा रही है।

गाना

पार्वती—शरम नहीं आवे, तू आँख मिलावे,
चल दूर हो, आवारे, नाकारे।

शक्की—हाय ! हाय ! देखो यह तिरिया चरित्तर।

पार्वती—अरे ! जा ! चुल्लू भर पानी में डूब मर।
शरम नहीं आवे—

शक्की—चोरी करे आप और मुझको लगावे।

पार्वती—धत्तेरी ऐसी-तैसी, कैसी बात बनावे।
शरम नहीं आवे—

शक्की—उलटा चोर कोतवाल को डांटे।

पार्वती—पड़े पड़े इसके मुंह पर चांटे।
शरम नहीं आवे—

(शक्कीमल घबड़ा कर भागता है और उसे मारती हुई पार्वती जाती है।)

(पटपरिवर्तन)

अंक—१

दृश्य—१

(डाक्टर साहब का मकान)

गाना

सुशीला—(अकेली)

कहत सुनत बनत नाहिं दिल की हाय बतियाँ—
रहत-रहत धड़क उठत जाने काहे छतियां ।
दई ने कीन्हों काह आज,
नाहीं भावे काम काज,
देखि मोहिं लागे लाज,
मनकी अपने गतियां । हाय । कहत०—

सुशीला—ईश्वर ! आज मुझे क्या हो गया ? मैं विधवा और मेरे हृदय में ऐसी चंचलता ? हाय ! डूब मरने की बात है । मगर करूँ क्या ? जितना ही मन को रोकती हूँ, उतना ही इसकी छटपटाहट बढ़ रही है । जितना ही उमंगों को वश में करना चाहती हूँ, उतना ही मैं स्वयं उसके वश में हुई जा रही हूँ । राह-कुराह सब कुछ जानती हूँ । भलाई-बुराई अच्छी तरह समझती हूँ । फिर भी हृदय की लहर के आगे पूजा-पाठ, धर्म-ज्ञान एक नहीं काम दे रहा है । ईश्वर दया करो, मुझ अबला पर तरस खाओ । तुम मेरा सर्वनाश तो

पहले ही कर चुके हो, अब क्यों मुझे जीते ही नरक में ढकेलना चाहते हो, ? अरे! फिर वही सूरत ! हाय ! ध्यान करना चाहती हूँ किसका, पर आंखों में बस रही है मूर्ति किसकी। हाय! आज गंगा-स्नान का जाना तो मेरा काल ही होगया।

(डाक्टर साहब का आना)

डाक्टर—क्यों सुशीला, आज तुम्हारे चेहरे पर इतनी घबराहट क्यों देख रहा हूँ ? कुशल तो है।

सुशीला—हाँ, पिताजी सब कुशल ही है।

डाक्टर—शुकर है। अच्छा, रोगियों के बाँधने के लिए तुमने पट्टियां तैयार करलीं ?

सुशीला—अभी नहीं।

डाक्टर—तो क्या मरहम घोटती रहीं ?

सुशीला—नहीं।

डाक्टर—ओह ! ठीक है। तुम्हें तो आज 'पावडर' बनाने से छुट्टी न मिली होगी ?.....क्यों चुप क्यों हो ? क्या वह भी नहीं बनाया ?

सुशीला—अभी बनाए देती हूँ।

डाक्टर—अरे! तब तुमने आज किया क्या ?

सुशीला—पिताजी आज तबियत जरा खराब थी, इसलिए कुछ कर न सकी।

डाक्टर—क्या, हुआ क्या ? जरा नब्ज तो देखूँ।

(सुशीला चल देती है)

डाक्टर—(अकेला) अरे ! बात क्या है ? मुझे तो इसकी रंगत कुछ अच्छी नजर नहीं आती। मैंने इसी की खातिर

निजी अस्पताल खोला ताकि रोगियों की सेवा में इसके दिन कट जायँ। लड़कपन ही से धार्मिक पुस्तकें पढ़ाईं ताकि इसके विचार सदा धर्म-कर्मों ही में लगे रहें। मैंने कोई भी ऐसा द्वार खुला नहीं छोड़ा जिसमें इसका मन किसी तरह बहक सके। फिर भी इसके चित्त में अशांति की कालिमा छाने लगी। क्यों? क्या दिल की उमंगों को दबाए रखने के इतने उपाय करने पर भी जवानी का प्रभाव उनको भड़का रहा है? नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। मैं विधवा-विवाह का पक्का विरोधी होकर ऐसा विचार मन में नहीं ला सकता। इसी विरोध के कारण समाज में मेरी इतनी धाक जमी हुई है। इसीलिए मैंने इसका पुनर्विवाह नहीं किया। तब भला मैं कहीं ऐसे उलटे विचार से अपनी प्रतिष्ठा का आपही अनादर कर सकता हूँ? नहीं बल्कि मैं तो विधवा-विवाह के पक्षपातियों को दिखा देना चाहता हूँ कि देखो इस तरह बाल-विधवाओं के जीवन निष्कलंक बिताए जा सकते हैं। तुम लोग नाहक उनका धर्म बिगाड़ रहे हो? खुद भी जातिभ्रष्ट हो रहे हो और जाति को भी कलंकित कर रहे हो। इसलिए सुशीला के की उचाट दूर करने के लिए आज से मुझे उसके मत्थे काम का भार और डालना पड़ा।

भोंदू—(नेपथ्य में) बाबू डाक्टरप्रसाद होत; हे भइया डाक्टर बाबू!

डाक्टर—(अलग) यह कौन बेवकूफ मुझे इस तरह पुकार रहा है? (प्रकट) कौन है, यहाँ आओ।

(भोंदू बैठे-बैठे खिसकता हुआ आता है)

डाक्टर—अरे। यह कौनसी चाल है?

भोंदू—एका उकड़ूं चाल कहत हैं। यही देख के तू घबराय उठ्यो। और अभी बिसतुइया चाल देखे के पड़े है। (जिधर से आता है उधर मुंह करके) चला आओ सरकार। (रामदास छिपकिली की तरह पेट के बल सरकता हुआ आता है) यह देखो। बड़ी मसक्कत लागत है।

डाक्टर—(दूर हटकर) अरे! यह जानवर है या छिपकिलीनुमा आदमी। तुम लोग कौन हो? क्या कोई तमाशा दिखाने आए हो?

भोंदू—तमाशा नहीं बेमारी दिखावे आयन हैं। तनी डाक्टर बाबू का बुलाय दो।

डाक्टर—कहो, क्या चाहते हो। मैं ही डाक्टर हूँ।

भोंदू—यह देखो। यह ससुर डाक्टर हैं? हमका उल्लू बनावत हैं। जने कब्बो हम डाक्टर देखबे नाहीं कीन है। (रामदास से) आपे देखो सरकार, भला डाक्टर के अस कहूँ घोंघा अस मुह होत है।

रामदास—चुप बेवकूफ, जरा तमीज से बातें कर।

डाक्टर—यह तो अजीब आदमी मालूम होता है। अरे! तू बीमारी दिखाने आया है या मेरा मुंह देखने?

भोंदू—हमका तुहार मुंह देखे का सौक नाहीं है। दइउ न करे अस मुंह देखे का रोजी होय। हम आयन हैं बेमारी दिखावे। मुल डाक्टर बाबू आवें तब तो दिखाई। तूका दिखाय के का करी? तू तो आपे रोगान हो।

डाक्टर—मैं रोगी हूँ?

भोंदू—नाहीं तो फिर तोहार पेट हंड़िया अस काहे फूला है? अरे! एकर दवाई करो। तमाकू का पाता बाँध के सेंको।

नाहीं तो पाछे कुछ करत-धरत न बनी। और का? देखो देहवा सगरो सोथान चला आवत है।

रामदास—अबे, सोथा चढ़ा है कि तन्दुरुस्ती है? गधा कहीं का, जब देखो तब तेरी जबान उलटी ही चलती है। खबरदार! अब जो डाक्टर साहब की शान में ऐसी कोई बात की। हाय! बाप रे! बहुत दर्द करने लगा।

भोंदू—यहि लिये कहेन रहा कि आप न बोलब, हम ही का बात करे देब। आखिर पिराय लाग न?

डाक्टर—यह तो बिलकुल उजड्ड गंवार है। इसके कौन मुंह लगे। हाँ, जनाब आप बताइए, आपको क्या हुआ है?

भोंदू—बतायें का? सूझ नाहीं पड़त है कि करिहाँव टूट गवा है? अउर हमही का गंवार बनावत हैं?

डाक्टर—क्या आपकी कमर टूट गई है?

भोंदू—नहीं तो मारे सौक के अस चलत हैं? जो आप फुरे डाक्टर हन, तो यहू तो आपका सोचे के चाही कि हम आपन का करे। न हीयां हमार कोई भाईचारा है; अउर न नातेदारी है।

रामदास—डाक्टर साहब, आप इस बेवकूफ की बातों का ख्याल न कीजिये। बस, ईश्वर के लिये मेरी कमर की हड्डी जोड़कर फिर मुझे आदमी बना दीजिये!

डाक्टर—आखिर, आपकी कमर कैसे टूटी?

भोंदू—यह सब पूछ के आप का करब? न बतावे लायक होय तो कसस बतावे? अरे! यह तो आपका अपने जान लेवे के चाही कि जेही बिना आदत के अपने ऊपर मनई चढ़ाई वही के अस दसा होई।

डाक्टर—अजब मुसीबत है। इसके मारे जबान खोलना भी मुशकिल है। अच्छा, आप जरा अपनी कमर तो दिखाइए।

(डाक्टर, रामदास की कमर देखता है)

रामदास—अरे! डाक्टर साहब मर गया। जरा आहिस्ते आहिस्ते।

डाक्टर—घबड़ाइए नहीं। आपकी कमर टूटी नहीं है। सिर्फ कुछ नसें अपनी जगह से हट गई हैं। कम्पाउन्डर!

(कम्पाउन्डर का आना।)

कम्पाउन्डर—क्या हजूर ने बुलाया?

डाक्टर—हां! इनकी कमर में 'आयन्टमेन्ट' नम्बर ११ मालिश करके बैन्डेज करदो और इनके लिए एक चारपाई यहीं लगादो। इन्हें अस्पताल में लेजाने की कोई जरूरत नहीं है। क्योंकि नसें मुलायम पड़ते ही एक खास हिकमत से अपनी जगह पर लाई जायँगी, जो वहां और मरीजों की संगत में नहीं किया जा सकता।

(कम्पाउन्डर जाता है और चारपाई लदवाकर लाता है। उसपर रामदासको उठाकर उसे लिटाता है और कमर में बैन्डेज करना आरम्भ करता है।)

भोद—हे डाक्टर बाबू, कुछ हमरो चेत है? हमहूँ तो बेमार हन। एक पलँगा हमरो लिये यही लागे बिछवाय देई। मुल गुलगुल होय गुलगुल।

डाक्टर—हाँ, तुम्हें क्या हुआ है?

भोद—हमही जानित तो आपके पास का करे आइत? (अपनी नारी दिखाकर) एका देखी तब तो आप जान पाइब।

डाक्टर—(भोंदू की नब्ज देखता हुआ) अच्छा खासा है। कुछ भी तो नहीं हुआ है।

भोंदू—यह नारी केर एतबार न करी। दगा देत है। एका देखी (दूसरा हाथ बढ़ाता है) यह ठीक ठीक बताई।

डाक्टर—(भोंदू के दूसरे हाथ की नब्ज देखता हुआ) यह भी ठीक है।

भोंदू—अरे! यहू नाहीं बोलत है? गजब होइगा (अपनी एक टांग बढ़ाकर डाक्टर के हाथ में रखता हुआ) अच्छा यू नबज तो देखी।

डाक्टर—धत्तेरे की! अरे! इसको दूर हटा पैर की नब्ज नहीं देखी जाती।

भोंदू—जो टांगे में बेमारी होय तो?

डाक्टर—खातिर जमा रख, तुझे कोई भी भीतरी बीमारी नहीं है। हां, ऊपर जहां चोट लगी हो, वह बताओ।

भोंदू—हम न बताय पाइब। आपे ढूंढ़ी।

डाक्टर—तो क्या तुझे चोट-वोट कुछ नहीं लगी है?

भोंदू—वह। लाग काहे नाहीं? आवाज बड़े जोर के भई रही। मुल हम नाहीं पता पायेन कि चोटिया कहां लाग।

डाक्टर—अजब आदमी है। चोट तुझे लगी और मालूम हो दूसरे किसीको। वाह! वाह! अच्छा, बता यहां दर्द करता है? (डाक्टर भोंदू का बदन इधर-उधर अपने हाथ से दबाता है)

भोंदू—ऊंहुंक्। अच्छा एहर टोओ। (अपनी एक टांग डाक्टर के सामने फैलाता है।)

डाक्टर—(भोंदू का एक पैर दबाता हुआ) कुछ पीड़ा होती है ?

भोंदू—नाहीं तो। अब ऐसी देखी। (अपनी जांघको बताता है)

डाक्टर—(भोंदू की जांघ भी उसी तरह दबाता हुआ) हां, अब बोलो।

भोंदू—का बोली ?

डाक्टर—कैसा मालूम होता है ?

भोंदू—भल नीक लागत है। अब तनी यहू वैसे गजे-मजे दबोटी तो ? (अपनी दूसरी टांग भी डाक्टर के सामने फैलाता है)

डाक्टर—क्यों बे, तू चोट बताता है या मुझ से पैर दबवा रहा है ? बदमाश कहीं का। चला है मुझी से दिल्लगी करने।

भोंदू—हो लेगो ! बेमारी तो आप नाहीं ढूंढ़ पाइत है अउर हम ही बदमास होई ? भला डाक्टर हन आप। अरे ! हमरे गांव के बलभद्दर काका होते—यहू दवाई देत हैं—तो जहां नारीपर हाथ रखते तहां तोता अस टांय-टांय गिनके पूरे बहत्तर रोग बताय देते। अउर एक आप हन कि घण्टा भर से एहर टोइत है ओहर टोइत है, मुल तनिको थाह नहीं पायेन।

डाक्टर—मैंने ऐसा मरीज तो जिन्दगी भर में नहीं देखा। अबे, तेरा दिमाग तो सही है ?

भोंदू—अब तांई रहा। मुल हीयां आके बगद गा होय तो हम नाहीं कह सकित है।

डाक्टर—खड़ा हो सकता है ?

भोंदू—काहे नाहीं ? यह देखी, (भोंदू खड़ा होता है)

डाक्टर—एकाध कदम चलने की कोशिश कर।

भोंदू—(चलता हुआ) एक, दुई, तीन—

डाक्टर—तब, बदमाश ! तू बैठके क्यों चलता था ? मुझे धोखा देना चाहता था ? बना हुआ मक्कार कहीं का। निकल यहाँ से।

भोंदू—बस जान गएन, आप कब्बो राज दरबार में नाहीं रहेन, तब्बे हमार रोग नाहीं चींह पायेन और उलटे खिसयई के मारे हमका भगाइत है।

डाक्टर—जब तुझे कोई बीमारी नहीं, तब क्या अपना सर बताऊँ ?

भोंदू—बेमारी रहा काहे माहीं। 'तलब बढ़ाई' बेमारी बड़े जोर से दाबे रहा। वह राजदरबारी रोग है। आप नाहीं जान सकित है। जब राजा के कुछू होय जात है, तब यह रोग फैलत है। जैसे जो कहूँ राजा के बाप मर जायँ तो सब दरबारी मोंछ मुड़ाय देत हैं। वैसे हमार मालिक जब बकइयाँ चले लागे तो हमहूँ घिसकिनिया काटे लागेन।

डाक्टर—निकल, निकल यहाँ से पाजी। एक तो बेहूदा और उस पर बातें कैसी बनाता है ? (डाक्टर मारने को झपटता है और भोंदू भाग जाता है)—कमबख्त ने नाक में दम कर दिया। हाँ, कम्पाउण्डर, कहो तुमने बैन्डेज कर दिया ?

कम्पाउण्डर—जी हाँ। और इस वक्त नींद भी आ गई है।

डाक्टर—अच्छा, सोने दो। जिस वक्त यह खूब गहरी नींद में हो, उस वक्त इस तरकीब से जगाओ कि यह चौंक कर उठे। इस तरह से कमर पर यकायक झटका पड़ेगा

और नसें आप से आप अपनी जगह पर आ जायँगी। अच्छा, अब, जरा मैं और मरीजों को देख आऊँ।

(जाता है)

कम्पाउण्डर—बहुत अच्छा, इसे अभी और थोड़ी देर सोने दूँ, ताकि यह गहरी नींद में हो जाय। तब तक जरा मैं भी अस्पताल हो आऊँ।

(जाता है और दूसरी तरफ से सुशीला आती है)

सुशीला—अरे! आज यह कैसा मरीज आया, जो इस कमरे में रखा गया। यह तो वही मालूम होते हैं। (और नजदीक से देख कर) हां, हां, वही हैं वही। हाय! तुम फिर मेरी आँखों के सामने पड़े। मगर तुम्हें हुआ क्या है? ईश्वर कुशल करे। (धीरे-धीरे पास जाकर रामदास के माथे पर अपना हाथ रखके देखती है। वैसे ही रामदास यकायक चौंक कर उठ बैठता है।)

रामदास—कौन? तुम? यहाँ?

(सुशीला चल देती है। रामदास फिर अपनी कमर पर हाथ रख के देखता है। उसके बाद चारपाई पर खड़ा होता है।)

रामदास—अरे! मेरी कमर सीधी हो गई। वाह! वाह! वाह! मगर वह कहाँ गई? यहाँ तो कोई भी नहीं है। तो फिर क्या मैंने स्वप्न देखा। जरूर यह स्वप्न ही होगा। वरना वह यहाँ कैसे आ सकती है? हाय! मैं फिर ऐसी नींद से जागा क्यों? अगर यही सपना मुझे हमेशा देखने को मिले, तब तो मैं जिन्दगी भर सोया ही करूँ। कभी भूल कर भी जागने का नाम न लूँ।

ऐसे जागने पर लानत है। मैं फिर सोऊँगा ताकि फिर मैं वही सपना देखूँ।

(चारपाई पर लेट कर सोने की कोशिश करता है)

(भोंदू का चुपके-चुपके आना)

भोंदू—(अलग) डाक्टरवा यह साइत नाहीं है। बस चुप्पे से हींए कहूँ छिप रही।

(चुपचाप आकर रामदास की चारपाई के नीचे लेट जाता है।)

रामदास—हाय! अब तो आँख ही नहीं लगती। फिर स्वप्न कैसे देखूँ (चारपाई पर बैठ कर) क्या करूँ अब तो बिना उनका दर्शन पाए मुझे चैन कहाँ। अच्छा भोंदू को बुलाऊँ। मगर वह है कहां (पुकारता हुआ) अरे! भोंदुआ, ओ भोंदुआ!

भोंदू—(चारपाई के नीचे से) खोपड़ी पर आप आसमान काहे उठाइत है? धीरे से बोलौ, धीरे से।

रामदास—अबे, कहां है तू?

भोंदू—हींयां।

रामदास—न जाने कहां से बोल रहा है? अबे, सामने आ।

भोंदू—कससे आई, फिर निकार दीन जाब।

रामदास—यह क्या बकता है अच्छा बता, कहां छिपा है?

भोंदू—जहां कोई पता न पावे।

रामदास—हाय! हाय! तू ने तो नाक में दम कर दिया। अब तुझे कहां ढूंढूं?

भोंदू—खटिया के नीचे।

रामदास—धत्तेरे की (चारपाई के नीचे उतर कर झाँकता हुआ) अबे, जल्दी बाहर आ।

भोंदू—अरे सरकार का आप नीक होय गएन ?

रामदास—हाँ, देवी जी के प्रसाद से।

भोंदू—तब तो हमहू नीक होय गएन। (बाहर निकलकर) मुल कौन देवी जी होय ?

रामदास—वही मेरी इष्ट देवी, जो मेरे हृदय में बसी हुई हैं। उन्होंने मुझे स्वप्न में दर्शन दिया और मेरे माथे पर अपना कर-कमल रखा। वैसे ही मेरी आंख खुली और देखा कि मेरी कमर जुड़ गई।

भोंदू—हाय ! हाय ! तब तो आप बड़ी गलती कीन। आपका उनसे बर मांग लेवे के चाहत रहा। आप जुरतिन उनके गोड़े पर गिर पड़तेन अउर हाथ जोड़के कहतेन कि हे माता, हे मोर भैया—

रामदास—चुप बदमाश ! यह क्या बेहूदा बकता है ?

भोंदू - ऐसे तो बर मांगे जात है। हमका जो दरसन दें तो हम बिना बर मांगे उनके जीव न छोड़ी।

रामदास—हाय ! हाय ! स्वप्न में उनकी छबि बस देखने योग्य थी। वैसा रूप, वैसी सुन्दरता, वैसी शोभा मैंने आज तक कहीं देखी ही न थी। मेरे तो नेत्र सुफल हो गए। मगर मुझे अब चैन कहां ? भोंदू, तू यहीं रह। मैं जाता हूँ उन्हीं के मन्दिर की पैकरमा करने। तू डाक्टर साहब से कह देना कि बाबूजी अच्छे हो गए और वह आप से फिर मिलेंगे। यह कहकर तब आना।

(रामदास का जाना)

भोंदू—चला गए। जान पड़त है भगतई सैगर समाय गई। कवनो अचंभो नाहीं है। कुकमन के बाद भगतई होते है। धरमसास्तरो ऐसे कहत है। मुल देवी जी के दरसन करेके हमरो मन चाहत है। वह आपन करिहांव सोझ कराइन तो हमहू उनसे आपन तकदीर सोझ कराय लेई। मुल हमहूँ का सपना दें तब तो। जानो यही खटीवा मां कौनो करामात है। तब्बे देवी जी सपना में उनका दरसन दीहिन, अउर तो कब्बौ बातो नाहीं पूछिन रहा। तो हमहूँ तनी एपर सोय के देख न लेई। के जाने हमरो तकदीर जाग पड़े। हींयां कौनो है थोड़े (चारपाई पर लेटता है) चदरवा से मुँह ढाँप लेई। जेहमाँ डक्टरवा अइबो करे तो हमका जान न पावे। (चद्दर अपने ऊपर सर से पैर तक ओढ़ लेता है) हे देवी मैया हमरो दाली में तनी घीव छोड़ देव।

(कम्पाउन्डर का आना)

कम्पाउण्डर—मालूम होता है, मरीज इस वक्त खूब गहरी नींद में है। मगर इसे किस तरकीब से उठाऊँ जिसमें यह चौंक कर उठ पड़े। अगर चारपाई को जल्दी से खड़ा कर दूँ तो आप ही घबड़ा कर उठ खड़ा होगा। बस, बस यही उपाय ठीक है।

(चारपाई के पास धीरे-धीरे जाकर एक बारगी चारपाई उठा कर खड़ी करता है। भोंदू चारपाई पर से लुढ़ककर जमीन पर धम से गिर पड़ता है)

भोंदू—अरे! बाप रे बाप मर गएन। यह ससुर कौन सपन होय। (जमीन से उठकर) उनका तो देवी जी दरसन दिहिन

अउर हमका दिखाई पड़ा यह ससुर चण्डाल। सरऊ, मपना न होत तो बिना मारे छाड़ित न।

(लंगड़ाता हुआ जाता है)

कम्पाउन्डर—(अकेला) अरे! यह तो उसका नौकर था। मगर वह हजरत खुद क्या हुए? डाक्टर साहब पूछेंगे तो क्या कहूंगा? वह लो डाक्टर साहब पहुँच गए। अब क्या बहाना करूँ?

(जल्दी से चारपाई और बिस्तरा ठीक करता है और डाक्टर आते हैं)

डाक्टर—अरे! मरीज कहां?

कम्पाउन्डर—वह तो अच्छे होकर चले गये आपसे फिर मिलने का वादा किया है।

डाक्टर—अच्छी बात है। मगर यह कौन आ रहा है? मुन्शी शक्कीमल?

(शक्कीमल रामदास की टोपी लिये धीरे-धीरे आता है)

शक्कीमल—आदाबअर्ज है। (चारपाई पर बैठकर हांफता है)

डाक्टर—आदाबअर्ज! आप तो कभी इधर आते ही नहीं, आज कैसे भूल पड़े; कहिये, खैरियत तो है?

शक्कीमल—खैरियत क्या अपना सर है। दम निकल रहा है। हाय!

(चारपाई पर लेट जाता है)

डाक्टर—(शक्कीमल की नब्ज और पेशानी देखता हुआ) आपको कुछ हरारत है। दिमाग में गर्मी भी कुछ मालूम होती है। बदन भर सूजा हुआ है। क्या कहीं दंगे के बीच में तो नहीं पड़ गए? बड़ी बुरी तरह कुन्दी हुई है।

मल—यह सब न पूछिये। जरा मुझे कोई ताकत और नींद की दवा दीजिये जिससे मेरी तकलीफ कुछ कम हो। हाय! सारा बदन फोड़ा-सा दुख रहा है।

डाक्टर—कम्पाउन्डर, इन्हें मिक्सचर नम्बर तीन की एक खुराक पिला दो। और इनके लिये एक नुसखा लिखे देता हूँ। इसे इन्हें दे देना।

(मेजपर बैठकर नुसखा लिखता है और उसे लिफाफे में रखकर कम्पाउन्डर को देता है) अच्छा, मैं अब जरा एक काम से बाहर जाता हूँ।

(डाक्टर का जाना)

कम्पाउन्डर—बहुत अच्छा। (एक खुराक दवा डालकर शक्कीमलको देता हुआ) लीजिये, इसे पी लीजिये।

शक्कीमल—(दवा पीकर) आहा! कलेजे में बड़ी ठंढक पहुँची। भाई जरा चादर ओढ़ा दो, मक्खियां बहुत तंग करती हैं।

कम्पाउन्डर—यहीं रहना चाहते हों,तो चलिये अस्पताल में आपके रहने का इन्तजाम कर दूँ।

शक्कीमल—फिर कर देना। इस वक्त तो जरा यहीं दम लेने दो। है दवा अच्छी। आँख झपकने लगी।

(चद्दर ओढ़ लेता है)

कम्पाउन्डर—अच्छा, तो यह नुसखा लीजिये। बाजार से दवा मंगवा कर कुछ दिनों इस्तेमाल कीजियेगा।

शक्कीमल—सिरहाने रख दो। जरा तबीयत ठिकाने हो तो जेब में रख लूँगा। (सर ढँक के सोता है। कम्पाउन्डर लिफाफा सिरहाने रख के जाता है दूसरी तरफ से सुशीला आती है)

सुशीला—हाय ! तबीयतको बहुतेरा समझाया, मगर बेकार। तुम्हारी मौजूदगी किसी तरह मुझे अपने बहके हुए दिलको काबू में नहीं करने देती। आखिर तुमने मेरा पता ढूंढ़ ही निकाला, और मरीज बनकर यहां तक पहुँचे। मगर, हाय ! तुम आए क्यों ? मेरे रहे सहे जीवन में आग लगाने आए क्यों ? मेरे चैन-ओ-आरामको छीनने के लिये आए ? तुमने यह बुरा किया। सो रहे हो ? अच्छा सोओ। (सिरहाने से नुसखे का लिफाफा उठाती है।) जो बीमारी तुम्हें है, वह तो मैं जानती हूँ। फिर इस नुसखे की क्या जरूरत ? (लिफाफे से नुसखा निकाल कर फाड़ फेंकती है) तुम्हें जिस नुसखे की जरूरत है वह मैं लिखे देती हूँ। (मेजपर बैठकर लिखती है) न लिखूं ? मगर मैंने तो वह नुसखा फाड़ दिया। अब तो कुछ न कुछ लिखकर उसकी जगह पर रखना ही पड़ा। (अपना लिखा पत्र मनमें पढ़कर) हर्ज ही क्या है ? कोई बुरी बात तो लिखी ही नहीं। और फिर यही तो पढ़ेंगे।

(अपना पत्र उसी लिफाफे में रखकर सिरहाने उसी तरह रख देती है, और फिर चली जाती है। दूसरी तरफ से भोंदू इधर-उधर झांकता हुआ आता है)

भोंदू—सपन नाहीं रहा। सपन होत तो देहियां अबताइ न पिरात। कम्पोटर के बदमासी रहा। वह देखो। सार अपने सोवेके मारे हमका खटियापर से ढकेल दिहिस। अच्छा रहो मामा, ओकर बिना तूहें मजा चखाए हम कहूँ रह सकीत हैं।

(जल्दी से चारपाई एकदम उलट देता है, और उलटी हुई चारपाईपर मेज कुरसी सब लाद देता है)

शक्कीमल—(चारपाई के नीचे से) अरे, बाप रे पाप, जीते ही दम निकल गया। हाय! हाय!!

(कम्पाउन्डर का आना)

कम्पाउन्डर—हाय! हाय! यह क्या किया?

भोंदू—यह सार नीचहूँ पड़ा चिल्लात है और हीयों ठाड़ है। अरे! यह तो फुरे सपन अस जान पड़त है।

(भाग जाता है)

[पटाक्षेप]

—o—

दृश्य—२

(शक्कीमल के मकान के सामने)

पार्वती—(अपनी खिड़की खोलकर) बार-बार खिड़की खोल-खोल कर उनकी राह देखती-देखती मैं तो अब थक गई। सारी रात बीत गई और अब तक हजरत को सुध न आई। ऐसे हाथ से बेहाथ होय गए। अच्छा आने दो। कभी तो घर लौटेंगे। तब उन्हें रात-रात भर घूमने का मजा चखाऊँगी। वह महरिन आ रही है।

(महरिन का आना)

पार्वती—क्यों महरिन, कहीं बाबूसाहब का पता मिला?

महरिन—जहाँ-जहाँ बैठते उठते हैं, वहाँ तो नहीं हैं और न कल शाम ही को वहाँ गए थे। यह भी मैं पूछ आई।

पार्वती—आय! तब उन्होंने रात कहाँ बिताई?

महरिन—बहूजी, मर्दों की भली कही। उनके पास पैसा हो तो सारा बाजार पड़ा है। मगर क्या कहूँ, बाबूजी कभी ऐसे न थे।

पार्वती—हाय! हाय! इसी शक के मारे तो मैं मरी जा रही हूँ। अगर यह बात कहीं सच निकली तो मैं उनके कलेजे का खून पीलूँगी। अपनी और उनकी जान एक कर दूँगी। मैं उन दब्बू औरतों में नहीं हूँ, जो इन बातों को चुप-चाप सहकर अपने मर्दों की आवारगी में मदद दें।

महरिन—इतना गुस्सा न कीजिए, बहूजी! जिसकी आँख का पानी एक दफे गिर जाय, तो फिर वह कहीं राह-कुराह चलने से रोका जा सकता है?

पार्वती—नहीं रोका जा सकता, तो मैं उसकी टाँग भी तोड़ देना जानती हूँ। जिस आँख का पानी गिर जाय उस आँख को फोड़ भी देना जानती हूँ! अच्छा बता, तू कहाँ कहाँ गई थी?

महरिन—सारा मुहल्ला तो छान आई! सिर्फ डाक्टर बाबू के घर नहीं गई थी?

पार्वती—अच्छा किया। वहाँ वह क्यों जाने लगे और भी कभी वहाँ जाते हैं कि कल ही जाते? अच्छा, जरा चुन्नीलाल से तो पूछ आ। वह रहते तो हैं दूसरे मुहल्ले में, मगर उनसे आजकल इनकी खूब छनती है। मुमकिन है, वहीं रात को रह गए हों। अगर वहां भी वह न रहे तब तो आज उनकी जान नहीं या फिर मेरी।

(गुस्से से खिड़की बन्द करती है और महरिन एक तरफ जाती है। दूसरी तरफ से शक्कीमल आता है)

शक्कीमल—लोग कहते हैं कि कमबख्ती पीछा नहीं छोड़ती और मैं कहता हूँ कि यह सुसरी पीछे नहीं बल्कि दो कदम आगे-आगे चलती है। मैं गया डाक्टर बाबू के यहाँ अपने बदन का दर्द दूर कराने, और आया वहां से और हाथ-पैर तुड़ाकर। न जाने किस हरामजादे ने मेरी चारपाई उलट दी। वह तो खैरियत हो गई कि मैं तुरन्त ही बेहोश हो गया और बेचारे कम्पाउन्डर ने मुझे वहाँ से झट अस्पताल में लाकर रातभर दवादारू की, नहीं तो

मर जाने में कोई कसर न थी। जब सुबह को जरा चलने-फिरने के काबिल हुआ तो वहाँ से भागा। देखूँ, कोई चीज तो नहीं छूटी। (*अपनी जेबें देखता है*) ओहो! तो नुसखा है। (*उसे फिर जेब में रख लेता है*) रहने दो अभी इसे वैसे ही। जब दाम होगा तब दवा मँगाऊँगा। मगर वह टोपी तो वहीं भूल आया। अरे! उसे मैं कहीं नहीं छोड़ सकता। जाकर ले आऊँ।

(*लौट जाता है और दूसरी तरफ से रामदास आता है*)

रामदास—कल शाम को जैसे ही मैं डाक्टर साहब के यहाँ से चुपके से खिसका, वैसे ही सीधे यहीं पहुँचा। इष्टदेवी जब मेरी यहाँ हैं तब मैं कहाँ जाता? खिड़की कई बार खुली और बन्द हुई। मगर हाय! जब रात की अँधियारी गहरा गई तब, इसलिए उस वक्त मेरी नजरों ने काम नहीं दिया। रात-ज्यों-त्यों काटी, मगर सुबह होते ही फिर यहीं दौड़ा। इस वक्त तो आँख भरके देखूँगा। अगर गंगास्नान के लिए बाहर न निकलेंगी तो खिड़की पर तो जरूर ही दर्शन देंगी। हे मेरे हृदय की देवी! जैसे तुमने मुझे स्वप्न में दर्शन देकर मेरा उपकार किया है, वैसे ही इन जागते हुए नेत्रों को भी दर्शन देकर इनकी प्यास बुझाओ। इनकी छटपटाहट दूर करो! मेरी क्या हालत है! तुम्हारे बिना मैं किस तरह तड़प रहा हूं; तुम्हें कैसे बताऊँ? तुम्हें दूर से देखकर किस तरह अपनी व्यथा सुनाऊँ? अच्छा, तुम्हें पत्र लिखकर अपना हाल बताऊँगा। बस, बस यही ठीक है। अभी लिखे लाता हूँ।

(तेजी से जाना चाहता है, वैसे ही दूसरी तरफ से भोंदू आता है और दोनों टकरा कर गिरते हैं)

भोंदू—अरे दादा रे ! यह के होय, सार ढररा माँ टकरात फिरत है ? सारे के पांच हाथ के मनई सूझ नाई पड़त है। (रामदास को देखकर) अरे ! सरकार आप होई। उठौं। उठौं।

रामदास—कौन भोंदुआ ? एक तो कम्बख्त का लोहे सा बदन। उस पर अंधे की तरह चलता है। गधा कहीं का।

भोंदू—अउर आप सरकार तो देखही में हलुक जान पड़ित है। मुल आपके खोपड़ी के भीतर तो निराल पाथर भरा है। अउर ठसाठस। हमका आज जान पड़ा। गंगा जाने बड़ी चोट लाग।

रामदास—क्यों बे, तू अब तक कहाँ था ?

भोंदू—अउर आप कहाँ रहेन ? हम जैसे डाक्टर बाबू के घरे से आयन वैसे आपके घरे गएन। मुल आपके पते नाहीं रहा। यहू जून गएन तो आप नाहीं मिलेन। तब धोबी जस आपन हेरान गधा ढूँढ़त है वइसे हमहू गली-गली आपका ढूंढ़े लागेन। अउर आपका पायेन कहां ? हीयां। अरे ! सरकार यू कमर तोड़वा गली मां का करे आयो। अभी पेट नाहीं भरा ?

रामदास—हाय ! तो फिर अपनी हृदयदेवी के मन्दिर को छोड़ कर कहाँ जाऊँ ? रात भी यहीं बड़ी देर तक चक्कर लगाता रहा और सुबह होते ही फिर यहीं पहुँचा।

भोंदू—अरे ! हीयां देवीजी के मन्दिर कहाँ ? हमका तो नाहीं दिखाई पड़त है।

रामदास—(शक्कीमल का मकान बता कर) अबे यह क्या है ? इतनी जल्दी भूल गया। इसीमें तो हमारी इष्टदेवी निवास करती हैं। अच्छा, तू यहीं मिलना, मैं अभी आता हूँ।

(जाता है)

भोंदू—हो लेयो, फिर चला गए। जब से सपन देखेन हैं तब से मारे भगतई के पगलाय गए। मुल जस हम सपन देखेन हैं वैसे जो कहूँ यहू देखते तो इनका मन्दिर के नाहीं फिर अस्पताल के पइकरमा करे के पड़त। मुल एका मन्दिर कसस कहत हैं अभी कल्हियां एही में से ऊ मेहररुआ कूड़ा फेकिस रहा और एहर वाली कोठरिया में पलँगा पड़ा रहा, और आज यह मन्दिर कसस होइ गवा ? अजोध्याजी में सुनित है जितये घर हैं सब मन्दिरे मन्दिर हैं। वइसे वही चाल के जानो यहू मन्दिर बना है। बाहर देखे में हवेली और भीतर मन्दिर।

(शक्कीमल का आना और भोंदू को देखकर छिप जाना)

शक्कीमल—(अपनी छिपी जगह से) यह साला फिर यहाँ आया ? यह तो वही है जो कल मेरी खिड़की के भीतर झाँक कर बातें कर रहा था। घर में इससे बातें करने वाला कौन हो सकता है ? बस वही मेरी स्त्री हरामजादी; क्योंकि महरिन तो बाहर निकलती है, उसे छिप कर बातें करने की जरूरत क्या थी ? अच्छा, रह हरामजादी।

भोंदू—(उसी तरह) इतने देर तलक सोचे के बाद अब पता पायेन। (खिड़की की तरफ इशारा करके) यह खिड़की वाली कोठरी महन्त के होई। तब्बे एहमा मेहरारू और

पलँगा देखन रहा। दादा, जस मजा आजकल पण्डा, महन्त, पुजारी, बैरागी काटत हैं और फोकट के माल उड़ावत हैं, तस केकरे भाग में है ? बस, यह मन्दिर है।

शक्कीमल—(छिपी जगह) अरे ! यह साला मेरी खिड़की की तरफ़ इशारा करके आज भी दिल-ही-दिल कुछ मनसूबा गाँठ रहा है। बस, मालूम हो गया। यही वह बदमाश है, जो मेरे घर के भीतर आता जाता है। इसी साले की यह टोपी है। भीतर बन-ठन कर छैला बनकर मेरे पलंग पर बैठता है और बाहर साला गँवार बन कर चक्कर लगाता है, जिसमें लोग उसकी बदमाशी भांप न सकें। अच्छा बचा, आज मैं अपनी हरामजादी बीबी की जरूर ही नाक काट लूँगा। तब आना अपनी नकटी को देखने।

भोंदू—(उसी तरह) जब यू मन्दिर है, तो हीयां तो झूठे ठाड़ हन। चली जब ताईं देवीजी के दरसने कर आईं। दरवाजा तो खुला हैइए है।

(दरवाजे की तरफ जाता है)

शक्कीमल—(अपनी जगह पर बेताबी की हालत में।) अरे ! अरे ! यह हरामजादा तो मेरे घर की तरफ चला। हाय ! हाय ! क्या करूँ ? कुछ नहीं बस आज दोनों को मार डालूँगा। चलो बचा आगे-आगे पीछे-पीछे मैं भी आता हूँ।

भोंदू—तीन हाथ पाँव धोय लेई तब भीतर जाये के चाही। वह बम्मा है।

(द्वार पर से लौटकर बाहर जाता है)

शक्कीमल—(अपनी छिपी जगह से बाहर आकर) साला चला गया। अच्छा जाने दो। मगर वह हरामजादी तो घर में है। रह बच के कहाँ जा सकती है? आज तो मैंने जो देखना था खुद अपनी आँखों से देख लिया। अब मैं उससे थोड़े ही दब सकता हूँ, जाते ही उस पर आफत की तरह फट पड़ूँगा, और एक ही बार में उस हरामजादी का काम तमाम कर दूँगा। (दरवाजे की तरफ गुस्से में जाना चाहता है) मगर वह साला तो फिर आ रहा है। ओ हो! साला हाथ मुह धोकर खूबसूरत बनने गया था। अच्छा आओ। तुम्हारी मौत ला रही है तो मैं क्या करूँ?

(शक्कीमल भागकर फिर अपने छिपने की जगह पर जाता है। भोंदूराम आता है और बेधड़क शक्कीमल के द्वार के भीतर कदम रखता है। वैसे ही शक्कीमल दौड़कर आता है और इसे हाथ पकड़ कर बाहर घसीटता है)

भोंद—अरे! अरे! हमका हाथ पकड़ के काहे बाहर करत हो? हमहूँ का भंगी चमार होई?

शक्की—नहीं आप ब्राह्मण देवता हैं। बदमाश कहीं का, भीतर क्या करने जा रहा था?

भोंद—देवीजी के दरसन करे।

शक्की—मेरी ही आँखों के सामने? पहिले देवता जी को तो अपने बलिदान की भेंट चढ़ाओ।

भोंद—जान गएन। बिना कुछू पाये तू हमका भीतर जाए न देहो। यही लिये इतना टररात हो। हम तोहार हक नाहीं मारा चाहित है। मुल जो सोझे-सोझे मांगो और हमार कुछू काम करो तो हमका देतो नीक लागे। जस ऊ

टोपिया लिये ठाढ़ हो बइसे हमार यह जूता रखाओ। जब भीतर से हम बहिरे आइब तो जौन हमार खुसी होई तौन दे देब। मुल जो टररइहो तो दमड़ी न देब। हमका देहाती न जानो। मथुरा जी में बड़े-बड़े चौबे लोगन का ठीक कै दीन है। उनके आगे तू भला कौने खेत के मुरई हो ?

शक्की—पाजी, बदमाश, कमीना, उल्लू का पट्ठा ! तू भीतर जाए और हम तेरा जूता रखाएँ।

(मारने को झपटता है और भोंदू उसका हाथ पकड़ लेता है और महरिन आती है)

महरिन—(इन दोनों से छिप कर घर के भीतर जल्दी से जाती हुई) अरे ! यह तो यहाँ मौजूद हैं। मगर लड़ क्यों रहे हैं ? दारू पीये हैं क्या ? जाकर बहू जी को खबर कर दूँ।

(भीतर जाती है)

भोंदू—बस। मुँह सम्हाल के बोलो।

शक्की—तेरी ऐसी तैसी—

(पार्वती झाड़ू लेकर निकलती है और आते ही शक्कीमल की झाड़ू से खबर लेती है। शक्कीमल के हाथ से भोंदू छूट जाता है और टोपी गिर पड़ती है)

भोंदू—(टोपी उठाकर अपना जूता पहनता हुआ) अरे ! यह टोपिया वही होय। भले मिल गई। अब भाग चलो।

(चल देता है)

पार्वती—रात-रात भर तू अब इस तरह गुलछर्रे उड़ाने लगा और अबतक तेरा नशा न उतरा।

शक्कीमल—ठहर चुड़ैल। आज तुझे पकड़ा है। आज भी तू क्या टर्राकर हमसे बचना चाहती है। बोटी-बोटी काटकर कुत्तोंको खिला दूँगा। पहिले जरा अपने उसको तो देख ले, तब मुझसे बोल। (गोंदूको चारों तरफ देखता हुआ) अरे! चला गया। हाय! हाय! और साला टोपी भी ले गया।

पार्वती—(फिर मारती हुई) बकता क्या है? क्या नशा बहुत ज्यादा चढ़ा हुआ है? रह, मैं तेरा नशा अभी उतारे देती हूँ।

(फिर मारती है)

शक्कीमल—हाय! हाय! यह तो फिर टर्राने लगी। उसको भी भगा दिया और अब मुझको मारने लगी। अरे! अरे! जरा रोक अपना हाथ, तब बताऊँ।

पार्वती—(हाथ पकड़कर शक्कीमलको घर के भीतर ले जाती हुई) बतावेगा क्या अपना सर? भीतर चल तो रातभर घूमने का मजा चखाऊँ। आवारा, पापी, कुकर्मी कहीं का।

(घर के भीतर लेजाकर दरवाजा बन्द कर देती है)

[पटाक्षेप]

अंक—३

दृश्य १

सड़क

(रामदास का आना)

रामदास—न जाने भोंदुआ कमबख्त कहाँ चला गया। मैंने उसे उसी जगह रुकने के लिये कहा था। मगर वहाँ उसका पता नहीं। अब क्या करूं? किस तरह इस खतको अपनी प्यारी के पास पहुँचाऊँ? यह खत लेकर अकेले वहाँ घूमने की मेरी हिम्मत नहीं पड़ती। वह लो, भोंदुआ वह आ रहा है। (भोंदू आता है) क्यों बे, मैंने तुझे वहाँ इन्तजार करनेको कहा था कि इधर-उधर घूमनेको?

भोंदू—अरे! सरकार भले आफत में फँसाय गयो रहा। लो आपन टोपिया लो।

रामदास—अबे, यह कैसे पा गया?

भोंदू—यू पूछ के का करब? कउनो हिकमत से हम तो ले आएन। मुल सरकार अब ओहर कदम न राख्यो।

रामदास—क्यों?

भोंदू—नाहीं सरकार हूआँ के पण्डवा बड़ा बदमास होय। सार बात-बात में गारी देत है।

रामदास—पण्डा?

भोंदू—हाँ, पण्डा; अरे ! वही होए जौन आपकेर करिहाँव तोड़िस रहा। जब टोपिया चीन्हेन तब ओका जानेन। पहिलवाँ नाहीं चीन्ह पायेन रहा। ओह से कहा कि तू तनी हमार जूता रखाओ तो सार बहुत चिटका और मन्दिरवा में हमका नहीं जाय दिहिस।

रामदास—अबे, कैसा मन्दिर, कैसा पण्डा ? क्या बकता है ?

भोंदू—हो लेयो ! आपे तो हमका मन्दिर बताय गएन रहा। अरे वही, जहाँ आप अब्बे टहरत रहेन और जहाँ आपके करिहाँव टूट रहा। और जौने खिड़की में से एक मेहरारू कूड़ा फेकिस रहा तौन वही पण्डवा के कोठरी होय। सार कयू भगतिन राखे है।

रामदास—अबे, क्या तूने उसे कोई सचमुच मूर्ति पूजनेवाला मन्दिर समझा ?

भोंदू—अउर नाहीं तो का ? तब्बे तो हम हाथ-पाँव धोय के ओहमां दरसन करेजात रहेन। वैसे तो ऊ सार कमर-तोड़वा फाट पड़ा।

रामदास—धत्तेरे की ! उल्लू कहीं का ! आ हा हा हा ! आ हा हा हा ! अजब बेवकूफ है तू। आ हा हा हा !

भोंदू—अरे ! उल्टे हमही का बेवकूफ बनावत हैं। अपने तो वह का मन्दिर बताइन अउर अब हँसत हैं। यह देखो—ही ही ही ही हमका नाहीं नीक लागत है।

रामदास—अबे, वह मूर्ति पूजनेवाला मन्दिर नहीं है। बल्कि वह हमारे पूजने के लिये मन्दिर है। क्योंकि उसमें हमारी प्राणेश्वरी निवास करती है।

भोंदू—हां, हां, परमेसरीदेवी के असथान होय, हम समझित है।

तब्बे तो दरसन करे हमहू जात रहेन। एहमा कौन बुराई कीन, जौन आप ही ही ही ही करित हैं।

रामदास—फिर वही बात? बचा मालूम होता जब खोपड़ी टूटती। ईश्वर न करे किसीको किसी गवाँर से पाला पड़े। आ हा हा हा! मन्दिर समझकर किसी के घर में आप बेधड़क घुसने चले थे। आ हा हा हा!

भोंदू—सरकार, गंवार-संवार सब कुछ कही। मुल ही ही ही ही न करी। हमरे देहमां आग लागत है।

रामदास—तूने काम ही ऐसा किया कि बिना हँसे नहीं रहा जाता। अबे, वह वैसा मन्दिर नहीं है, जैसा तू समझता है। बल्कि वह घर है, और मन्दिर के असली माने भी घर ही है।

भोंदू—तब काहे ओहका आप देवीजी के असथान बतायेन?

रामदास—यह तो मैं हमेशा ही कहूँगा। जिसमें हमारी प्यारी रहे, वह हमारे लिये पूज्य स्थान तो होगा ही।

भोंदू—प्यारी रहे? अरे! अब्बे तो आप कहेन हैं कि बहमा देवीजी निवास करत हैं।

रामदास—अबे बेवकूफ, वही मेरी प्यारी ही मेरे पूजने की देवी है। वही, जो अपनी नौकरानी के साथ गंगास्नान से लौटती हुई दिखाई पड़ी थी।

भोंदू—अरे वही टिटहरी अस छोकड़िया का तो आप देवी नाहीं कहित है?

रामदास—हाँ, वही। मगर खबरदार, जो उसे टिटहरी ऐसी छोकड़ी कहेगा। जबान पकड़ के खींच लूँगा।

भोंदू—हाय करम! आ हा हा हा! राम राम! ओहका आप देवी कहत हैं। हाय! हाय! बिलाय गयो सरकार। आ हा हा हा!

रामदास—चुप बदमाश। देवी तो हइ है वह। हँसता क्यों है?

भोंदू—आपके अकिलपर आ हा हा हा! मेहररुवन के देवी कहत हैं। हे राम! लाजो नाहीं आवत है। आ हा हा हा!

रामदास—फिर नहीं मानता। अब जो हँसेगा तो बिना मारे छोड़ूंगा नहीं।

भोंदू—तब आप काहे हँसत रहेन? अब हमार पारी आवा हमहू हँसित है। आ हा हा! धरम सास्तर तो कहत हैं कि चूना, चमार और मेहरारू बिना मारेपीटे ठीक नाहीं रहत हैं। और यह मेहरारू का देवी कहिहैं। ओका पुजिहैं। हे राम! हे राम! बिलाय गयो सरकार। मर्द होय के मेहररुवन के गोड़े गिरिहैं। कहत लाजो नाहीं आवत है। नहके दइउ आपका मर्द बनाइन। आ हा हा हा!

रामदास—(भोंदू का कान पकड़ता है) फिर हँसेगा? फिर बकेगा?

भोंदू—अरे! बाप रे बाप! बहुत पिरात है। अब्बे रोयें लागब तो आपका घन्टन चुपावत लागी।

रामदास—(भोंदू का कान पकड़े हुए) अब तो मेरा कहना मानेगा? जो कहूँगा, वही करेगा?

भोंदू—हाँ, हाँ, वही करब।

रामदास—अच्छा तो यह ले खत। इसको ले जाकर उसी मकान के आस पास चक्कर लगाना। जब उसकी महरिन, वही औरत जिसने कूड़ा फेंका था, उस घर से बाहर निकले तो उससे चुपचाप मिलना, उसे एक रुपया देकर यह खत देना, और हाथ जोड़कर कहना कि इस खतको चुपचाप मेरी देवीको दे दे। उन्हींको जो उस दिन उसके साथ थीं। समझा।

भोंदू—समझेन तो। मुल हम कौनो मेहरारू के हाथ नहीं जोड़ सकित है। और मेहरारू कौन, ऊ हरामजादी जौन मूड़े पर कूड़ा फेकिस रहा।

रामदास—हाथ न जोड़ना, न सही। मगर इस तरह कहना जिससे वह उन्हें यह खत चुपचाप दे दे।

भोंदू—हाँ, यह होय सकत है। मुल ऊ महरिन होय यू कसस आप जानेन ?

रामदास—उसके रंग ढंग से। अच्छा ले रुपया, अब जा।

भोंदू—अऊर ऊ छोकड़ियो वही में रहत है ?

रामदास—अबे जहाँ पैर होगा वहीं तो सर भी होगा कि नहीं ? मगर तूने फिर उसे छोकड़ी कहा ?

भोंदू—भूल गएन। देवीजी, हाँ देवीजी। मुल हमार नाहीं आप केर। अच्छा जाइत है। राम राम।

(दोनों का दो ओर प्रस्थान।)

[पटाक्षेप]

—o—

दृश्य—२

शक्कीमल के मकान के सामने

(शक्कीमल नंगे बदन खाली धोती पहने हुए)

शक्कीमल—(अकेला) बहादुरी किस चीज में होती है ? आदमी में नहीं बल्कि हथियार में। तभी तो कोई कैसा ही बहादुर क्यों न हो मगर बिना हथियार के वह भींगी बिल्ली से भी बदतर है। इसी तरह बात की सचाई भी बात में नहीं होती, बल्कि उसके सुबूत में। इसीलिए लाख सच्ची बात हो, आँखों से भी देखी हुई हो, मगर बिना सुबूत के एक दम झूठी हो जाती है। मेरी हरामजादी बीबी जैसी है, वह मैं दिल में अच्छी तरह जानता हूँ। मगर बिना सुबूत के मैं उसका कुछ कर नहीं पाता, और उलटे मैं ही मार खा जाता हूँ। बदमाशी करती है वह, और मारा जाता हूँ मैं। क्यों ? बस सुबूत की कमजोरी से। इसीलिए मैं बौखला जाता हूँ और वह बाजी मार ले जाती है। सुबूत में एक टोपी हाथ आ गई थी। मगर उसके झूठे सुबूत के आगे इसकी किरकिरी हो गई। इस दफे मैंने उस बदमाशको भी पकड़ लिया था, मगर वह हरामजादी ऐसी चाल चल गई कि वह भी भाग गया और अपनी टोपी भी ले गया। उसी की थी, तभी तो ले गया। सब सुबूत ही सफाचट हो गये। फिर क्या करता ? बे हथियार के सिपाही की जो हालत दुश्मन

के खीमे में होती है, वह मेरी हुई। कपड़े तक सब मेरे छीन लिये गये, और मैं घर से बाहर निकाल दिया गया। अब इस शक्ल में कहाँ जाऊँ ? अरे ! वह हरामजादा तो फिर इधर ही आ रहा है। सालेको जरा देर भी चैन नहीं पड़ता। अच्छा, जरा छिपकर इसका तमाशा देखूँ तो बताऊँ।

(छिप जाता है और भोंदूराम आता है

भोंदू—आय तो गएन मुल कमरतोड़वा फिर न कहूँ भेटाय जाय।

(महरिन का दरवाजा खोलकर निकलना)

महरिन—(भीतर की तरफ मुँह करके) बहूजी, देखिये कहीं दूध उबल न जाय। मैं जाती हूं बाजार। (सामने की तरफ मुँह करके मनमें हिसाब लगाती हुई एक तरफ चलने लगती है) दो पैसे का धनिया, दो आने का पान, चार पैसे की इलायची।

(सोचने लगती है)

भोंदू—वाह रे तकदीर, हमरे अउते महरिनिया निकल पड़ी अउर इहरे आवत है। मुल कसस मुलकारी ? एक हाथमें चिट्ठी अउर एक हाथ में रुपया लेके दिखाई तो आपे टोकी।

(इस तरह खत और रुपया दिखाता है, मगर महरिन नहीं देखती)

महरिन—(भोंदू को बिना देखे हुए) चार पैसे का और कौन सा सौदा बताया है, याद नहीं पड़ता। पूछ आऊँ।

(लौटकर फिर मकान के भीतर जाती है)

शक्की—(अलग अपनी छिपी जगह से) यह हरामजादा खत और

रुपया क्यों दिखाता है। ओहो! समझ गया। इसे वह जोरू के पास महरिन के हाथ भिजवाना चाहता है।

भोंदू—ऊ तो घर में घुसर गई। अच्छा यही रास्ता तो आई। तनी और पीछे हट के आसरा निहारी। यहाँ न ठिकाई।

(लौट जाता है)

(महरिन मकान से निकलती है)

महरिन—अब इधर से कौन जाए। (दूसरे रास्ते से जाती है)

शक्कीमल—महरिन तो चली गई, मगर वह उसका खत लेकर आएगी जरूर। दरवाजा खुला हुई है, इसलिए दरवाजे की आड़ में छिप रहूँ। जैसे ही वह खत लेकर भीतर जाने लगे, वैसे ही मैं उसे ड्योढ़ी में उससे छीन लूँ। वरना जहाँ वह आंगन में पहुँची फिर वह खत मेरे हाथ नहीं लग सकता।

(जाकर अपने मकान की दरवाजे की आड़ में छिपता है)

(भोंदू आता है।)

भोंदू—समुरी अबताई नाहीं दिखाई पड़ी। दुबारा हालत है। ओहो! समुझ गएन। हम जानत रहेन कि हमका न देखिस होई। मुल भइया मेहररुअन के चार आँखी होत है। एक से हँसत हैं, एक से रोवत हैं, एक से देखत हैं और एक से मतलब ताड़त हैं। अउर सब एक लागे। तब्बे तो ऊ बिना आँख उठाए हमार मतलब जान के तुरन्ते लौट पड़ी। जेहिमा हम रास्ता मां नाहीं ओसे दुआरे पर भेंट करी। यही लिए जानों ऊ हुवाँ हमार आसरा निहारत है। (द्वार पर जाकर) महरिन, ओ महरिन!

शक्की—(आड़ से) धीरे से बोलो। लाओ, चुपके से भीतर फेंक दो।

भोंदू—वाह! महरिन तू हमार मतलब जानो पहिलवें जान गय रहा। तब्बे लौट के हीयां ठाड़ हौ।

शक्की—(आड़ से) हाँ।

भोंदू—अच्छा बताओ कौन चीज फेंक देई?

शक्की—(आड़ से) चिट्ठी

भोंदू—बस, बस, ठीक है। बाहरी महरिन! मुल जानत हो केकरे लिये है।

शक्की—(आड़ से) देवो जी के।

भोंदू—बस, बस, बस, अब कुछू कहे सुने के जरूरते नाहीं है। मुल चुप्पे से दीहो। कोई जाने न पावे।

शक्की—(आड़ से) अच्छा।

भोंदू—(अलग) वाह! वाह! कामो बन गवा अउर रुपयो नाहीं देवे के पड़ा।

(जाता है।)

शक्की—(बाहर निकलकर) हरामजादा, सूअर का बच्चा कहीं का। जी तो बहुत चाहता था कि दोनों हाथों से तेरी खोपड़ी पकड़कर चौखट पर पटक दूँ। मगर अफसोस! इस खत को लेने की खातिर मुझे दम साधे छिपा खड़ा रहना पड़ा। हमारी औरत के पास खत भेजता है। साला पढ़ा लिखा भी है और ऊपर से कैसा गँवार बना हुआ है! इस साले में सब गुन है छटा हुआ बदमाश है। देखूँ हरामजादा लिखता क्या है? (खत पढ़ता है)—मेरी प्राण-प्यारी, मेरी हृदयेश्वरी।' यह शब्द, और यह पाजी हमारी जोरू को लिखे।

हाय ! हाय ! गले में फांसी लगाकर एकदम मर जाने की बात है। (पढ़ता हुआ)—"मैंने जिस दिन से तुम्हें देखा है उसी दिन से तड़प रहा हूँ। बे मौत मर रहा हूँ।" —मगर साला अबतक मरा नहीं। अब भी मर जाय तो अच्छा है।—"रातो दिन तुम्हारी गलियों में खाक उड़ाता हूँ। ईश्वर के लिये एक दफे तो खिड़की पर आकर दर्शन दो।" उफ़ कलेजे में गोली चल गयी। आँखों में खून उतर आया। अब नहीं पढ़ा जाता उस हरामजादी का पहले सर काट लूँगा, तब पढ़ूँगा। अब यह पक्का सुबूत मिल जाने पर भी वह भला मेरी आँखों में धूल झोंक सकती है ? उसकी ऐसी-तैसी। उसकी छाती पर चढ़के अभी उसके कलेजे का खून पिये लेता हूँ। कहाँ है हरामजादी, सुअर की बच्ची,.....।

(गुस्से में बेताब होकर घर के भीतर घुसता है और खत उसके अनजाने घर के बाहर ही उसके हाथ से गिर जाता है)

(रामदास का आना)

रामदास—देखूँ, मेरे खत का क्या असर पड़ा ? उम्मीद तो है अभी खिड़की पर दर्शन मिलेगा। अररररर ! मेरा खत तो यहाँ पड़ा हुआ है। क्या भोंदु आ रुपया खुद लेने के लिये इसे यहीं फेंक कर चला गया। जाते ही साले की खबर लेता हूँ।

(खत उठा कर चल देता है)

(शक्कीमल बदहवास घर से निकलता है)

शक्की—अरे ! वह हरामजादी तो उलटे गुझी को काटने दौड़ती है। देख हरामजादी, सुबूत भी देख। मैं झूठ थोड़े ही कहता हूँ।

(इधर उधर जमीन पर खत ढूँढ़ता है और पार्वती गुस्से में भरी बाहर आती है)

पार्वती—तू क्या खा के सुबूत देगा। यह देख अपनी करतूत का बोलता हुआ सुबूत, जो तेरी जेब में मिला है।

(सुशीला का खत दिखाती है)

शक्की—अरे! जा वह डाक्टर साहब का नुसखा है। चली है मुझसे चाल चलने। इस दफे मैं तेरी धौंस में आने का नहीं। ज़रा वह खत मिल जाय तो बताऊँ।

(खत ढूंढ़ता है)

पार्वती—(दोहथ्थड़ मारकर) यह नुसखा है कि तेरी नानी का खत, जरा कान खोल के सुन—"मेरे अनोखे चाहनेवाले।" ऐसे चाहनेवाले को चूल्हे में झोंक दूँ!

शक्की—अररररर! यह क्या?

पार्वती—(पढ़ती हुई) "तुम मेरे पीछे क्यों पड़े हो? आखिर मेरे लिये बीमार बन कर यहाँ तक आए।" वहाँ क्या करने गया था? सीधे जहन्नुम क्यों नहीं चला गया? "ईश्वर के लिए तुम जाओ। मुझे अपने हृदय को वश में करने दो। मुझे मारने के लिए मेरा दुर्भाग्य ही क्या कम था, जो तुम उसकी मदद के लिये आये? तुम्हारी मौजूदगी मुझे और भी बरबाद कर रही है।" अब बोलता क्यों नहीं? हक्का ऐसा मुँह बाये क्यों खड़ा है?

शक्की—यह कैसी आफत फट पड़ी? मेरी तो अक्ल ही गुम हो गई। यह तो उल्टे लेने के देने पड़ गए। अब क्या करूँ?

पार्वती—(मारती हुई) मैं कुढ़ कुढ़ कर मरूँ और तू इस तरह

रंगरलियाँ उड़ाए, और उलटे मुझ पर उंगली उठाए कि मैं खराब हूँ। क्यों ?

शक्की—हुई है। इसमें भी भला कुछ शक है। और मैंने खुद अपनी आँख से देखा है, उसमें 'प्राणप्यारी' लिखा हुआ था।

पार्वती—(मारती हुई) चुप बेशरम। तेरी जबान कट कर नहीं गिर जाती ?

शक्कीमल—अरे। जरा दम लेने दे। अभी बदन का दर्द अच्छा नहीं हुआ है। हाय ! हाय ! सच बोलने का यह नतीजा। न जाने किस बेवकूफ पण्डित ने मेरी शादी कराई थी कि सारा दिन मार ही खाते गुजरता है।

पार्वती—सच है तो साबित कर। नहीं तुझे खड़े-खड़े निगल जाऊंगी।

शक्कीमल—(अलग) बस यहीं पर तो मेरा टट्टू अड़ गया है। नहीं तो मैं भला इससे दब सकता था ? अबतक इसकी गर्दनपर खोपड़ी दिखाई न देती।

पार्वती—अब बगलें क्या झांकता है ? बता, यह किस नानीने लिखा है ?

शक्कीमल—नानी नहीं नाना ने लिखा है। डाक्टर साहबने लिखा है।

पार्वती—फिर वही चाल ? और हमसे ? (मारकर) डाक्टर साहब तुझे लिखेंगे, 'मेरे अनोखे चाहनेवाले।' बोल ?

शक्कीमल—जो जी में आवे वह लिखें। मुझे तो नुसखा कहके दिया। मैंने उसे चलते वक्त जेब में रख लिया।

खोलकर देखा भी नहीं कि कमबख्तने नुसखा लिखा है या मेरी मरणकुण्डली लिखी है।

पार्वती—अपनी चाल से तू बाज न आएगा। ले, दोनों आंखें फाड़ के देख कि यह नुसखा है या तेरे कुकर्मों का सुबूत। (खत सामने फेंक देती है) जा, जहाँ जी में आवे अपना मुँह काला कर। खबरदार, अब मेरे सामने न आना।

(घर में जाती है और द्वार बन्द कर लेती है)

शक्कीमल—(खत उठाकर देखता हुआ) अरे! इसमें सचमुच वही बातें लिखी हैं, जो अभी वह पढ़ती थी। धत्तेरे डाक्टर की ऐसी-तैसी। यह तूने कबकी दुश्मनी निकाली? तेरी ही वजह से मेरी जीती हुई बाजी पलट गई। वरना आज यह शेर भला कहीं भीगी बिल्ली बन सकता था?

(डाक्टर का आना)

डाक्टर—अरुखा! मुंशी शक्कीमल, आदाबअर्ज है। आइए, चलिये टहल आवें। रास्ते में खड़े क्यों हैं?

शक्कीमल—ओ हो! आप हैं? बस, खबरदार बोलियेगा नहीं, वरना फौरन मारपीट हो जायगी।

डाक्टर—क्यों-क्यों, खैरियत तो है?

शक्कीमल—जैसी है वैसी खैरियत आपकी भी बना दूँगा। डाक्टर नहीं डाक्टर के दुम बने हैं।

डाक्टर—मालूम होता है ताकत की दवा से मिजाज में बहुत ज्यादे तेजी आ गई है।

शक्कीमल—जी हां! आपका नुसखा ही ऐसा था। देखिये-देखिये, आँख खोल के देखिये।

(खत देता है)

डाक्टर—(अलग) अरे ! यह मैं क्या देखता हूँ ? यह तो सुशीला की लिखावट है। हाय ! हाय ! यह दगाबाज क्या मेरी आबरू लेने की नीयत से मेरे यहाँ गया था ? और मुझे अपनी ही आँखों से जलील करने के लिये यह खत दिखा रहा है। हाय ! हाय ! मैं जीते ही मर गया। सारी इज्जत खाक में मिल गई।

शक्कीमल—(अलग) अब बचाको कुछ जवाब नहीं सूझ पड़ता। यही जी चाहता है कि, आव देखूं न ताव, बस एकबारगी मारना शुरू कर दूँ।

डाक्टर—अरे हत्यारे। मैं तुझे ऐसा नीच नहीं समझता था।

(शक्कीमलको मारता है)

शक्कीमल—हाय ! हाय ! कहां मैं इसे मारनेको सोच रहा था और कहां यही मुझे मारने लगा। हाय ! हाय !

(भागता है और डाक्टर उसका पीछा करता जाता है)

[पट परिवर्तन]

———

दृश्य—३

(डाक्टर का मकान)

गाना

सुशीला—जियरा मोरा, माने ना, मनाय मैं हारी।
मनाय मैं हारी, समझाय मैं हारी। जियरा—
मन तो कहे अपनी करो,
लाज कहे नाहीं।
किसकी सुनूं किसको नाहीं,
बिपत पड़ी भारी। जियरा मोरा माने ना।

सुशीला—हाय! जितना हो सका दिलको समझाया, मगर इसकी बेकली बढ़ती ही जाती है। अजब संकट में प्राण हैं। मैंने ही तुमको यहाँ से चले जाने के लिये लिखा था। और वैसे ही, सुना, तुम चल भी दिये। मैंने फिर इधर झाँका भी नहीं। और मैं ही तुम्हारे लिये तड़प रही हूँ। मैं ही तुम से भागना चाहती हूँ, और मैं ही तुमको देखना भी। आँखें तरस रही हैं। फिर भी गंगास्नान को नहीं जाती कि कहीं तुम न मिल जाओ। क्या करूँ? इस काट-पेंच में पड़कर दिल की जैसी हालत है, वह दिल ही जानता है। मालूम होता है, तुम्हें मेरे खतने सम्हाल दिया। क्योंकि फिर तुम नहीं आये। मगर मुझे कौन सम्हाले, यह तो बताओ।

(डाक्टर का आना)

डाक्टर—सुशीला ! तू पैदा होते ही मर जाती, तो अच्छा था। चल दूर हो मेरे सामने से, कुल-कलंकिनी ! मैंने तेरे लिए क्या-क्या नहीं किया। और इसका नतीजा यह ?

(नुस्खेवाला खत सामने फेंकता है)

सुशीला—(खत उठाकर) हाय ! गजब ! यह क्या हुआ।

(जाती है)

डाक्टर—(अकेला) अफसोस ! जिस बात पर मैं अकड़ता था, उसी में पछाड़ खा गया। मैं विधवा-विवाह करनेवाले खान्दानों पर नफरत की उँगली उठाता था। उनकी जाति-भ्रष्ट बताकर उनके यहाँ पानी पीना भी पाप समझता था। क्योंकि मैं जानता था कि मुझपर कभी ऐब की उँगली नहीं उठ सकती, और न मुझे कभी उन भ्रष्टों में मिलना पड़ेगा। उसीकी सजा ईश्वरने आज यह दी। कहाँ मैं इतना सर उठा के चलता था, और कहाँ अब मुँह दिखाने लायक भी नहीं रह गया। अब जाना कि मैंने भूल की और बड़ी सख्त भूल की। जिन खयालात में पड़कर मैंने सुशीला का पुनर्विवाह नहीं किया वह गलत निकल गये। मैं समझता था कि जब विदेश में लाखों स्त्रियाँ आजन्म कुमारी रह सकती हैं, तो हमारे देश की विधवा युवतियोंको सदा काम-धन्धे में लगाये रखा जाय, तो इनके भी जीवन निष्कलंक कट सकते हैं। मगर यह तुलना ठीक नहीं है। क्योंकि, यों मैं चाहे एक जगह दिनभर बैठा रहूँ, मगर, अगर मुझे कहीं मजबूरन बैठना पड़े, और उसपर यह पाबन्दी लगा दी जाय कि खबरदार उठना मत, तो पांच ही

मिनट में मेरी बुरी दशा हो जायगी। और मेरी अधीरता इस पाबन्दीको चोरी छिपे जिस तरह मुमकिन हो तोड़ देने के लिए मुझे व्याकुल कर देगी। इसी तरह विधवा-विवाह की मनाई भी, हमारे यहाँ की विधवा युवतियों के हृदय में काँटों की तरह सदा चुभा करती है। उनको लाख यत्न से रखने पर भी वह अपनेको अभागिनी ही समझती है। इसलिए जमाने का रङ्ग देखते हुए अब इस मनाईको दूर ही करने में भलाई है। वरना जिस समाज की स्त्रियों के हृदय में, चाहे वह विधवा हों या ब्याही, अशांति रहेगी, उस समाज के मुँह में कालिख लगेगी ही। आज सुशीला का यह हाल है, तो कल ईश्वर जाने क्या हो ? अब जाना कि मुझसे वही लोग हजार गुना अच्छे हैं, जिनपर मैं थूकता था। इस बेइज्जती से वह बदनामी लाख दर्जे अच्छी। मगर सुशीलाको किससे ब्याहूँ ? विधवा के साथ ब्याह करने के लिए किसी का राजी होना भी तो मुशकिल है।

(कम्पाउन्डर का घबड़ाये हुए आना)

कम्पाउन्डर—हुजूर ! गजब हो गया ! सुशीलाने जहर खा लिया।

डाक्टर—हाय ! हाय ! यह कौन-सा अनर्थ हुआ ? या ईश्वर ! कुशल कर। क्या करूँ ?

कम्पाउन्डर—आप डाक्टर होके घबड़ा जायँगे तो बेचारी का बचना मुशकिल है।

डाक्टर—हाय ! जब अपने ऊपर पड़ती है, तो डाक्टरी वाक्टरी कुछ नहीं सूझती।

कम्पाउन्डर—चलिये उसको कै कराइये।

(डाक्टर का हाथ पकड़कर भीतर ले जाता है)
(महरिन का आना और उसके पीछे पार्वती और मुहल्ले की दो तीन औरतें आती हैं)

महरिन—सुना, डाक्टर बाबू की लड़कीने जहर खालिया। हाय! हाय! यह क्या किया? आइये, जल्दी आइये। नहीं देखनेको भी न मिलेगी।

(सबको साथ लिये हुए भीतर जाती है)
(शक्कीमल का आना)

शक्कीमल—मैं इस मकान में हरगिज नहीं आता। मगर महरिन हमारी औरतको यहाँ लेकर क्यों आई? यही देखने आया हूँ।

(चारपाई पर सुशीला भीतर से लाई जाती है। डाक्टर कम्पाउन्डर और महरिन का आना और बाकी औरतों का आड़ से छिप-छिप कर झांकना)

डाक्टर—(शक्कीमल से) आप यहाँ क्या करने आए? अपनी बदमाशी का नतीजा देखने? देखो जी भर के देखो!

शक्की—मजे में लेटी तो हैं। बदमासी इसमें हमारी क्या है? क्या फिर मारपीट करनेका इरादा है?

डाक्टर—लेटी है कि इसने जहर खा लिया है!

शक्की—अच्छा किया? विधवा थी ही छुट्टी मिली।

सुशीला—ठीक है। मेरा मरना ही अच्छा। विधवाओं के लिए यह संसार नहीं है।

डाक्टर—हाय! मौत की घड़ी में भी इसके दिल में वही कांटा चुभ रहा है। विधवाओं के हृदय से सब खयालात दूर हों, मगर यह खयाल मरते दम भी नहीं अलग हो सकता। मैंने इस बात को जाना तो कब जाना, जब इसकी दशा यह है! हाय! अब क्या करूँ? ऐ देश-वासियों! अब तो आँख खोलो।

(महरिन और कम्पाउन्डर सुशीला को दवा पिलाना चाहते हैं)

महरिन—लो बहिनी, इसे पी लो।

सुशीला—हाय! हाय! मैं तो खुद ही मर रही हूँ। फिर मुझे लोग इस तरह तंग करके क्यों मारते हैं?

डाक्टर—नहीं, नहीं दवा न दो। कै करते करते इसकी दशा ऐसी हो गई कि मुझसे नहीं देखी जाती। हाय! हाय! आँखें बन्द हो रही हैं।

(रामदास और भोंदू का आना)

रामदास—आदाबअर्ज डाक्टर साहब। माफ कीजियेगा, उस दिन आपको धन्यवाद न दे सका। इसलिए आज सेवा में हाजिर हुआ हूँ।

मगर, (सुशीला को देखकर) अरे! तुम यहां कैसे? महरिन बोलो बोलो इन्हें क्या हुआ है? इन्हें क्यों यहाँ लाई हो? इनकी आंखें बन्द क्यों हैं?

शक्कीमल—(भोंदू को देखकर अलग) यह साला यहाँ भी आया? बस, बस, मालूम हो गया इसीके लिए मेरी हराम-जादी औरत यहाँ आई है। या यही साला सूंघता हुआ चलता है। क्या बताऊँ, बहुत से आदमी हैं, नहीं तो दोनों को बिना मारे नहीं छोड़ता।

रामदास—हाय ! हाय ! महरिन तो कुछ भी नहीं बोलती । अरे डाक्टर साहब, आप ही बताइए इन्हें क्या हुआ है ?

डाक्टर—क्या बताऊँ । इसने जहर खा लिया है ।

रामदास—एँ ! जहर ? हाय ! हाय । मैं लुट गया । जीते ही मर गया ।

शक्की—(अलग) वाह ! वाह ! यह तमाशा देखिए । जहर खाया इसने और असर हो रहा है इन्हें ।

डाक्टर—अरे कम्पाउन्डर जल्दी से मिक्शचर नम्बर पाँच ला । इसकी हालत खराब होती जाती है । जहर असर कर रहा है ।

औरतें—हे परमातमा, हे दीनानाथ कुशल करो ।

कम्पाउन्डर—नहीं, घबड़ाइए नहीं, यह तो कमजोरी के आसार हैं । पेट का सारा पानी निकल जाने से सुस्ती आ गई है । इन्हें ताकत की दवा दीजिए । ठहरिये, मैं एक चीज लाता हूँ ।

(जाता है)

डाक्टर—ठीक है । कमजोरी के कारण बेहोश हो गई है । पंखा झलो, पंखा ।

रामदास—डाक्टर साहब । ईश्वर के लिए इनकी जान बचाइए, मैं आपके हाथ जोड़ता हूँ, आपके कदमों पर गिरता हूँ । आपके इस उपकार का बदला अगर इनके घरवाले न दे सकेंगे तो मैं दूँगा । इसके लिए अगर मेरी जान की भी जरूरत हो तो वह भी आपकी खिदमत

में हाजिर है। मगर इन्हें मौत के मुँह से बचा लीजिए।

भोंदू—जो न अच्छा कर पाओ तो इनहूँ का खबाय दो जो यह खाइस है। छुट्टी मिले।

शक्की—(अलग) वाह! वाह! यह तो आते ही नाटक करने लगा। लड़की किसकी और परेशानी हो किसे?

डाक्टर—आखिर आप इसके लिए क्यों इतने परेशान हो रहे हैं?

भोंदू—जेहमा फिर कमरिया टूटे और का?

रामदास—चुप रह बेवकूफ! मेरा तो दम लबों पर है, और तू अपनी बेतुकी बातों से कलेजे में बर्छियां चला रहा है। डाक्टर साहब, मेरी सारी उम्मीदों का खून हो रहा है। मेरे तमाम अरमानों का गला घुट रहा है, और फिर मैं न परेशान होऊँगा तो और कौन परेशान होगा?

भोंदू—सोझे सोझे काहे नाहीं कहत हो कि हमार एहसे ब्याह करे के मन रहा।

शक्की—मगर लड़की तो विधवा है।

भोंदू—तो का भवा, हमार सरकारो रंडुआ हैं।

डाक्टर—हाय! हाय! तब आप पहले क्यों न मिले?

भोंदू—तो हमें का मालूम रहा कि सहर भरे के बेवा के ब्याह करे के आप ठेका लिये हन।

डाक्टर—शहर भर की विधवाओं से क्या मतलब ? यह तो मेरी लड़की है।

रामदास—आपकी लड़की है ?

भोंदू—राम दे ? तब एका ऊ घरा में काहे राखे हो ?

डाक्टर—किस घर में।

भोंदू—जहाँ यू ससुर कमरतोड़वा रहत है।

डाक्टर—नहीं तो।

शक्की—अबे, जबान सम्हाल के नहीं बोलता। जानता नहीं कि मुझे पहले ही से गुस्सा चढ़ा है।

भोंदू—तो हीयां गुस्सा चढ़त कौन देर लागत है ?

रामदास—(भोंदू से) अबे, चुप रह। मगर महरिन, इनको तो मैंने तुम्हारे साथ देखा था ?

महरिन—हाँ बहिनी का ऐसा मीठा सुभाव है कि मुहल्ले भर की सभी औरतें इनसे लिपटी रहती हैं, और फिर हम पर इनकी बड़ी कृपा रहती है, तभी तो उस दिन सबका साथ छोड़कर हमरे साथ हो ली थीं। परमात्मा इन्हें अच्छा करे। हे महादेव बाबा ! सवासेर लड्डू चढ़ाऊँगी। इनकी जान बचा लो।

रामदास—हाय ! हाय ! तब तो बड़ी भूल हुई।

भोंदू—हाँ, अउर का नहके कमरिया टूट।

(कम्पाउन्डर का आना)

कम्पाउन्डर—सुशीला को नाहक दवा देकर परेशान न कीजिए। मैंने बदहजमी की दवा पर भूल से जहर का लेबिल

लगा दिया था। उसीको यह जहर समझ कर पी गईं।

डाक्टर—धन्य परमात्मा तेरी महिमा। कम्पाउन्डर, तूने भूल तो की, मगर बड़ी अच्छी भूल की।

रामदास—(कम्पाउन्डर से) भाई तुम्हारे मुँह में घी शक्कर। तेरी भूल ने इनकी जान बचा ली।

महरिन—क्या अब कुछ डर तो नहीं है? बहिनी बच गई न?

डाक्टर—हाँ, खाली सुस्ती और घबराहट की वजह से बेहोशी है। अभी होश आया जाता है। (मुँह पर पानी छिड़कता है और दवाइयाँ सुँघाता है)

पर्देवाली औरतें—(आड़ से) धन्य ईश्वर। तूने हम लोगों को जिला लिया।

शक्की—अरे! अरे! यह तो वही टोपी है। अब तक इसका खयाल ही नहीं किया।

(रामदास के सर से टोपी उतारता है, वैसे ही भोंदू शक्कीमल के मुँह पर तमाचा मारता है)

भोंदू—तोरी ऐसी-तैसी। चार मनई के बिच्चे में आबरू उतारत हो। सरयू नाहीं जानत हो कि धरम सासतर कहत है कि टोपी अउर आबरू एकके होय?

शक्की—अरे! मैं मारने की ताक ही में था और इसने धड़ से तमाचा जड़ दिया। ठहर तो जा, गधा पाजी, बदमाश।

डाक्टर—आपही ने तो इसके मालिक के सर से टोपी उतार ली, तो नौकर क्यों न बिगड़े? फिर यह गँवार तो हुई है।

शक्की—इसे आप गंवार समझते हैं! अरे! यह साला छटा हुआ बदमाश है। यह साला यही टोपी लगाकर मेरी औरत को फुसलाने आता है, उससे हंसता बोलता है।

पार्वती—(आड़ से) हाय! हाय! यह क्या बकने लगा। यही जी चाहता है कि लाज शर्म चूल्हे में झोंककर इसके मुँह पर झाड़ू मार दूँ।

भोंदू—ए झूठ बोलिहो तो अभी अउर मारब। हम आज ताईं अपने मेहरारू से तो बातें नाहीं कीन, अउर हम इनके मेहरारू से बोले जाय।

शक्की—झूठा कहीं का। तब मेरी औरत की चारपाई पर यह टोपी कैसे आई?

भोंदू—टोपी खींच के हम ई महरिनिया के मारेन रहा। हमरे ऊपर कूड़ा फेंक दिहिस रहा। टोपिया भीतर जाके पलंगा पर गिरी तो हम का करी।

रामदास—इसकी ताईद तो मैं भी करता हूँ।

शक्की—अररररर! तब तो मुझी से भूल हुई। नाहक इतनी जूतियां उस दिन खाईं।

पार्वती—(सामने आकर) अब अपना मुँह पीट। खुद तो महरिन से छेड़-छाड़ कर रहा था और यहां मुझे बदनाम करना चाहता था। अरे ईश्वर से डर, ईश्वर से।

शक्की—अरे ! कौन छेड़-छाड़ कर रहा था। मैं तो इससे इस टोपी का भेद जानने के लिए इसे पहन कर इसको देखता था।

महरिन—राम ! राम ! तब तो मुझसे भूल हुई। समझने को क्या और समझ गई क्या ? मगर मुझे भला टोपी का भेद क्या मालूम था ? मैं तो इसके, भीतर गिरने के पहले ही कमरे से बाहर हो गई थी।

पार्वती—अच्छा यह न सही। मगर उस दिन तू रात भर कहाँ था, यह तो बता।

शक्की—डाक्टर साहब के अस्पताल में। चाहे पूछ ले। मगर तू अपनी तो कह। मेरी गैरहाजिरी में यह बदमाश मेरे घर देवी जी से मिलने क्यों जाता था ? बताइए देवीजी ?

भोंदू—ए सरयू तू फिर हमार नाव लियो ? का यही हमसे चूक होइ गई जो ताहरे घर का हम मन्दिर समझेन और यही-लिए वोहमा दरसन करै जात रहेन, नाहीं तो हम वोहमा थुकहू तो न जाइत।

शक्कीमल—और प्राणप्यारी वाला खत महरिनको क्यों देने गया था ?

भोंदू—यह इनसे पूछो।

रामदास—बेशक यह मुझ से भूल हुई जो आपके मकानको (सुशीला की तरफ बताकर) इनका मकान समझ कर इनके लिए वह खत वहाँ भेजा। ओहो ! मेरी किस्मत चमकी, बीमारने आँखें खोल दीं।

सुशीला—(आँखें मलती हुई उठ बैठती है) अरे ! क्या मैं अभी तक जीती हूँ ।

(सब औरतें सुशीला के पास दौड़ पड़ती हैं और उसे छाती से लगाती हैं ।)

औरतें—(पारापारी) जुग-जुग जीओ मेरी लाल । मेरी आँखों की पुतली । मेरे घरकी रोशनी ! अरे जरा बच्ची का मुँह धो दो । कैसी सूरत कुम्हला गई !

डाक्टर—उसे घेरे हुए क्यों हो ? अभी होश में आई है । जरा उसे हवा लगने दो ।

शक्कीमल—ओहो ! अब जाना कि मुझसे बड़ी भूल हुई । नाहक शक करके अपने दिलको कुढ़ाया और अपनी दुरगत कराई । (पार्वती से) मगर देख, मेरी सभी बातें आखिर सच्ची निकलीं न, गो जरा उलटी हो गईं ?

पार्वती—तो अपनी समझपर उलटी झाड़ू मार ।

शक्कीमल—अच्छा तो भूल-चूक माफ कर दो । आओ सुलह कर लें ।

पार्वती—जी नहीं, उसीके पास जाइये, जिसका खत लिये आप जेब में फिरते हैं । वही जो नुसखेवाले लिफाफे के भीतर था । सब बातें गलत हों तो हों, मगर यह तो सच है ।

सुशीला—अरे ! वह खत इनके पास कैसे आया ? उसे तो मैं (रामदास की तरफ बताकर) इनके सिरहाने रख आई थी । हाय ! हाय ! बौखलाहट में यह क्या उगल बैठी ? अब क्या करूँ ?

शक्कीमल—(पार्वती से) ले सुन। अब तो तेरे दिल में चैन आया ?

पार्वती—अरे ! तब तो मुझ से भी भूल हुई। खैर ! दोनों पल्ले बराबर हो गये।

शक्कीमल—बराबर कैसे ? मैंने इतनी मार खाई वह ?

मोंद्—ऊ घाता होय घाता।

सुशीला—अफसोस ! मैंने बड़ी सख्त भूल की जो विधवा होकर एक गैर आदमीको खत लिखा और इस भूल को मर कर भी न सुधार सकी !

रामदास—गैर नहीं अपना ही समझो।

डाक्टर—सच तो यह है कि असली भूल मैंने की जो सुशीला का पुनर्विवाह नहीं किया, जिसके कारण इतनी आफतें खड़ी हो गईं। जब दोनों के दिलों में यही बात है, तो मैं भी अपनी भूलको अपने आशीर्वाद सहित इस तरह सुधारे देता हूँ। (सुशीला का हाथ रामदास के हाथ में देकर) लो, तुम दोनों फूलो-फलो, बला से अब समाज मुझपर उँगली उठाये, कुछ परवाह नहीं।

शक्कीमल—अजी, आपने मुझे मारने में भी तो भूल की थी। उसको तो सुधारिये।

मोंद्—अस तो सभै भूल किहिन है तौन ?

डाक्टर—उसके लिये मैं बहुत शर्मिन्दा हूँ। और मेरी तरह सभी लोग अपनी भूलों पर लज्जित होंगे। इसलिए आओ सब लोग मिलकर इस खुशियालो अवसरपर अपनी-अपनी भूल-चूक की माफी मांग लें।

गाना—कोरस

सब—

बस माफ करो दिल साफ करो सब भूल भई सो भई।
जाने दो मैल न राखोजी दिल में हाँ चूक भई सो भई।
सबसे तो हुई भूल,
आँखों में पड़ी धूल,
जो कुछ कि हुआ हो गया सब जाओ उसे भूल।
बस माफ करो—
अपनी-अपनी भूलों की पाई सजा सबने हाँ काफी।
आओ सुधारो हाँ भूल-चूक माँग'माँग माफी।
बस माफ करो, दिल साफ करो—

[पटाक्षेप]

—o—

चोर के घर छिछोर

पात्र

१—सेठ मिठाईराम—मिठाई की दूकान का मालिक।

२—चण्टराम—मिठाईराम का नौकर।

३—कल्लू
४—भल्लू
५—नागू
६—फागू
} चोर।

७—बापू—चोरों का बाप।

८—अकड़दत्तसिंह—एक मुसाफिर।

९—बहँगीवाला।

१०—
११—
} दो डोलीवाले।

चोर के घर छिछोर

अंक १

दृश्य—क

नगर का बाजार

हलवाई की दूकान। दूकान से सेठ मिठाईराम और चण्टराम निकलते हैं। चण्टराम दूकान बन्द करता है, और सेठ मिठाईराम पास-ही खड़े रहते हैं। चण्टराम दूकान की चाभी सेठ मिठाईराम को देता है। दोनों आदमी वहाँ से साथ-साथ प्रस्थान करते हैं।

दृश्य—ख

सेठ मिठाईराम का मकान

सेठ मिठाईराम और चण्टराम बाहर से आकर मकान में जाते हैं।

दृश्य—१

मिठाईराम के मकान का बरामदा

(सेठ मिठाईराम और चण्टराम बरामदे में आते हैं)

चण्टराम—"मालिक, अब तो आप दूकान बढ़ाकर अपने घर भी पहुंच गये। अब मेरा हिसाब कर दीजिये।"

मिठाईराम—"ठहरो भाई चण्टराम, ठहरो। जरा दम तो लेने दो।.....हाँ, क्या कहते हो?"

चण्टराम—"वही, जो तीन रोज से बराबर कहता आता हूँ कि परदेश में रहते मुझे बहुत दिन बीत गये अब नौकरी से छुट्टी दीजिये। (मिठाईरामको अनमनी करते देखकर, उसके बदनपर हाथ रखकर) अजी सेठ मिठाईरामजी; खड़े-खड़े न सोइये, नहीं गिर पड़ेंगे आप।"

मिठाईराम—(चौंककर) "हाँ?"

चण्टराम—"आप जानते हैं, कि साल-भर से मेरा हिसाब नहीं हुआ है। और न मैंने कभी इसके लिए आपको कष्ट दिया है; क्योंकि मेरा इरादा यह था, कि जब कुछ रकम इकट्ठी हो जाये ....."

मिठाईराम—"जरा मेरी पीठ तो खुजला देना।"

चण्टराम—"(मिठाईराम की पीठ खुजलाता हुआ) देखिये, काम करने में कभी मैंने कोताही नहीं की। आपकी दूकान पर मिठाइयाँ भी बनाता था, यहाँ बैठकर उनकी बिक्री भी करता था, और जब हुक्म देते थे, तब खोआ

लगाकर फेरी भी करता था। इसी दिन के लिये कि साल-भर बाद घर जाते समय....."

मिठाईराम—"उधर नहीं, उधर नहीं—गर्दन की तरफ।"

चण्टराम—"(खुजलाता हुआ) मालिक, घर का मोह बहुत होता है। एक-एक पल अब काटे नहीं कटता। अब जल्दी-से आप....."

मिठाईराम—"खुजलाते हो, या सहला रहे हो ?"

चण्टराम—"(जोर से खुजलाता हुआ) सरकार, मेरा हिसाब भी बहुत सीधा है। बारह रुपये माहवार के हिसाब से बारह महीने के एक-सौ चवालिस रुपये हुये....."

मिठाईराम—"अरे ! अरे !! यह तुम्हारा हाथ है या बिल्ली का पञ्जा ? सारी पीठ नोच-खसोट डाली ! पचास दफे कह चुका कि काम करते वक्त मत बोला करो। एक समय में एक ही काम हो सकता है; चाहे खुजलालो, या बातें बनालो।"

चण्टराम—"मगर मैं क्या करूँ सरकार ? जब मैं अपनी कुछ कहने लगता हूँ, तभी आपके खुजली उठती है।"

मिठाईराम—"जब जानते हो, तब जान-बूझकर ऐसी बातें क्यों करते हो ?"

चण्टराम—"अच्छा-अच्छा, बहुत अच्छा मालिक, मुझे नहीं मालूम था कि आप बिना कहे ही मेरा साल-भर का हिसाब चुकता कर देंगे। बात यह है कि....."

मिठाईराम—"अब तो मेरी गुद्दी भी खुजलाने लगी। उफ् ! ओ !"

चण्टराम—"अच्छी बात है, जरा पगड़ी तो सरकाइये। मैं..."

मिठाईराम—"अच्छी बात है ? यह क्या ? मेरी गुद्दी खुजलाये, और तुम कहो अच्छी बात है ! ऐसी नमकहरामी ?"

चण्टराम—"नहीं-नहीं ! बहुत बुरी ! बहुत बुरी !! मैं भूल गया था। जरा पगड़ी तो सरकाइये। मैं अभी ठीक किये देता हूँ। जब मैं अपना दुखड़ा रो रहा था, तभी इस कम्बख्त को खुजलाना था, सचमुच बहुत बुरी बात है। (मिठाईराम की गुद्दीपर तमाचा मारता हुआ) फिर खुजलायेगी ? हरामजादी कहीं की....."

मिठाईराम—"आयँ ! आयँ !! अबे, क्या भंग पिये है ?"

चण्टराम—"जरा चुप रहिये मालिक ! गड़बड़ न कीजिये। नहीं इसकी बे-मौके की खुजलानेवाली आदत न जायगी। हाँ, (मारता हुआ) फिर खुजलायेगी .....?"

(सेठ मिठाईराम बौखलाकर भाग जाता है)

चण्टराम—(मिठाईराम का पीछा करता हुआ) "ठहरिये मालिक ! ठहरिये।"

(जाता है)

दृश्य—ग

सुनसान जंगली रास्ता

कुछ दूरपर नागू-फागू अपनेको पीछे आनेवाले लोगों से छिपाए हुए, पीछे ताक-ताककर आपस में कनफुसकियाँ कर रहे हैं। उनके पीछे थोड़ी दूरपर अकड़दत्त सिंह बंदूक लिये, अकड़ते हुए आते दिखाई दे रहे हैं, और बहँगीवाला बहँगीपर अकड़दत्त सिंह का असबाब लादे चल रहा है। यकायक फागू-नागू की सलाह से—एक तरफ जल्दी-जल्दी जाकर दृश्य से गायब हो जाता है।

पिछले सिरेपर अकड़दत्त सिंह अपने बहँगीवाले के साथ चल रहे हैं। अगले सिरेपर नागू अकेला इन लोगों की नजर बचाकर जा रहा है।

—०—

दृश्य २

जंगली रास्ता

(नागू अकेला इधर-उधर शक की निगाहें डालता, और पीछे घूम-घूम कर ताकता हुआ आता है।)

नागू—"(पीछे ताककर) दो आदमी हैं। यही तो मुश्किल है, और बन्दूक भी साथ है। देखें, बापू क्या तरकीब बताते हैं।"

(फागू सामने आता है।)

फागू—"नागू?"

नागू—"हाँ, फागू। आ गए? मगर धीरे बोलो, नहीं शिकार भड़क जायगा। जब से गये हो, बराबर निगाह पर रखे हुए हूँ। जरा सामने से हट जाओ। कहीं वह देख न ले। हाँ, कहो बापू ने कोई तरकीब बताई?"

फागू—"हाँ-हाँ, सुनो।" (कान में कहता है।)

नागू—"वाह रे बापू! क्यों न हो? अब मार लिया है। हम लोग भला कहीं ऐसी तरकीब सोच सकते थे? सभी तो घण्टा-भर से ताक लगाए हैं, मगर अब तक कुछ बनाए न बना सके।"

फागू—"इसी दिन के लिये लोग कहते हैं कि बड़े-बूढ़ों को पिटारा में बन्द करके रखा करो। मगर चुप! चुप! चुप! वह लोग आ गए!"

नागू—"तुम उधर छिप जाओ, और मैं इधर।" (दोनों छिप जाते हैं)

(अकड़दत्तसिंह अकड़ते हुये आता है, और उसके पीछे उसकी पीठ से बहँगी भिड़ाये बहँगीवाला आता है)

अकड़दत्त—"अबे, डर के मारे मरा क्यों जाता है? सुनसान रास्ता है, तो क्या हुआ! बन्दूक नहीं साथ लिये हूँ? किसी की हिम्मत है, जो हमारे सामने आए।"

बहँगीवाला—"अच्छा मालिक, मुल आप आगे न बढ़ीं; साथ-साथ रहीं। हीयां दिन-दुपहर चोर लूट लेत हैं।"

(नागू अपने छिपे हुए स्थान से निकल कर बहँगी के पीछे वाला गट्ठर चुपके से उठा लेना चाहता है।)

अकड़दत्त—(सामने मुँह किए हुए) अबे चुप! जानता नहीं, मैं अकड़दत्तसिंह हूं! चोर क्या, चोर का बाप भी मुझे देख ले तो उसके होश गुम हो जायें। मैं कोई ऐसा वैसा.....अररररर!"

(नागू पीछे का बोझ उठा कर चम्पत हो जाता है। इस तरह पीछे का बोझ उठ जाने से बहँगी आगे की ओर यकायक अकड़दत्त सिंह पर झुक पड़ती है। बहंगीवाला और अकड़दत्तसिंह दोनों हड़बड़ाकर गिर पड़ते हैं)

अकड़दत्त—"(गुस्से में बन्दूक छोड़कर उठता है, और बहंगीवाले को मारने लगता है।) क्यों बे पाजी, बदमास! यह तूने क्या किया?"

(जब अकड़दत सिंह बहंगीवाले को मारने में उलझ जाता है, तब फागू चुपके से आकर सामने का बोझ और बन्दूक उठाकर लम्बा पड़ता है)

बहँगीवाला—"अरे ! बाप रे बाप ! हम तो आपे मर गएन और ऊपर से आप और मारे डारित हैं।"

अकड़दत्त—"हरामजादे ! मैं बराबर मना करता था कि बहँगी मेरी पीठ से भिड़ाये मत चल। मगर कमबख्त ने माना नहीं। मेरा सामान भी पटका और मुझे भी झपेटे में जमीन पर औंधा कर दिया।"

बहँगीवाला—"हाय ! दादा, हमार कसूर कुछु नाहीं है। बहंगिये आपे आगे भहरा पड़ी। हम का करी !"

अकड़दत्त—"तेरी ऐसी-तैसी ! साले बातें बनाता है ! अगर सामान में कोई भी चीज टूटी होगी, तो बन्दूक के कुन्दे से तेरी खोपड़ी तोड़ डालूँगा। (बहंगी की ओर देखकर) आररररर ! अबे, हमारे सामान क्या हुए ?"

बहँगीवाला—"(घबड़ाकर आगे की ओर देखता हुआ) आँय ? आप अपनी पीठ तो झाड़ो।"

अकड़दत्त—"क्यों ?"

बहँगीवाला—"आपकी पीठ पर तो सामान गिरा रहा।"

अकड़दत्त—"तो क्या उसे मेरी पीठ खा गई ? बदमाश कहीं का और पांछेवाला सामान ?"

बहंगीवाला—"अरे ! यह जवाब ?.....और बन्दुकिया कहाँ है हुजूर ?"

अकड़दत्त—"(इधर उधर देखता हुआ) हाय राजब ! यह क्या हुआ ? वह भी गायब ?"

बहँगीवाला—"बस, जब आप हमका मारे में बझ गएन तब्बे जानो, कोई लूट ले गवा। यही से सरकार हम

पहिलवे चेताय दीन रहा कि बहुत होशियारी से रहीं। हीयां पग-पग पर डाकू मिलत हैं।"

अकड़दत्त—"अबे, क्या हम लुट गए?"

बहंगीवाला—"देखित नाहीं हैं, सरकार हम एकदम हलुक होय गयन। अब अउर का चाही? यही बड़ी बात भई कि हम लोग बे लाग बच गएन।"

अकड़दत्त—"(सर पीटता हुआ) हाय! हाय! अब क्या करें? कौन सा मुँह लेकर ससुराल जाँए?"

बहंगीवाला—"अरे सरकार! इतने जोर से न चिल्लाओ। अब आपके पास बन्दुकियो नहीं है। हम का हीयां से भगा देईं, तब चिल्लाईं नाही हमहूं मार डाले जाब। माल हइहै नाहीं। अब को डाकू बिना जीव लिये न छोड़िहैं।"

(जिस तरफ से आया था, उसी तरफ भागना चाहता है।)

अकड़दत्त—"अरे! भाई ठहर—ठहर।"

बहँगीवाला—"नाहीं सरकार, हमार जीव बकसी। हम अपनी मेहरारू के अकेले हन। हमरे मर बड़ा अनर्थ हाय जाई।"

(भाग जाता है।)

अकड़दत्त—हाय! हाय! अबे, हमको भी साथ लिये चल।"

(डर के मारे घबराया हुआ उसके पीछे पीछे जाता है) आगे-आगे बहँगीवाला भागता जाता है, और पीछे-पीछे अकड़दत्त सिंह घबराहट के मारे गिरता-पड़ता जाता है।

दृश्य—३

जंगल

(जंगल के भीतर साधू और देवता का स्थान। बापू साधू के रूप में हाथ में माला लिये हुए, देवताको फूल आदि से संवारता है। बापू मस्त होकर गाना गाता है।)

गाना

बापू— राम नाम जपना, पराया माल अपना
जप-तप यही पूजा-पाठ,
यही ध्यान करूँ दिन-रात।
जिसको पाना उसको लाना,
फन्दे में डाल-डाल ठगना ॥ राम नाम०

(नागू और फागू माल लेकर आते हैं।)

नागू—"ले आये बापू ?"

बापू—"शाबाश बेटे, शाबाश! आखिर हमारे ही लड़के तो हो!"

फागू—"आप ही की बताई हुई तरकीब काम आई।"

बापू—"क्यों न आती! यह बाल धूप में थोड़े ही पकाए हैं। यही करते दिन बीता है। अच्छा, इन्हें घर रखकर तुरन्त कल्लू और भल्लू की मदद के लिए लपको। खबर मिली है कि वह लोग एक ऐसे मुसाफिरको घेरे हुए हैं, जो कई मन मिठाइयां लिये घर जा रहा है।"

नागू—"बाप रे बाप! इतनी मिठाइयां क्या होंगी ?"

बापू—"ईश्वर की देन का ऐसा अपमान ! मूर्ख कहीं के ! मिट्टी मिले, तो उसे भी ले लेना हमारा धर्म है। जाओ गाहक बनकर मोल-तोल करते हुए..."

फागू—"लड़ बैठें और मार-पीटकर मिठाई छीन लाएँ—यही न ?"

बापू—"तुम्हारा सर ! हाय, हाय ! यह भी कम्बख्त उल्लू निकल गया। खान्दान-का-खान्दान चौपट हुआ ! अरे ! कुल-बोरन ! अपनी अक्लमन्दी दिखाने के पहले उसे घेर-घारकर यहाँ लाओ। (एक तरफ देखकर) वह लो, वह लोग पहुँच गये, जल्दी करो।"

(बापू माला लेकर अपने आसनपर बैठते ही ध्यान में लीन हो जाता है, नागू फागू सामान लेकर एक तरफ जाते हैं, तथा तुरन्त ही खाली-हाथ वापस आते हैं। वैसे ही जिधर बापूने ताका था, उधर से चण्टराम एक हाँडी गले में और दूसरी पीठपर लटकाए, एक घड़ा सरपर और दो घड़े हाथों में लिए आता है। उसके साथ कल्लू-भल्लू भी आते हैं, और इधर से नागू-फागू जाकर मिलते हैं।)

चण्टराम—"(घूमकर कल्लू-भल्लू से) वाह जी, अच्छे मिले ! डेढ़ सौ रुपये की मिठाई का दाम दो रुपये लगाने चले, हैं। एक तो न जाने किन-किन मुसीबतों से उस मक्खीचूस मिठाईराम से अपनी साल-भर की तनख्वाह के बदले में खाली मिठाई ही पाकर सन्तोष करना पड़ा, और उसे तुम्हें दो रुपये में दे दूँ ! मानो हमारी साल-भर की कमाई का मूल्य केवल दो रुपया है।

कल्लू—"अच्छा, तो तीन ले लीजिये।"

मल्लू—"न दो, न तीन—सीधे-सीधे चार रुपये कह दिये। बस!"

चण्टराम—"रहने दीजिये। न आप लोगोंको लेना है, और न हमें इस तरह कौड़ियों के भावपर फेंकना। हम घर जाकर दूकान खोलेंगे, और एक-एक पैसा वसूल कर लेंगे। कुछ भीख मांगकर थोड़े ही लाये हैं। मेरी साल-भर मिहनत की कमाई है, कमाई!"

नाग—'क्या आप इन्हें बेच रहे हैं? हाँ-हाँ, अगर वाजबी दाम मिले, तो बेचने में क्या बुराई है? व्यापार का यही नियम है, कि इधर पैसा खड़ा किया, और उधर कार-बार में लगाया।"

चण्टराम—मगर यहाँ कोई वाजबी दाम देनेवाला हो भी। चले हैं, ठठेर-ठठेर बदलाई करने! गोया दुनियाँ में यही एक सयाने हैं, और बाकी सब उल्लू।"

फागू—"आहा! मैं समझ गया। आप लोगों को खरीदना है, इसलिए कम दाम लगाते होंगे। और आपको बेचना है, इसलिए ज्यादा मांगते होंगे। ऐसी हालत में आप लोग महात्मा सत्यानन्द जी के पास चलें, तो अच्छा है। वह साधू-महात्मा हैं, वह धर्म से जो कह दें, उसे आप लोग मान लें।"

कल्लू—"हाँ-हाँ, यह राय पक्की है। वह अगर दो सौ भी कह देंगे, तो हम देनदार होंगे। वह बड़े पहुंचे हुए साधू हैं।"

नागू—"हैं ही। सत्यवादी बाबा हरिश्चन्द्र के नाती के सगे भतीजे हैं। गैरवाजबी तो कह ही नहीं सकते। आप भी

मंजूर कर लीजिये। बोझ लिये मारे मारे फिरने से चटपट रुपये नकद कर लेना बहुत अच्छा।"

चन्टराम—"अच्छी बात है। कहाँ रहते हैं?"

फागू—"वह क्या पास ही। वह देखिये, आसन जमाए डेढ़-सौ हाथ की माला जप रहे हैं।"

(सबका बापू के पास जाना)

नागू—"देखिये, ध्यान भंग न होने पावे। अभी चुपचाप मिठाइयों के घड़े इस पवित्र स्थान पर रख कर आराम से बैठिये।"

(सब मिलकर चन्टराम के घड़े और हांडी ले लेकर देवता के सामने रखते हैं।)

कल्लू—"आहा! बड़ी शुभ घड़ी हम लोग आए हैं। बाबाजी ने तुरन्त ही नेत्र खोल दिए। नहीं तो जब आप पचलखी माला जपते हैं, तब कभी-कभी तो महीनों आँख नहीं खोलते।"

सब—"दण्डवत् महाराज! दण्डवत् महाराज!"

बापू—"कल्याण हो, कल्याण हो! कहो बच्चा, क्या है?"

भल्लू—"हम लोग आप को एक कष्ट देने आए हैं महाराज।"

बापू—"कहो, कहो, निस्संकोच कहो। परोपकार करना तो मेरा परम धर्म है।"

कल्लू—"बात यह है महाराज, कि यह मुसाफिर मिठाई की दूकान खोलने के लिये कुछ मिठाइयाँ लिये जा रहे थे। रास्ते में हमें मिले। हमने कहा कि जब इन्हें बेचना ही है, तो हमारे हाथ कुल बेच दो। मगर दाम नहीं पटता। इसलिए कृपा कर आप जो मूल्य कह दें, उसे हम दोनों मान लेंगे। क्यों भाई भल्लू, यही न?"

मल्लू—"हाँ, भाई कल्लू, सत्य है।"

बापू—"आहाहा! देव-स्थान में आकर, और देवता के सामने मिठाइयाँ रखकर अब मोल-तोल की बातचीत? हरे कृष्ण! हरे कृष्ण!! बच्चा, ऐसा अधर्म मत करो। यह मिठाइयाँ तो देवता पर चढ़ गईं। अब इनका मोल-तोल कैसा? यह बड़े भाग्यशाली थे, जो शुभ काम करने के पहिले देव-स्थान पर पधारकर कुल मिठाइयाँ देवता को चढ़ा दीं। दूकान ही खोलना है, तो पहिले देवता की पूजा करना परमावश्यक था। वह दैवयोग से आप ही हो गई। लो, तुलसी-दल के साथ यह एक बतासा देवता का प्रसाद इन्हें दे दो। इनकी सकल मनोकामना अब पूरी हो जावेगी। और मिठाइयों को जीव, जन्तु, पक्षी और जलचरों को खिला दो। क्योंकि हमारे देवता पर चढ़ा हुआ प्रसाद सिवाय बतासे के और कुछ-भी मनुष्य-मात्र को खाने का अधिकार नहीं है।"

(फिर ध्यान में लीन हो जाता है)

चन्टराम—(घबड़ा कर उठ खड़ा होता है।) अयँ! यह क्या?

(चन्टराम के साथ सब उठ खड़े होते हैं।)

कल्लू—"आप सचमुच बड़े भाग्यवान् हैं।"

मल्लू—"हाँ-हाँ, बड़े भाग्यवान्।"

नागू—"इसी को कहते हैं कि गये थे आग लेने, और मिल गई पैगम्बरी।"

फागू—"क्या कहना है! देवता की आप पर बड़ी ही कृपा हुई।"

(चन्टराम परेशान होकर भाग जाता है)

सब—"आहाहाहा ! आहाहाहा !! वाहरे बापू !"

(चन्दराम चुपचाप फिर लौटता है, और छिपकर इन लोगों का तमाशा देखता है)

बापू—"(आसन छोड़कर) देखा बेटा, इस तरह काम किया जाता है। अब लो, खाओ मिठाई और गुलछर्रे उड़ाओ।"

(हँडियों से मिठाई निकाल-निकाल कर सब खाते हैं।)

बापू—"एक बार बोलो—चोर, लुटेरे, गिरहकट और डाकुओं की जय !"

सब—"जय !"

बाप—"बेटा, लूटने से बढ़कर कोई उत्तम पेशा है ही नहीं। यही संसार का मुख्य पेशा है। इसी पर दुनियाँ कायम है। कोई धर्म के नाम पर और कोई नीति, न्याय, शक्ति, चिकित्सा, व्यापार, महाजनी आदि के नामों पर लूट रहा है। सब जगह लूट ही लूट मची है। सब से पक्का लुटेरा वह, जो इस ढंग से लूटता है कि लूटे जानेवाले को पता नहीं मिलता कि हम लूटे गये। समझे ?"

(चन्दराम आँख में मुट्ठी बाँधकर दाँत पीसता है और चल देता है)

(सब गाते हैं)

कोरस

"दुख झेलें बी फाखता, कौवे अण्डे खायँ।
ज्ञानी लूटें मूरखको, निर्धन निर्बलको धन-बलवाले ॥
पर दुनियां, सारी हमसे हारी, हम लूटें सबको।
लूटें और मौज उड़ायँ ॥"

दृश्य ४

चण्टराम का मकान

(चण्टराम अपने मकान से एक पोटली लिए निकलता है ।)

चण्टराम—'जंगल के लुटेरोंने बड़े बुरे घर बयाना दिया । हमारी सालभर की कमाई मार तो ले गये, मगर मेरा भी नाम चण्टराम नहीं, जो उनकी जन्मभर की कमाई मार न लाऊँ । वे चोर हैं तो मैं भी चोर के घर छिछोर बनकर कूदूँगा, तब ठठेर-ठठेर बदलाई होगी । उनको फांसने के लिए जनानी पोशाक और पीतल और गिलट के गहने इस पोटली के भीतर रख लिए हैं । बस, डोली आजाय तो उसीके भीतर बैठकर अपनी तैयारी शुरू कर दूँ.....''

(दो आदमी एक छोटी-सी डोली लेकर आते हैं ।)

एक डोलीवाला—"हम आ गये, बुलाओ अपनी सवारी । भाई, जल्दी करो ।''

चण्टराम—''सवारी यह क्या तुम्हारी आँखों के सामने खड़ी है । इससे जल्दी अब और क्या करें ?''

दूसरा डोलीवाला—"अरे ! तुम्हीं पर्देदार डोली में बैठकर चलोगे ? हम समझे कोई सवारी जानेवाली है ।"

चण्टराम—"तुम्हें अपने टके से मतलब, या सवारी या सवारी देखने से मतलब ? (डोली में बैठकर) बस, चलो, और वहीं ले जाकर डोली छोड़ देना—जहां बताया है ।"

(पर्दा डालकर डोलीवाले डोली ले जाते हैं ।)

—.—

दृश्य—५

जङ्गल का किनारा

(डोलीवाले डोली लेकर आते हैं)

चण्टराम—"(डोली के भीतर से) बस, अब तुम लोग जाओ।"

(दोनों डोलीवाले डोली छोड़कर जाते हैं।)

चण्टराम डोली के भीतर रो-रोकर गाता है—

गाना

"मेरी सुधि के लिवइया कहाँ हो।
कहाँ हो, कहाँ हो, मोरी सुधि के लिवइया॥
असुवन की नदियाँ बहीं, आँधर भई अखियाँ।
दुख की मारी बिलक रही टूक टूक भई छतियाँ॥
लेहु खबरिया सुधि के लिवइया।
कहाँ हो मोरी सुधि के लिवइया। कहाँ हो।"

(नागू, फागू, कल्लू और भल्लू एक-एक करके आते हैं, और इधर-उधर देखकर आपस में खुश होते हैं)

फागू—"वाहरे ईश्वर! आज तो बेढब माल भेज दिया, और मजा यह कि कोई इसके साथ भी नहीं है।"

नागू—"नौजवान मालूम होती है। आवाज कैसी प्यारी है!"

कल्लू—"गहने की झनकार भी सुनाई पड़ती है। पाँचों घी में है आज तो!"

भल्लू—"और ऊपर से घर बसने का सामान। यह क्यों नहीं कहते? हम तो समझते थे कि हम लोगों के भाग्य में

कोई औरत लिखी ही नहीं है। मगर ईश्वर के बड़े लम्बे हाथ हैं।"

कल्लू—" मगर इसके साथवाले कहाँ हैं ?

फागू—"होंगे कहीं। अब देखते क्या हो ? ईश्वरको धन्यवाद दो, डोली उठाओ और चलते बनो।"

नागू—"ठहरो जी। जरा कुछ पूछ-ताछ तो करलो। दम-दिलासा देकर ले चलना अच्छा है, ताकि रास्ते में कोई आफत न मचाये। (डोली के पास जाकर) कौन हो ? क्यों रोती हो ?'

चण्टराम—' (डोली के भीतर से) दुर्भाग्य की मारी हूँ। अपने दुर्भाग्यपर रोती हूँ। आप कौन हैं ?"

नागू—"तुम्हारी मदद करनेवाले। बताओ तो, तुमपर कौन-सा दुख पड़ा है।"

चण्टराम—"(डोली के भीतर से) दुख कुछ ऐसा-वैसा नहीं, यकायक दुखों का पहाड़ टूट पड़ा है। आज हमारा ब्याह होनेवाला था। हमारे खान्दान में लड़कियाँ दूल्हे के घर ले जाकर ब्याही जाती हैं। इसीलिए पिताजी मुझे दूल्हे के घर मेरा पाँव पूजने के लिए ले जा रहे थे। यहाँ सब लोग सुस्ताने के लिए रुके, वैसे ही जंगल से शेर निकला, और पिताजीको उठा ले गया। बस सब, जान लेकर भाग खड़े हुए। हाय राम ! भाग्य फूट गये।" (रोता है)

कल्लू—"(भल्लू से) चुप रहो। (डोली की ओर मुँह करके) अच्छा रोओ मत। हमारे ही यहाँ तुम्हारा ब्याह होनेवाला था। जब तुम्हारे आने में देर हुई, तो हम अपने आदमियों को

लेकर तुम्हें ढूँढ़ने निकले। बड़ी कुशल हुई कि तुम मिल गईं।"

भल्लू—"अब तो भई, बिना देखे जी नहीं मानता; जरा पर्दा उठाओ।

नागू—"(भल्लू से) खबरदार!"

फागू—"(आपस में) जरा हम भी कुछ बातें कर लें।

नागू—"(फागू से) तुम्हारी ऐसी-तैसी!"

कल्लू—"(आपस में) अच्छा इसे यहाँ से ले चलो, तब देखा जायगा।"

नागू—"हाँ-हाँ, मगर सब लोग मिलकर उठाओ। दो आगे की तरफ रहो, और दो पीछे की तरफ। कोई खाली न रहने पावे।"

(सारी डोली उठाते हैं)

चण्टराम—"(डोली के भीतर से) कहाँ लिये जा रहे हो?"

फागू—"वहीं, जहाँ तुम्हारी शादी होनेवाली है। घबराओ मत।"

नागू—"(डोली छोड़कर) तुम क्यों बोले? हमें क्यों नहीं बोलने दिया?"

कल्लू—"अरे भाई, घरतक चलोगे भी।"

(सबका जाना)

दृश्य—६

लुटेरों का जंगल में मकान

कल्लू, भल्लू, नागू और फागू डोली लिए मकान के भीतर प्रवेश करते हैं।

(कल्लू, भल्लू, नागू और फागू सामने के कमरे से बातें करते निकलते हैं।)

नागू—"ठीक कहती है। वह उसीको अपना मुँह दिखा सकती है, जिसके साथ उसका ब्याह होनेवाला है। स्त्रियों का यही धर्म है।"

कल्लू—"क्यों नहीं? इसलिए मुँह देखने का मेरा अधिकार है; क्योंकि सबसे बड़ा मैं हूँ। मैं ही उससे शादी कर सकता हूँ। उसके पास मेरे अकेले जाने में कोई बुराई नहीं है।"
(कमरे की ओर लौटना चाहता है।)

नागू—"(कल्लूको खींचकर आगे करता हुआ) तुम उधर जानेवाले कौन होते हो? यहाँ बड़ाई-छुटाई एक न चलेगी। मैंने उससे पहले बातचीत की है। शादी करूँगा, तो मैं करूँगा; पास जाऊँगा, तो मैं जाऊँगा; मुँह देखूँगा, तो मैं देखूँगा।"

भल्लू—"यह मुँह और पोदीने की चटनी! बस, चलो उधर। बापू सबसे ज्यादे मुझे मानते हैं। शादी होगी, तो मेरे साथ होगी।"

फागू—"मुँह धो रखो। देखें, हमारे होते हुए कौन उससे शादी करता है। हम किसी से कम हैं। आओ, एक-एक करके लड़के देख न लो।"

नागू—"अरे! इस डींग के भरोसे न रहना। उधर निगाह उठाओगे, तो आँखें फोड़ ही दूँगा।"

फागू—"तुम्हारी ऐसी-तैसी।"

नागू—"धत् तेरे की।"

(दोनों लड़ते हैं, इधर मौका पाकर कल्लू कमरे में चुपचाप घुसना चाहता है। तबतक भल्लू उससे भिड़ जाता है, और फिर चारों आपस में गुथकर लड़ने लगते हैं मकान के बाहर से बापू की आवाज—"अरे! दरवाजा खोलो।")

कल्लू—(आपस में लड़ते हुए) "मार डालूँगा...."
भल्लू— ,, ,, "जीता न छोड़ूँगा...."
नागू— ,, ,, "खून पीलूँगा...."
फागू— ,, ,, "हड्डी-पसली एक कर दूँगा...."

बापू की बाहर से आवाज—अरे! भाई दरवाजा खोलो।"

(चारो लड़ते लड़ते थक जाते हैं, और खड़े होकर हाँफते हैं)

भल्लू—"अच्छा भाई, यह यों न तय होगा। आओ, आपस में चिट्ठी छोड़ें, जिसका नाम निकल आए, वही उसके साथ शादी कर ले, और उसके पास आवे-जावे। बस झगड़ा खतम।"

बापू की आवाज—"तुम लोगोंको क्या साँप सूँघ गया है? दरवाजा क्यों नहीं खोलते?"

फागू—"यह लो। बापू खाना खाने कुटीपर से आ गये। उनके होते हुए चिट्ठी छोड़ने की क्या जरूरत? वह जो तय कर

दें, यही ठीक। जाऊँ, जल्दी से दरवाजा खोल दूँ। बस, मामला तय हो जाय।" (दरवाजा खोलने जाना चाहता है।)

कल्लू—"(फागूको पकड़ कर पीछे ढकेलता हुआ) माना। मगर तुम दरवाजा खोलने नहीं जा सकते। न-जाने तुम उन्हें क्या सिखा-पढ़ा दो।" (द्वार की ओर जाना चाहता है।)

भल्लू—"(कल्लूको पीछे खींचता हुआ) अब अपना मामला पक्का करने वह लपके।"

बापू की आवाज—"अरे, क्या आज तुम लोग द्वार न खोलोगे ?"

सब—"आया बापू, आया।"

(सभी द्वार की ओर पारी-पारी से बढ़ते हैं, मगर सभी एक दूसरे द्वारा पीछे ढकेल दिये जाते हैं।)

बापू की आवाज—"अरे कम्बख्तों! आज क्या हमें यहाँ खड़ा रखकर भूखे मार डालोगे ?"

कल्लू—"आया बापू, देखिये यही लोग नहीं आने देते।"

भल्लू—"नहीं बापू, यह खुद ही हमें नहीं आने देते।"

नागू—"मैं क्या करूँ बापू, मुझे यह लोग पकड़े हुए हैं।"

फागू—"मैं इन लोगों के मारे नहीं आ पाता हूँ बापू।"

(सब एक दूसरेको पकड़कर खड़े हो जाते हैं।)

बापू की आवाज—"अच्छा न खोलो। मैं बाहर से कुण्डी चढ़ाकर घर ही फूँके देता हूँ।"

चारो—"हाय! हाय! ऐसा गजब न कीजिये, बापू। (आपस में) अब छोड़।"

(यकायक चण्टराम जनानी पोशाक में लम्बा घूँघट काढ़े कमरे से निकलता है, और चुलबुलाता हुआ द्वार की ओर जाता है।)

कल्लू—"जैसे बिजली चमक गई !"

भल्लू—"कलेजा हिल गया !"

फागू—"दिल धड़क उठा !"

नागू—"हाय ! हाय ! हाय छोड़, जरा कलेजेपर हाथ तो रख लूँ।"

(नथुराम उसी तरह नखरे से लौटकर अपने कमरे में घुस जाता है। और उसके पीछे अचरज से आँखें फाड़े, लाठी टेकता हुआ बापू आता है।)

बापू—"आयँ ? यह कौन थी ? और छम—से चमककर कहाँ अलोप हो गई। मैं कुछ देख ही न सका। आहा ! समझ गया। इसीलिए तुम लोग द्वार नहीं खोलते थे। हम से छिप-छिपकर यह बातें ? हमको खबर तक न दी। अपने बाप ही से यह चालबाजी ? जाओ कम्बख्तों, सत्यानाश हो जाओगे।"

भल्लू—"(हाथ छुड़ाकर आगे बढ़ता हुआ) नहीं बापू, अभी आपस में यह तय नहीं हो सका था कि इसके साथ कौन शादी करे। इसलिए—"

बापू—'(डण्डा उठाकर) बदमाश ! चल उधर।'

नागू—'(भल्लू को पीछे ढकेलकर) शादी करने का तो मेरा हक है बापू। सबसे पहले मैं ही ने इससे बात-चीत की है और सच पूछिये, तो मेरी ही हिकमत से यह यहाँ तक आई है—"

बापू—'(डंडा उठाकर) पाजी ! हट सामने से।'

कल्लू—"(नागू को ढकेलकर) बड़े को छोड़कर भला कहीं छोटे की भी शादी हो सकती है ? ऐसा भी अन्धेर कहीं हो सकता है, बापू—'

बाप—'दरवाजा खोलते वक्त यह बड़प्पन कहां चला गया था ? (डण्डा उठाकर) भाग यहाँ से।'

फागू—'(कल्लू को ढकेलकर) देखिए बापू, सब से ज्यादा मैं ही आपका कहना मानता हूँ—'

बापू—'जी हां, तभी तो द्वार खोलने आए थे न। (डण्डा उठाकर) तेरी ऐसी--ऐसी। सब अपनी--अपनी गाए जाते हैं। मगर कोई कम्बख्त साफ हाल नहीं कहता और न यह बताता है कि 'वह' बिजली की तरह तड़पकर किधर गायब हो गई।'

कल्लू—(बापू को अपनी ओर खींचता हुआ) 'मुझसे सुनिये बापू, आज उसकी शादी होनेवाली थी—'

मल्लू—'(बापू को अपनी ओर खींचता हुआ) बीच में डोली हम उठा लाए—'

नागू—'(बापू को अपनी ओर खींचता हुआ) यह पट्टी पढ़ाकर कि तुम्हारी शादी आज मेरे ही यहां होनेवाली है।'

फागू—'(बापू को अपनी ओर खींचता हुआ) यानी मेरे साथ।'

बाप—'(घबड़ाकर) हाय ! हाय ! इस खींच-खाँच में तो मेरे चिथड़े उड़ जायेंगे।'

नागू—कल्लू—मल्लू—'नहीं शादी मेरे साथ होगी।'

बाप—'अरे कम्बख्तों ! शादी गई चूल्हे-भाड़ में। पहले यह तो बताओ, वह है कहाँ ? मेरी तो आँखें ऐसी चौंधिया गई थी, कि मैं कुछ देख ही न सका।'

चारो—'यहीं है बापू यहीं है। उस कमरे में।'

बापू—'यहाँ ? उस कमरे में ?.... .... अच्छा, तो मैं समझ गया। तुम लोग सभी उसे अपनी बीबी बनाना चाहते हो।'

चारो—'हां, बापू हां।'

बापू—'मगर वह सबकी जोरू तो नहीं हो सकती।'

चारो—'हां, नहीं हो सकती !'

बापू—'मगर—'

चारो—"हाँ, मगर ?"

बापू—"यही कि वह सब की माँ अलबत्ता हो सकती है।" चारो के मुँह लटक जाते हैं। बापू—"क्यों बोलते क्यों नहीं ?"

चारो—"हाँ हो सकती है।"

बापू—"इसलिये तुम लोगों का झगड़ा मिटाने के लिए बुद्धिमानी यही है, कि मैं उससे शादी कर लूँ। जब से बुढ़िया मरी है, तुम लोगों की मां कहाने वाली कोई नहीं है। तुम लोगों का यह दुख मुझसे और नहीं देखा जाता।"

कल्लू—'(ठहरकर) अच्छी बात है। मेरे साथ ब्याह न हो, तो फिर आपस में किसी के साथ न हो।"

भल्लू—"यही सन्तोष सही। मैं डुबूँ, तो जग डूबे।"

फागू—"(नागू से) बहुत अकड़ते थे अब रह गए अपना मुँह लेकर।",

नागू—"तुम अपनी कहो। (अँगूठा दिखाकर) टिली-लि लि-ली।"

बापू—"अच्छा बेटा। झटपट शादी का सरञ्जाम कर डालो। ताकि शादी आज के दिन होने की बात भी पूरी होकर कोई बात उसे सन्देह में डालकर भड़काने वाली न रह जाये। बस दौड़ो नगर को।"

नागू—"मगर बापू, अगर बाजार जायेंगे तो सब साथ ही जायेंगे। कोई यहाँ रहने न पाये।"

बापू—"हाँ-हाँ, जरूर-जरूर। यह तो मैं भी कहनेवाला था।"

(कल्लू, भल्लू, नागू और फागू जाते हैं।)

बापू—"भाई वाह! प्यारी से मिलने के लिये कैसा बढ़िया मौका मिला है। मगर जरा शीशा देखकर सुरमा लगा लूँ, तो प्यारी के सामने जाऊँ। मगर अरे! सुरमा तो कुटी ही पर है।"

(जल्दी जल्दी टेकता हुआ वह बाहर जाता है।)

चन्टराम—"(घूँघट काढ़े कमरे से निकलता है।) यह तो माँगी मुराद मिली। आप-से-आप ऐसी परिस्थिति बन गई कि बड़े मियाँ मेरे चंगुल में अकेले पड़ गये। यही तो मैं चाहता था। अब मिठाइयों का मजा चखाता हूँ। मगर जरा रिझाकर खूब चपरगट्टू बना लूँ तब। (द्वार की ओर ताक कर) अरे! वह आ रहा है।"

(बापू आता है।)

बापू—"अरे! तुम आप ही निकल पड़ीं। मैं तो खुद ही तुम्हारे पास आ रहा था। हाय! हाय! भागो मत। भागो मत।" (दौड़ कर रास्ता रोकता है।)

(चन्टराम गम्बरे से इधर-उधर भागता है, और बापू उस पर मुग्ध होकर गाने लगता है।)

बापू—"छटकत पग धरत चाल मतवाली।
कैसी रँगीली नार नवेली।
अल्हड़ कमसिन भोली-भाली।

क्या कहना। अहा—क्या कहना,
दिखलादो प्यारी मुखड़ा।
जिया का जाए दुखड़ा।
तरसाओ नहीं, शरमाओ नहीं।
बस खोलो घूँघटवाली। छटकत।....."

चन्टराम—"हाय! हाय! मुझे जाने दीजिये। घर सूना पाकर जरा हवा खाने निकल पड़ी थी। मैं नहीं जानती थी कि ऐसी आफत में पड़ जाऊँगी।"

बापू—"आफत कैसी प्यारी! मैं ही तो तुम्हारा होनेवाला मालिक हूँ। निहायत तजुर्बेकार। जरा घूँघट हटाकर देखो तो।"

चन्टराम—"नहीं-नहीं, मुझे बड़ी शर्म लगती है।"

बापू—"मत शर्माओ। मैं ही अपने हाथ से तुम्हारा घूँघट हटा दूँगा।"

चन्टराम—"हाय राम! मैं क्या करूँ?"

(चन्टराम और बापू दोनों बारी-बारी गाते हैं।)

गाना

चन्टराम—"हाँ! पड़ गई मैं कैसी मुसीबत के पाले।
ऐसे संकट में ईश्वर न दुश्मन को डाले।"

बापू—"हाय! करती हो क्यों प्यारी इतना तुम नखरा।
तेरा नखरा तो मेरा कचूमर निकाले।"

बापू—जरा ठहर जा, मेरी चकरछिन्नी। कोल्हू के बैल की तरह अब और न दौड़ा। नहीं हू फकर भहरा पड़ूँगा।"

चन्टराम—"(चुपचाप खड़ा होकर) परवश हूँ, अबला हूँ। मैं कुछ कह नहीं सकती।"

बापू—(पास जाकर) 'ब-ब-बस, बस, ऐसी ही जरा खड़ी रहो प्यारी। (नीचे से ऊपर तक देखकर) आहाहा! कैसी सीधी है, जैसे बाँस। (बगल की ओर जाकर) वाह! वाह! क्या छरहरा बदन है। (दूसरी ओर जाकर) बलिहारी! क्या सुडौल हाथ-पैर है। (सामने जाकर) नख-सिख बिल्कुल दुरुस्त। ईश्वर ने बस मेरे ही लिये तुम्हें बनाया भी है। जरा सब्र किये रहो प्यारी। (घूँघट हटाता है।)

चन्टराम की मोंछवाली सूरत दिखाई पड़ती है, और बापू का हाथ जल्दी से घूंघट सरका कर उसे ढक देता है।

बापू का बहुत घबड़ाया हुआ चेहरा दिखाई पड़ता है।

बापू—"अयं! यह क्या? (जेब से चश्मा निकाल कर लगाता है, और चंटराम का फिर घूंघट हटा कर देखता है, और घृणा से मुंह फेर लेता है) अरे! यह किस मुल्क की औरत पकड़ लाये?"

चन्टराम—(मुंह खोलकर) "क्यों मुंह फेरकर चले कहाँ?"

बापू—"(मुंह फेर कर जाता हुआ) दूर रह, दूर रह। घुसी क्यों पड़ती है? ऐसी मुछन्दर औरत उन्हीं गदहों को मुबारिक हो, जो तुझे पकड़ लाये हैं। मैं बाज आया तेरे संग शादी करने से।"

चन्टराम—"वाह! सूरत तो आपने देखी और शादी दूसरे से हो। अब यह कहाँ मुमकिन है?" (बापू का टेकने वाला डण्डा छीनकर मारना शुरू करता है।)

बापू—"हाय! हाय! यह क्या? अरे मर गया! मर गया। मर गया।"

चन्टराम—"अब चिल्लाते क्यों हो साधू महाराज। मिठाई खाते वक्त तो बड़ा मजा आया था और मार खाते नानी मरती है। तेरी ऐसी-तैसी।" (मारते मारते जमीन पर गिरा देता है।)

बापू—"हाय! बाप रे बाप! अरे क्या तुम वही हो? हाय! हाय! बाप रे बाप।"

चन्टराम—"(मारता हुआ) और नहीं तो कौन है? आँखें खोल कर चचा को अच्छी तरह पहचान लो। अच्छा किया, जो मेरी मिठाइयां लूट लीं। अब देखो, वह कितना धन कमा कर लाती हैं। दूसरों के लूटने का मजा तो तुमने खूब उठाया है। अब जरा अपने लूटे जाने का मजा उठा लो। बताओ तुम्हारी सारी दौलत कहां रखी है।" (लात जमाता है)

बापू—"हाय! मर गया। मर गया।"

चन्टराम—"अबे जल्दी बताता है कि फोड़ दूं आंखें?"

बापू—"नहीं-नहीं, सब धन ले लो। मगर मेरी जान छोड़ दो। यह लो चाभी। उस कमरे में चटाई के नीचे लोहे का बक्स गड़ा है। आह!"

चन्टराम—"(चाभी उठा कर बापू की टांग पकड़कर घसीटता हुआ) चल, तू भी चल वहां। ताकि अपने लूटे जाने का तमाशा तो तेरी आंखें जी भरकर देख लें।" (घसीट ले जाता है।)

(बापू के मकान का बाहरी हिस्सा)

चन्टराम—एक बड़ा सा गट्ठर लादे मकान से निकलता है, और बाहर की कुण्डी चढ़ाकर एक ओर चल देता है।

दूसरी तरफ से कल्लू, भल्लू नागू और फागू शादी का सामान मौर--आदि लिए आते हैं, और द्वार खोलकर भीतर जाते हैं !

चन्टराम बड़ी दूर पर जाता हुआ दिखाई पड़ता है।

कल्लू, भल्लू, नागू और फागू गुस्से में मकान से निकलते हैं।

कल्लू, भल्लू, नागू और फागू इधर-उधर चन्टराम की खोज में दौड़ते हुए दिखाई पड़ते हैं।

दृश्य—७

नगर का रास्ता

(कल्लू, भल्लू, नागू और फागू का बातें करते आना ।)

नागू—'साले का कहीं पता नहीं मिलता। मिल जाये, तो कच्चा-ही चबा जाऊँ'।

फागू—'कम्बख्त ने एक ही दिन में हमें भिखमंगा बना दिया। घर में एक झंझी कौड़ी तक न छोड़ी।'

कल्लू—'और बापू को अधमरा कर डाला—यह क्यों नहीं कहते? साला शैतानों से भी शैतानी कर गया।'

भल्लू—'औरत बनकर ऐसा आंखों में धूल झोंक गया कि कुछ कहते नहीं बनता। अब तो बिना उसकी जान लिए चैन नहीं पड़ सकती।'

फागू—अजी, पहले बापू की जान बचाने की तो फिक्र करो, तब उस पाजी की जान लेने के मनसूबे करना।

(एक आदमी का इश्तहार बाँटते आना)

नागू—'काहे का इश्तहार है जी?

इश्तहारवाला—'राजवैद्य श्रीमान् कुटम्बसनाथ का। मुर्दों को जिलाते हैं, बूढ़ों को जवान बनाते हैं, और जख्मी और घायल को तो चुटकी बजाते चंगा कर देते हैं। सिर्फ एक दिन के लिए इस नगर में पधारे हैं। जिसको लाभ उठाना हो, उठाले। और

तारीफ यह कि न फीस लेते हैं; और न दवाइयों के दाम।'

कल्लू—'ऐसे योग्य और परोपकारी ?'

इश्तहारवाला—क्यों नहीं ? साक्षात् धन्वन्तरि के खान्दान के हैं।'

कल्लू—'(आपस में) बापू के लिये ?'

नागू—फागू—भल्लू— 'हाँ हाँ।'

कल्लू—'भाई, उनकी मुझे बड़ी सख्त जरूरत है। वह मिलेंगे कहाँ ?'

इश्तहारवाला—'डाक-बँगले में। मगर अभी टहलने गये हैं। अरे! वह देखिए, वह जा रहे हैं।'

(सब उसी ओर जाते हैं।)

———

दृश्य—८

लुटेरों के मकान का भीतरी कमरा

(बापू चारपाई पर पड़े कराह रहा है।)

बापू—'हाय! ··· हाय! ··· हाय' ··· आह! बहुत दर्द है।'

(कल्लू आता है।)

कल्लू—'घबड़ाइए नहीं बापू! वैद्यजी आ गये। अभी-अभी चुटकी बजाते अच्छा कर देंगे। द्वार की ओर घूम कर) आइये, आइये, वैद्यजी।'

(चन्टराम वैद्य के रूप में आता है, और उसके साथ उसकी दवाइयों का बेग लिये नागू, फागू और भल्लू आते हैं।)

चन्टराम—'यही रोगी हैं। (नब्ज देखता हुआ) ओफ! ओ! इन्हें तो किसी ने बिलकुल मार डाला है। जान तो अब सिर्फ इनके मुंह में अटकी हुई है! और कहीं नहीं है।'

कल्लू—'हाँ वैद्यजी, तभी तो हम लोगों ने आपको कष्ट दिया है।!

चन्टराम—'फिर भी बहुत देर कर दी। अच्छा, दौड़ो एक आदमी शहर। वहाँ रामगोपाल की दूकान से पावभर तुख्मलंगा ले आओ।'

नागू—'अभी लाता हूँ।'

(चल देता है।)

चन्टराम—'(बापू के सीने पर हाथ रखकर) ऊँ हूं ! सीने में तो मौत की कफ जकड़ गई । खैर कोई हर्ज नहीं ! (अपना बेग खोलकर दो शीशी निकालकर) भला यहाँ से नदी कितनी दूर है ?

फागू—'कोस-भर पर ।'

चन्टराम—फौरन दो घड़े बीच धारा का ताजा पानी लाओ; क्योंकि इन दवाइयों की एक-एक बूँद नदी के एक-एक घड़े पानी में मिलाकर दी जाती है। नहीं तो दिमाग फट जाएगा ।'

(फागू और भल्लू जाते हैं । चण्टराम बापू की टांग पकड़कर उठाता है ।)

बापू—"हाय ! बाप रे बाप ! मर गया ।"

चण्टराम—"ओ हो ! इनकी तो हड्डी भी टूट गई है । इसकी दवा तो मैं लाया ही नहीं । और मँगाना भी भूल गया । अब क्या किया जाय ?"

कल्लू—"बताइये, मैं अभी लिये आता हूँ ।"

चण्टराम—"मातिया का इत्र तीन तोला ।"

(कल्लू जाता है ।)

चण्टराम—"चलो, मैदान साफ हो गया । (अपने गलमुच्छे निकालकर) अजी साधू महात्मा, अब जरा आँखें खोलकर अपने चचा का दर्शन कर लीजिये ।"

बापू—"(घबड़ाकर) अरे, बाप रे बाप ! तुम ? तुम ? तुम ? फिर ?"

चण्टराम—"(अपने गलमुच्छे लगाता हुआ) इस दफे तो बड़ी जल्दी पहचाना । हाँ मैं ही हूँ । आपके धनके प्रताप से

अब मुझे जिन्दगी-भर कमाने की जरूरत नहीं रह गई। मगर जरा थोड़ी सी कसर रह गई थी, उसीको पूरा करने के लिए वैद्य बनकर आना पड़ा। क्षमा कीजियेगा परोपकारी महात्माजी।"

(बापू किसी तरह उठकर भागना चाहता है।)

चण्टराम —"(पीछा करके मारता हुआ) जै भगवान की! जै भगवान की!!"

बापू—"हाय! मर गया, मर गया। आह!"

(गिरकर बेहोश हो जाता है।)

चण्टराम—"(बापूको देखकर) मरा नहीं कम्बख्त! खाली बेहोश हो गया है। ऐसे जीव भी भला मारे से कहीं मरते हैं? चलो, अच्छा हुआ। अब जल्दी से इसके बालों पर खिजाब कर दूँ, तो काम बने।"

(बापू के बालों में खिजाब लगाने के बहाने चण्टराम उसके सरको अपनी आड़ में कर लेता है, और जब हटता है, तो बापू के सफेद बाल स्याह दिखलाई पड़ते हैं।)

चण्टराम—"एक काम से तो छुट्टी मिली।"

(अपने बेग से रस्सी निकालकर, बापू के दोनों पैरोंको जुटाकर, एक साथ बाँध देता है, और उसे उल्टा उठाकर उसके पैरों के बन्धनको छत से लटकते हुए एक कड़ियानुमा लोहे के छल्ले में अटकाकर उल्टा लटका देता है।)

चण्टराम—"बस, अब उल्टे लटके हुए बेटा, लो राम का नाम।"

(कल्लू आता है।)

कल्लू—"लीजिये, मोतिया का इत्र! अयँ! यह क्या?"

(नागू, फागू और भल्लू आते और ऐसे बौखला जाते हैं, कि नागू के हाथ से तुखमलंगा की पुड़िया और फागू और भल्लू के सर से पानी के घड़े गिर पड़ते हैं।)

चन्टराम—"(बहुत बिगड़ कर) अब आये हो तुम लोग! इतनी देर करके? जब यह मर गये, तब? हम नहीं जानते थे, तुम लोग ऐसे काहिल सुस्त और कामचोर हो। नहीं तो हम हरगिज हरगिज इधर पाँव न धरते। लाख रुपये की दवा, जो मुर्दा को जिलाने और बूढ़ों को जवान करनेवाली थी, और जिसकी तैयारी में साढ़े तीन-सौ वर्ष का समय लगा है, खर्च करनी पड़ी है। तब जाकर इनकी मृत देह में साँस फिर चली है, और बालों पर जवानी की निशानी दौड़ी है।"

कल्लू—'हाँ, इनके बाल तो सचमुच काले हो गये हैं।'

नागू—मगर यह उल्टे क्यों टँगे हैं?'

चन्टराम—"अभी छैला बनकर जब उतरेंगे, तब पूछना। बड़े आये हैं लाट साहब बनकर पूछने, उल्टा क्यों टँगे है। यही जानते तो तुम भी न मुर्दा जिला लेते, या बूढ़ों को जवान बना लेते? उल्टा इस लिए टँगे हैं कि दवा पेट में नहीं, बल्कि सीधे खोपड़ी में पहुँचे, जो आदमी की जड़ है। इसकी जड़ पेड़ों की तरह नीचे नहीं,

बल्कि ऊपर होती है। इसीलिए आदमी उल्टा दरख्त कहलाता है। जब तक जड़ नहीं सींची जाती, तब तक पेड़ भला कैसे हरा हो सकता है ?"

सब—"हाँ महाराज। आप बहुत सही कहते हैं।"

चन्टराम—"(शीशी हाथ में लेकर) तुम लोगों के आने में देर होने के कारण मुझे यह शीशी खराब करनी पड़ी; क्योंकि और कोई उपाय इनके जिलाने का था नहीं; इस शीशी को मैं किसी राजा-महराजा के लिए रखे हुए था ताकि इसकी करामात दिखलाकर लाखों रुपये की जागीर पाँ सकूँ। मगर अफसोस ! सब मनसूबे मेरे खाक में मिल गए। शीशी खुल जाने से आध घण्टे के बाद यह दवा बेकार हो जायेगी ! इस समय इसे जो चाहे, इस्तेमाल कर ले। बाद को हवा लगकर इसमें कुछ असर न रहेगा। यह शीशी मेरे पुरखों के वक्त से बनते-बनते अब जाकर तैयार हुई थी। और दूसरी मेरी जिन्दगी में अब बन नहीं सकती। यही तो रोना है। हाय ! लुट गया। धर्म-संकट में पड़कर मैंने अपनी बरबादी आपकी। अच्छा भाई, एककाम करो, हमें जल्दी से उल्टा टाँगकर इस दवा की दो बूँद मेरे मुँह में डाल दो, ताकि हमारी उतरी जवानी एक बार फिर लहलहा उठे, और हमेशा के लिए अटल होजाए। इतना ही सन्तोष सही।"

कल्लू—"(पैरों पर गिरकर) हाँ महाराज। हम पर भी कृपा-दृष्टि हो जाये। हमारी भी देह ढीली पड़ने लगी है।"

फागू—"(पैरोंपर गिरकर) कमजोरी तो हमें भी बहुत मालूम होती है महाराज..."

नागू—"(पैरोंपर गिरकर) बाल तो हमारे भी अकाल ही पकने लगे हैं महाराज..."

चण्टराम—' तुम लोगों के साथ नेकी करने का जी तो नहीं चाहता, मगर क्या करूँ, तुम लोगों की मदद बिना यह दवा मेरे मुँह में पड़ भी नहीं सकती। अच्छा-अच्छा, बहुत जल्दी करो। झटपट एक दूसरेको उल्टा टाँग दो। ताकि हमारे लिए समय रहे।"

कल्लू—"अभी सब टँगे जाते हैं कृपानिधान; तनिक भी देर न होगी। बस, आप आखिरी आदमीको लटकाने में जरा हाथ लगा दीजियेगा।"

(सब जल्दी-जल्दी एक दूसरेको उल्टा टांगने का इन्तजाम करते हैं।)

चण्टराम—"तुम लोगोंको नौजवान बनने में जरा भी देर न लगेगी। और यह नौजवानी पूरे सौ वर्षतक बनी रहेगी। मगर हमें भूल न जाना, बहुत जल्दी करना।"

सब—"हाँ-हाँ।"

(चण्टराम की मदद से सब उलटा लटक जाते हैं। बापू धीरे-धीरे होश में आता है।)

बापू—"अरे! हम कहाँ हैं।"

चण्टराम—' जमीन और आस्मान के बीच में। घबड़ाइये नहीं, आपके चारों लड़के भी लटके हुए हैं।"

सब—"ओहो! बापू बोलने लगे।"

चण्टराम—" (गलमुच्छा उतारकर फेंक देता है) अब जाकर कसर पूरी हुई।" (डण्डा लेकर सबको एक सिरे में पीटना शुरू करता है।)

सब—"आयँ ! अयँ ! यह क्या ? अरे बाप रे बाप ! मर गया ! मर गया ! हाय बाप ! हाय बाप !"

बापू—"अरे ! यह वैद्य नहीं, वही मिठाईवाला है, जो औरत बनकर आया था।"

चण्टराम—"(सबको मारता हुआ) हाँ-हाँ, वही है। वही तुम लोगोंको मुसाफिरों के लूटने का इनाम देने आया है। बोलो, डाकू-चोर-लुटेरों की जय !

सब—"हाय ! बाप रे बाप ! यह क्या अनर्थ हो गया।"

चण्टराम—"(मारता हुआ) बस, अब राम का नाम लो, और मलार गाओ।"

॥ समाप्त ॥

—o—